सेवाव्रती कर्मयोगी
पद्मश्री डॉक्टर दामोदर गणेश बापट

स्व. सदाशिव गोविन्द कात्रेजी
संस्थापक भारतीय कुष्ठ निवारक संघ, कात्रेनगर चांपा (छ.ग.)

संस्थापक – भारतीय कुष्ठ निवारक संघ,
कात्रेनगर (चांपा)
स्व. श्री सदाशिव गोविन्द कात्रे जी

सेवाव्रती कर्मयोगी

पद्मश्री डॉक्टर दामोदर गणेश बापट

लेखक
श्री सुनील किरवई जी
केशवधाम, गुवाहाटी (असम)
भ्रमणभाष : 8472899540

*

प्रकाशक
भारतीय कुष्ठ निवारक संघ
कात्रेनगर (चांपा) 495 671
जिला : जांजगीर–चांपा (छत्तीसगढ़)
दूरभाष : 7970225872, 9926113826

*

कम्प्यूटर टायपिंग, डिजाइनिंग एवं मुद्रण
आदर्श प्रिंटिंग प्रेस
गौरी कुंज, सदर बाजार, चांपा 495 671
जिला : जांजगीर–चांपा (छ.ग.)
भ्रमणभाष : 94241 69525, 94060 38771

प्रकाशन वर्ष : 2022 (प्रथम संस्करण)

संख्या : 3000 प्रति

प्रतिमा – स्व. श्री सदाशिव गोविन्द कात्रे जी

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ।।

श्री सिद्धि विनायक कात्रेनगर, चाँपा (छत्तीसगढ़)

।।ॐ।।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

प्रधान कार्यालय : डॉ. हेडगेवार भवन, महाल, नागपुर – 440 032
दूरभाष : (0712) 2723003, 2720150 फॅक्स नं.: 2721589, Email-sachivalay@hedgewarbhavanngp.in

भाद्रपद शु. 01 / 5122 20. 08. 2020

नागपुर

प्रस्तावना

पद्मश्री डॉ. दामोदर गणेश बापट यद्यपि पद्मश्री प्राप्त व्यक्ति है, वे लोकप्रसिद्ध नहीं हैं। बहुत कम लोग उनके नाम को जानते हैं। उनको जानने वालों में भी उनको समझनेवाले बहुत ही कम है। इसका कारण लोगों का अज्ञान अथवा उनकी आकलन शक्ति का कम होना नहीं है, उसका कारण उनका स्वयं का आत्म विलोपी स्वभाव है। जीवनभर पूर्ण समर्पण की कठोर साधना निरपवाद सभी के प्रति निश्छल व नि:स्पृह आत्मीयता तथा हृदय की समूची करुणा उंडेलकर सतत सेवा में रति ये उनके जीवन के असाधारण वैशिष्ट्य थे। परंतु सामान्य दृष्टि से ऊपर से दिखने के लिए वे किसी अनपढ़ मजदूर या किसान जैसे लगते थे। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि ' हमारे कृष्ण, बुद्ध या ईसा से अधिक ऊंचाई व गहराई रखने वाले आध्यात्मिक व्यक्तित्व इस दुनिया में आते हैं, अपना कार्य करके चुपचाप चले जाते हैं, दुनिया को पता भी नहीं चलता। मैं स्वयं स्वर्गीय दामोदर बापट जी को उस श्रेणी की आत्मा मानता हूं। उनका स्मरण ही हृदय कों पवित्रता से भर देता है। उनके व्यक्तित्व, कृतित्व आदि का वर्णन शब्दों में कर पाना दुर्धर कार्य है। श्रीमान सुनील किरवई जी ने स्व. बापट जी का चरित्र लिखकर इस दुर्धर कार्य को अपने लेखन सामर्थ्य से संपन्न किया है। हम सबके लिए यह उनके द्वारा किया गया उपकार ही माना जाएगा।

वैसे श्री सुनील किरवई की लेखन क्षमता का परिचय इसके पूर्व उनके द्वारा लिखित 'परमानंदमाधवम' नामक स्व. श्री कात्रे जी के चरित्र लेखन से वाचकों को है। सुनील जी को स्व. बापट जी का प्रत्यक्ष सानिध्य पाने का सौभाग्य मिला है। स्व. बापटजी जैसे आत्मविलोपी व्यक्ति की पूरी जानकारी अपने व्यस्त कार्यचर्या से समय निकालकर उन्होंने एकत्रित की है। इससे ही पता चलता है कि बापट जी के हुत्तंत्री का स्वयंसेवकत्व नामक आधारस्वर हृदयंगम करते हुए सुनील जी ने यह सारा लेखन किया है। इसलिए वह बहुत प्रेरक व भावजागृतिकारक हुआ है। इस चरित्र लेखन के लिए सुनील जी का हार्दिक अभिनंदन भी और धन्यवाद भी।

ग्रंथ प्रकाशन, उसके प्रचार-प्रसार का कार्य करने वालों को अनेकों शुभकामनाएं। स्व. बापट जी के उज्जवल चरित्र का उतने ही प्रेरक शब्दों में यह वर्णन सभी पाठकों में निष्काम आत्मीय सेवा की प्रवृत्ति तथा राष्ट्र देव की चरणों में समर्पण की भावना जगाएगा यह विश्वास है।

(मोहन भागवत)

प्रकाशक का मनोगत

पद्मश्री माननीय डॉ. दामोदर गणेश बापट जी ने भारतीय कुष्ठ निवारक संघ, कात्रेनगर चांपा छ.ग. में 45 वर्षों तक सचिव के रूप में सेवाकार्य किये हैं। सामान्य जन को प्रेरित कर एक नई दिशा दिखाने वाले उनके इस संघर्षपूर्ण कालखण्ड की जानकारी सामान्य व्यक्तियों तक उपलब्ध कराने हेतु यह प्रयास किया गया है। बापट जी अपने द्वारा किये गये कार्यों का उल्लेख कभी भी ना ही सार्वजनिक स्तर पर और ना ही व्यक्तिगत स्तर पर व्यक्त किये। उनका स्वभाव हिन्दी का एक मुहावरा "नेकी कर दरिया में डाल" इसका साक्षात उदाहरण था। अतः उनके किए कार्यों को लेखनी के माध्यम से सहेजने में काफी कठिनाई हुई है।

उनके अति निकट के बंधु श्री सुनील किरवई जी ने बापट जी के इस लम्बे कालखण्ड को सबके सामने प्रस्तुत करने के लिए अपनी लेखनी के माध्यम से प्रयास किये हैं। उन्होंने इस कार्य हेतु सभी वाँछित स्थानों पर जाकर एवं संबंधित व्यक्तियों से प्रत्यक्ष मिलकर अपने अथक प्रयास से जानकारी प्राप्त किये एवं बापट जी की जीवनी को पुस्तक स्वरूप दिया है। उनके इस महती कार्य के लिए अपनी संस्था उनका आभार व्यक्त करती है।

हम सबका परम सौभाग्य है कि हमारे निवेदन पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प.पू. सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत जी ने इस पुस्तक की प्रस्तावना देकर हम आश्रमवासियों का उत्साहवर्धन किया है। भारतीय कुष्ठ निवारक संघ आपश्री का भी आभार व्यक्त करती है।

इस पुस्तक के मुद्रलेखन एवं शुद्धिकरण का कार्य आदर्श प्रिंटिंग प्रेस, चांपा के संचालक डॉ. शान्ति कुमार सोनी एवं उनके सुपुत्र नवनीत सोनी तथा अपने संस्था के कार्यकर्ता श्री नारायण देव शर्मा जी ने बड़े लगन के साथ किया है। इस कार्य के लिए संस्था उनका भी आभार व्यक्त करती है।

युगबोध प्रकाशन रायपुर ने यह पुस्तक यदि समय पर मुद्रित नहीं की होती तो हम अपने पाठकों एवं शुभचिंतको तक यह पुस्तक पहुँचा नहीं सकते थे। संस्था उनका भी आभार व्यक्त करती है।

पद्मश्री स्व. डॉ. दामोदर गणेश बापट जी के जीवन चरित्र को पुस्तक स्वरूप देने में अनेक लोगों का सहयोग रहा है। इस पुस्तक के लेखन एवं प्रकाशन

कार्य में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी महानुभावों एवं संस्थाओं का भारतीय कुष्ठ निवारक संघ आभार व्यक्त करती है।

स्व. बापट जी के संबंध में जितनी जानकारियाँ अल्प समय में उपलब्ध हो पायी उसी के आधार पर यह जीवनी लिखी गयी है, यह अपने आप में पूर्ण नहीं है। संभवतः उनके जीवन के बारे में कुछ जानकारियाँ छूट गई होगी। जब भी भविष्य में इसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित होगा तब हम उसमें और अधिक जानकारी पाठकों तक पहुँचा सकेंगे।

श्रद्धेय बापट जी की जन्मतिथि 29 अप्रैल 2022 को उनका यह जीवन चरित्र पुस्तकाकार में समाज को समर्पित करते हुए भारतीय कुष्ठ निवारक संघ परिवार अत्यंत ही गौरव एवं हर्ष का अनुभव कर रहा है।

प्रदीप कुमार

(प्रदीप कुमार स्वर्णकार)
अध्यक्ष
भारतीय कुष्ठ निवारक संघ
कात्रेनगर–चांपा (छ.ग.)
मोबाईल : 8109499525, 9926113826

शुक्रवार, बैशाख कृष्ण पक्ष 14
संवत् 2079
दिनांक : 29 अप्रैल 2022

प्रणम्यांजलि

प्रणम्यांजलि .....

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, छत्तीसगढ़ प्रांत का सन् 1988 का प्रथम वर्ष संघ शिक्षा वर्ग रायगढ़ में लगा था। एक सामान्य मजदूर जैसा दिखने वाला व्यक्ति अपने बच्चे को संघ शिक्षा वर्ग कराने लाया था। वह बच्चे से बंगाली में बात कर रहा था। उसको देखकर मुझे हँसी आई। बच्चे को हिन्दी नहीं आती थी। संघ शिक्षा वर्ग में सभी विषय हिन्दी में होते हैं, प्रार्थना एकात्मता स्त्रोत मंत्र, सुभाषित संस्कृत में होते हैं।

मजदूर समान दिखने वाले व्यक्ति ने बच्चे के पीठ पर हाथ फेरा और निकले। मैं बरामदे में खड़ा था, वे मेरी ओर देखकर बोले ''हमारा लड़का संघ शिक्षा वर्ग कर लेगा तो कुछ सीख जाएगा।''

मैं मुस्कुरा रहा था। मैंने सोचा किसी भी प्रकार 15 दिन काट लेगा। प्रथम वर्ष हो गया बताने के लिए अच्छा होगा। संघ शिक्षा वर्ग के समारोप में वे पुनः पधारे। दूसरे दिन दीक्षांत के बाद वे उसे साथ ले गये इन पन्द्रह दिनों में मैंने देखा, विभाग प्रचारक श्री सुधीर देव जी का विशेष ध्यान उसकी ओर रहता था। कई बार वे भोजन करने साथ में बैठते थे। एक मजदूर के बच्चे के प्रति इतनी आत्मीयता एवं प्रेम मेरे समझ के बाहर का विषय था।

रविवार का दिन था। प्रातः 8 बजे श्री अरुण खानखोजे जी मेरे यहाँ क्वार्टर नं. एफ/1090 में आये और बोले–''मैं भारतीय कुष्ठ निवारक संघ चांपा जा रहा हूँ तुम साथ चलोगे क्या ?'' मेरा कोई कार्यक्रम नहीं था, मैं तुरंत तैयार हो गया और हम निकल पड़े। मैं कल्पना कर रहा था–''अखिल भारतीय स्तर का आश्रम, उनके सचिव से मिलना, उनका व्यवस्थित चेम्बर होगा, दरवाजे पर एक चपरासी खड़ा होगा, सचिव महोदय किसी से बातें कर रहे होंगे या फिर गम्भीर मुद्रा में कोई फाईल देख रहे होंगे।''

लगभग 2 घंटे बाद हमारी मोटर सायकल आश्रम परिसर में घुसी और खेत में काम करने वाले मजदूरों के पास रुकी। श्री अरुण जी ने एक मजदूर से बातचीत की और हम पंडित दीनदयाल उपाध्याय भवन (गेस्ट हाऊस) में आ गए। अरुण जी ने चाय बनाने का आदेश दिया, वे मुझसे बोले–बापट जी यहीं आ रहे हैं उनसे चर्चा करेंगे और निकल चलेंगे।

अरुण जी ने जिस मजदूर से बातचीत की वह मजदूर मुझे पहले भी कहीं देखे जैसा लगा। मैं सोच ही रहा था कि वह मजदूर अपना पसीना पोंछता हुआ ऊपर आया। उसे देखकर अरुण जी खड़े हुए, उनकी नकल मैंने भी की। यह वही मजदूर है

जो एक बंगाली लड़के को रायगढ़ संघ शिक्षा वर्ग में लाया था । इसे ही देखकर मैं व्यंग्यात्मक हँसी हँसा था । श्री अरुण जी ने उसका परिचय कराया–ये हैं दामोदर गणेश बापट, इस संस्था के सचिव । मैं स्तब्ध उन्हें देखता रहा । बाद में पता चला कि जो बालक संघ शिक्षा वर्ग में गया था वह समीर बाऊरी था । मैंने उसके साथ प्रथम, द्वितीय वर्ष किया है । आगे वह कुछ दिनों तक परमपूज्यनीय बाला साहब देवरस जी का वाहन चालक था ।

सन् 1988 में मैंने बापट जी को देखकर उपहास भरी हँसी बिखेरी थी । आज मैं सोचता हूँ तो मन में अलग ही छबि सामने आती है साथ ही अंर्तमन में प्रश्न उभरकर आते हैं कि बापट जी का व्यक्तित्व क्या है ? कैसा है ? कभी विचार आते हैं कि बापट जी आध्यात्मिक पुरुष हैं ? परन्तु उनको किसी ने भी ध्यान–धारणा, पूजा–पाठ करते नहीं देखा । कोई मंत्र जाप करते नहीं देखा न तो कभी पैसे के पीछे भागते देखा है न ही किसी को उपदेश देते देखा है । बापट जी को देखकर लगता था कि इनको कोई गीत, अमृतवचन, प्रार्थना याद भी है या नहीं ? किसी को भी पूछेंगे तो शायद ही कोई हाँ में उत्तर देगा ।

एक बार मैं प्रथम वर्ष शिक्षित स्वयंसेवकों के साथ आश्रम में ही बैठा था । वे बिलासपुर संघ शिक्षा वर्ग से आये थे । उन्हें प्रतिज्ञा याद है या नहीं पूछ रहा था । एक स्वयंसेवक ने साहस करके बोलने का प्रयास किया ..... ''संघ का कार्य मैं प्रामाणिकता से तथा तन–मन–धन पूर्वक करुंगा और इस व्रत का मैं आजन्म पालन करुंगा । भारत माता की जय ।''

बापट जी तम्बाखू रगड़ते खुला बदन वहीं खड़े थे, जोर से चिल्लाये ''प्रामाणिकता से, निःस्वार्थ बुद्धि से तथा तन–मन–धन पूर्वक ..... । सुनकर स्वयंसेवक हँसे और कहा–गलती हो गयी महाराज ।'' मेरे चेहरे की हँसी गायब थी । मैंने गंभीर मुद्रा में बापट जी की ओर देखा वे मुँह में तम्बाखू रख रहे थे । यह बात ध्यान में आती है कि बापट जी का आंतरिक स्वरुप एकदम भिन्न है । उनके बाह्य रुप को देखकर उनको समझने का प्रयास करेंगे वे असफल होंगे । उनका बाह्य रुप तो समुद्र की लहरें है, लहरों से समुद्र की गहराई का पता नहीं चलता । किसी भी स्वयंसेवक को अचानक प्रतिज्ञा बोलने को कहा जाए, प्रतिज्ञा ही क्यों ? प्रतिदिन शाखा जाने वाले स्वयंसेवक को प्रार्थना प्रमुख के स्थान पर खड़ा कर दिया जाए तो वह भी अटक जाता है । पूरे देश में बहुत कम ही स्वयंसेवक होंगें जो प्रतिदिन प्रतिज्ञा बोलते होंगे । बापट जी को मैंने कभी कोई चर्चा, प्रवचन, प्रार्थना, प्रतिज्ञा का अभ्यास करते–कराते नहीं देखा । अचानक प्रतिज्ञा में सुधार करना, प्रतिज्ञा अपूर्ण होने पर उनकी ज्ञानेन्द्रिय का

सतर्क हो जाना यह अहर्निश, सतत्, निरंतर प्रतिज्ञा के पारायण का ही परिणाम हो सकता है। बापट जी के इस लाक्षणिक संकेत से यदि कोई संवेदनशील व्यक्ति उनकी ओर देखने की अपनी दृष्टि में परिवर्तन लाता है अथवा परिवर्तन स्वाभाविक हो जाता है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होनी चाहिए।

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ में मेरा आना–जाना सन् 1988 से है। मैं आज इकत्तीस वर्षों बाद सोचता हूँ कि क्या मैं बापट जी को जानता हूँ ? पहचानता हूँ ? उनका मेरा अच्छा परिचय है ? क्या मैं उन्हें समझ पाया हूँ ? इन प्रश्नों पर जब मैं विचार करता हूँ, गहराई से चिंतन करता हूँ तो मैं अपने को नितांत अनभिज्ञ ही पाता हूँ। मेरे अंदर पुनः वही प्रश्न खड़े हो जाते हैं। मैं बापट जी को स्पर्श करना चाहता हूँ, जानना चाहता हूँ, समझना चाहता हूँ। इस दिशा में मैं थोड़ा आगे बढ़ता हूँ तो मेरा मन लगभग तीन सौ पचास वर्ष पूर्व की एक ऐतिहासिक घटना की ओर चला जाता है। महाराष्ट्र का सहयाद्रि पर्वत, उसका एक तीर्थक्षेत्र सज्जनगढ़ (सतारा) समर्थ रामदास जी का निवास, वहाँ क्षत्रपति शिवाजी द्वारा भेंट किया गया स्वर्ण पलंग, हनुमान जी द्वारा प्रदत्त कुबड़ी और कोने में रखे हैं तांबे के दो बड़े–बड़े हंडे। नीचे लगभग 400 फीट की गहराई पर बना है तालाब, उसमें उतरने के लिए दुर्गम पगडंडी। उस पगडंडी से उनका शिष्य कल्याण बड़े हंडों में पानी भरकर कंधों पर लेकर चढ़ता था। कल्याण अपने गुरु की अहर्निश सेवा करता था। भोजन बनाना, कपड़े धोना, पानी भरना उसका काम था। स्वामी जी की कृपा दृष्टि सदा बनी रहती थी। अन्य शिष्य सोचते थे यह अनपढ़ है इसको कुछ आता नहीं है। यह बात स्वामी जी के ध्यान में आई। उन्होंने शिष्यों का भ्रम दूर करने के लिए सहज ही कल्याण को दास बोध के कुछ श्लोक पूछे। उसने धारा प्रवाह श्लोकों का शास्त्र शुद्ध उच्चारण किया। शिष्य सुनकर स्तब्ध रह गए।

बापट जी द्वारा प्रतिज्ञा के शब्दों में सुधार भी ऐसा ही प्रसंग मुझे समझ में आता है। संघरुपी रामदास के लाखों कल्याणों में से एक कल्याण कहीं बापट जी भी तो नहीं ? यदि ऐसा मान ही लें तो हमें कोई हानि भी तो नहीं। बापट जी का पिण्ड क्या है ? वे कौन हैं ? इसका वर्णन नहीं है। वे कैसे थे ? कैसा करते थे ? इसी का वर्णन इस पुस्तक में है।

संसार में अनेक गुण सम्पन्न व्यक्ति हुए हैं जिनमें सेवा भावना कूट–कूट कर भरी थी। अपनी नौकरी को छोड़कर दक्षिण अफ्रीका के जंगलों में जाकर सेवा करने वाले डॉक्टर अलबर्ट स्वाइटजर, दक्षिण अमेरिका में नीग्रो लोगों में स्वाभिमान एवं स्वावलंबन का भाव जागृत करने वाले डॉक्टर जार्ज वाशिंगटन कार्व्हर, मानव

मल को ढोने में जिन्हें संकोच नहीं हुआ, बाद में आनन्दवन वरोड़ा में स्थापित कर कुष्ठ पीड़ितों की सेवा करने वाले श्री बाबासाहब आमटे, कभी किसी ने जिन्हें अपने जीवन में कर्मकांड पूजापाठ करते नहीं देखा ऐसे डॉ. हेडगेवार एवं अवलिया–अवधूत गजाजन महाराज जैसे संत आदि महापुरूषों के आंशिक लक्षणों से युक्त दिखाई देते हैं ''पद्मश्री डॉक्टर दामोदर गणेश बापट।''

''इतना बड़ा कार्य मैंने किया'' बापट जी के मुँह से कभी किसी ने ऐसे शब्द नहीं सुने होंगे। एक निःस्वार्थ ''सेवाव्रती कर्मयोगी'' के रुप में वे सदैव कार्यमग्न रहे। कोई भी चुनौती भरा क्षेत्र युद्ध का मैदान ही होता है अपने क्षेत्र में चुनौतियों का सामना करते हुए विजय प्राप्त करना यह सैनिक की कुशलता कहलाती है। शत्रु को मौत के घाट उतारकर विजय प्राप्त करना यह एक पक्ष है और चुनौती भरे क्षेत्र में संकटों पर मात कर शत–शत हृदयों को जीतना और उनको रंच मात्र भी कष्ट न देते हुए उनके हृदय को आनन्द, उत्साह एवं समर्पण के भाव से आप्लावित करते हुए उनके हृदयों में श्रद्धा की प्रतिमा बनकर विराजित हो जाना यह अत्यंत कठिन कार्य श्री बापट जी ने किया। यही कारण है कि भारतीय कुष्ठ निवारक संघ के कार्यकर्ता, दिव्यांग समूह राष्ट्रीय–प्राकृतिक–आकस्मिक संकटों के समय सेवा एवं कर्तव्यभाव से कूद पड़ते हैं।

श्रद्धेय पद्मश्री दामोदर गणेश बापट जी की मुखाकृति एवं व्यक्तित्व पर उनकी माता जी का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। माता जी अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। उनका धर्म कर्म नियमित था। वे प्रतिदिन नागदेवता की पूजा करती थीं। नागपंचमी का पर्व उनके लिए विशेष था। सर्पमित्र संत पाटलेगांवकर महाराज (खामगांवकर) बापट जी की माँ के गुरु थे, उनसे उन्होंने दीक्षा ली थी। उनका प्रभाव माता जी पर और माता जी का प्रभाव बापट जी पर स्पष्ट परिलक्षित होता था। यही कारण है कि बापट जी इतना बड़ा कार्य कर सके। गीता में कहा गया है कि .....

मुक्तसंङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः।
सिद्धयसिद्धयोर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते ।। (18/26)

आसक्ति और अहंकार से मुक्त, धैर्य उत्साह में समन्वित भाव तथा सिद्धि एवं असिद्धि में निर्विकार रहने वाला कार्यकर्ता सात्त्विक माना जाता है।

श्रीमद्भगवद्गीता के इस श्लोक को सरल शब्दों में गीतबद्ध किया है सुश्री सुलभाताई देशपांडे जी ने गीत की पंक्तियाँ बापट जी पर सटीक बैठती हैं :–

''कार्यकर्ताष्टक''

जिसकी अविचल राष्ट्र भावना, अविरत चलती कर्म साधना।
भक्ति, ज्ञान, श्रद्धा की सरिता, वही समझ लो सात्त्विक कर्ता ।।1।।

क्षमाशील जो जग अनुरागी, सबमें रहकर भी वीतरागी ।
जिसमें साहस और निर्भयता, वही समझ लो सात्त्विक कर्ता ।।2।।

तत्वनिष्ठ फिर भी व्यवहारी, जिसकी हर कृति सबसे न्यारी ।
यश–अपयश में स्थित प्रज्ञता, वही समझ लो सात्त्विक कर्ता ।।3।।

सिर पर बरफ हृदय चिंगारी, सत्य शुद्ध समतोल विचारी ।
सेवाधर्म निरत नित रहता, वही समझ लो सात्त्विक कर्ता ।।4।।

जिसकी अनुपम धैर्य धारणा, जिससे मिलती स्वयंप्रेरणा ।
मृत में भी अमृत जो भरता, वही समझ लो सात्त्विक कर्ता ।।5।।

हृदय भावमय कष्टिक काया, दीनों के प्रति माँ सी माया ।
जिसने षड्रिपुओं को जीता, वही समझ लो सात्त्विक कर्ता ।।6।।

सात्त्विक तेज स्वजन मन जीता, दुर्जन दोष गरल सम पीता ।
मुख मंडल पर सहज मधुरता, वही समझ लो सात्त्विक कर्ता ।।7।।

मुक्त संग जो निरहंकारी, मुक्त गगन का जो संचारी ।
सब कुछ कर जो रहे अकर्ता, वही समझ लो सात्त्विक कर्ता ।।8।।

ऐसा लगता है कवियित्री ने ये पंक्तियाँ बापट जी के लिये ही लिखीं हैं । बापट जी ने अपने कर्मफल की कभी चिंता नहीं की, न अपेक्षा न इच्छा परन्तु विधि का विधान कभी बदलता नहीं । ईश्वर अपना काम तो करता ही है । कार्य का फल तो भगवान को देना ही है । विद्वान लोग कहते हैं :–

''परोपकरणं येषां जागर्ति हृदये सताम,
नश्यंति विपद्स्तेषां सम्पदःस्यु पदे–पदे ।
तीर्थ स्नानैर्न सा शुद्धिर्बहु दानैर्न तत्फलम्,
तपोभिरुग्रैस्तन्नाप्य मुपकृत्या यदाप्यते ।।

''जिन सज्जनों के हृदय में परोपकार की भावना जागृत रहती है उनकी समस्त आपदाएं नष्ट हो जाती हैं और उन्हें पद–पद पर सम्पदा प्राप्त होती है। अनेक तीर्थों में स्नान करने से वैसी पवित्रता न तो प्राप्त होती है और न प्रचुर दान तथा उग्र तपस्या से ही वैसा फल प्राप्त होता है जैसा कि परोपकार करने से प्राप्त होता है।''

पद्मश्री डॉक्टर दामोदर गणेश बापट जी के सम्बन्ध में उक्त श्लोक परस्पर विरोधाभासी लगता है क्योंकि बापट जी कहते थे कि मैंने कभी उपकार किसी पर नहीं किया न मैंने कभी दूसरों की सेवा की है मेरा मानना है ''यह जीवन अपने लिए नहीं अपनों के लिए है।'' बापट जी के कथनानुसार तो उन्होंने कभी परोपकार किया ही नहीं अतः उन्हें कौन सा फल ईश्वर देगा ? उत्तर अंधकार के गर्भ में है। उन्हें कोई न कोई फल अवश्य मिलेगा। क्योंकि ईश्वर अपना न्याय–शास्त्र परिवर्तित नहीं करेगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूज्यनीय श्री गुरुजी, रामभिक्षुक जी महाराज, गहिरा गुरुजी साथ में थे भोजन का समय हो गया, प.पू. गुरुजी ने कहा साथ भोजन करिये। गहिरा गुरुजी ने कहा मैं दूसरों के हाथ का भोजन नहीं करता। गुरुजी ने कहा–मैं भी दूसरों के घर दूसरों के हाथ का भोजन नहीं करता। (सन् 1963 रामनवमी जशपुरनगर)।

परमपूज्यनीय श्री गुरुजी कहते हैं मैं दूसरों के घर भोजन नहीं करता वैसे ही बापट जी कहते हैं मैं दूसरों की सेवा नहीं करता। ये तो कहा ही जा सकता है कि जो प्रसाद (फल) श्रीगुरुजी को मिला होगा वही प्रसाद (फल) बापट जी को भी मिला होगा यह सुनिश्चित है। कर्तृत्व की दृष्टि से प्रसाद की मात्रा न्यूनाधिक हो सकती है। अब ये प्रश्न अलग है कि जिनकी भावनाएँ ''कामये दुःख तप्तानाम् प्राणिनामार्त्नाशनम्'' हैं वे फल का उपभोग करेंगे या फिर अपने संस्कारगत स्वभाव के अनुरुप अभावग्रस्त लोगों को समर्पित कर देंगे।

ऐसे कर्तृत्ववान पुरुषों के लिये एक गीत की पंक्ति याद आती है ''तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित चाहता हूँ कि देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ।'' बापट जी ने अपना पूरा शरीर दान कर दिया था। दिनांक 30.01.2016 को उन्होंने अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त की –''जिस दिन मेरा शरीर शांत होगा उस दिन मेरे पार्थिव शरीर को कात्रे जी की प्रतिमा के सामने उत्तर–दक्षिण लिटा देना। फिर बिलासपुर CIMS चिकित्सालय को सौंप देना। दस दिनों बाद वहाँ एक तुलसी का पौधा लगा देना।''

दिनांक 17.08.2019 को लगभग 3.45 मिनट (ब्रह्ममुहूर्त) पर श्री

राधेश्याम जलक्षत्री जी (छत्तीसगढ़ प्रांत सहव्यवस्था प्रमुख, रा.स्व.संघ) का फोन आया, आज 2.35 मिनट पर बापट जी ने अपना भौतिक शरीर त्याग दिया। मैं दिल्ली राजघाट में था। भारतीय मजदूर संघ की अ.भा. कार्यसमिति बैठक चल रही थी। 7 जुलाई 2019 को बापट जी अचानक बेहोश हो गए, उनको अपोलो अस्पताल बिलासपुर में भर्ती कराया गया । एक अनासक्त सेवाव्रती कर्मयोगी अपोलो अस्पताल बिलासपुर में यमराज से एक मास दस दिनों तक संघर्ष के बाद 17 अगस्त 2019 दिन शनिवार, भाद्रपद मास कृष्ण पक्ष द्वितीया, विक्रम संवत 2076 को सदा के लिये संसार छोड़कर चला गया। छोड़ गया अपनी कर्मकठोर साधना की पुष्पित, पल्लवित स्मृतियाँ । वे सशरीर हमारे बीच नहीं हैं परन्तु वे सदैव अपनी अंतहीन अनुपस्थिति से अपनी उपस्थिति का आभास कराते रहेंगे।

प्रतिदिन तुलसी के पौधे में जलाभिषेक करेंगे, कहेंगे, ''अंतिम लीला स्थली यही है'' आश्रम से आते समय अंतिम बार महाराज यहीं लेटे थे। परन्तु बापटजी तो सात जुलाई को ही आश्रम से सबसे बिदा लेकर जाते समय अपनी माता के पयपान से प्राप्त संस्कारों की भाव–भाषा में बोलते हुए कि ''आम्हीं जातो आपुल्या गावा, आमचा राम–राम घ्यावा'' निकल गए।

* अंतिम विनंति *

मिल गया मुझको निमंत्रण, करबद्ध सबको है प्रणाम।
मैं तो चला अब ग्राम अपने, सबको मेरा राम–राम ।।

त्रुटियाँ अगणित हुई हैं, हृदय से कर दो क्षमा,
मोह पाश से कर रिहाई, प्रेम से दे दो बिदा।
भागी तो था मैं दण्ड का, पर तुम देते रहे वरदान,
मैं तो चला अब ग्राम अपने, सबको मेरा राम–राम ।।

इतने दिनों तक अस्त–व्यस्त, अब लिया था छद्मवेशी,
दिया तो कण भर ही होगा, लेता रहा सौ गुना बेशी।
भोगी को योगी बताकर, तुम करते रहे सम्मान,
मैं तो चला अब ग्राम अपने, सबको मेरा राम–राम ।।2।।

****

पद्मश्री डॉक्टर दामोदर गणेश बापट जी की लीला क्या यहीं समाप्त हो जायेगी ? जिनको इनकी आँख मिलेगी उसकी जितनी आयु होगी तब तक तो आँखें लीला करेंगी । उनके प्रत्येक अंगोपांग, प्रत्येक अवयव, एक–एक कोशिकाएँ मेडिकल कालेज के विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धन का माध्यम बन जाएंगी । उनके शरीर के अंग प्रत्यंग ज्ञान–कोष बनकर विद्यार्थियों के मस्तिष्क में विराजमान होंगे और अपनी लीलाएँ प्रगट करते रहेंगे ।

बापट जी के जीवन प्रसंगों का संकलन अत्यंत दुष्कर कार्य है क्योंकि उन्होंने अपने मित्रों, परिवार वालों को सूचित कर रखा था कि मेरे बारे में कोई कुछ ना लिखे और ना बताये । ऐसी स्थिति में अल्पांश ही क्यों ना हो उनके व्यक्तित्व का भाग समाज के सामने आए ऐसा प्रयास किया जा रहा है । भविष्य में भी जिज्ञासु एवं अभ्यासु लोगों द्वारा उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जाता रहेगा और यह प्रक्रिया सतत् चलनी ही चाहिए यह अपेक्षित भी है ।

इस संकलन को पूर्ण करने में बापट जी की पूज्य भाभी श्रीमती प्रभा महादेव बापट (वर्धा), श्रीमती सुनंदा पुरुषोत्तम बापट, बहु श्रीमती संगीता विनय बापट, भतीजी श्रीमती मीना धनंजय आवड़ेकर (पूणे, महाराष्ट्र) जिन्होंने पारिवारिक प्रसंगों एवं कुछ बचपन की शरारतों की कहानी बताई । बचपन के प्रसंगों पर उनके मित्र मनोहर वियाणी, श्रीधर पाण्डुरंग क्षीरसागर मूर्तिजापुर ने प्रकाश डाला । अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी स्व. वसंतराव बापट, चार्टर्ड एकांउन्टेंट मकान नं. 8/1, छठवीं मंजिल, शरद बोस रोड कोलकाता, जो संघ के अ.भा. व्यवस्था प्रमुख थे ने दि. 15–16 नवंबर 2016 को संकलनकर्ता से बातचीत करते हुए दी । इस संकलन को प्रभावी बनाने में आदरणीय प्रसन्न सप्रे जी, कल्याण आश्रम, माननीय जगदेवराम जी, अध्यक्ष कल्याण आश्रम जशपुर छत्तीसगढ़, तेजूराम जी, चैतूराम जी भंवर, गोपाल गुरुजी जशपुर, हरदयालराम जी पटिया (घाघरा) पूर्व भारतीय जनता पार्टी संगठन मंत्री छत्तीसगढ़ प्रदेश श्री रामप्रताप जी, श्री छबिलाल दुबे रायपुर, कोलकाता के पिंजरामोल सोसायटी, 34, आरमेनियम रोड के चौकीदार स्व. रामसनेही मिसिर सोसायटी के पूर्व सचिव शिवभगवान बागड़िया जी, बापट जी के प्रेरणास्त्रोत बाबाराव पुराणिक जी ।

अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी तिथिवार उपलब्ध कराने वाले श्रद्धेय माधव एकनाथ राजहंस जी आमदीनगर भिलाई, माननीय पंढ़रीराव कृदत्त जी, श्री दिवाकर भीका जी देव सागर, सुधीर देव कात्रेनगर चांपा, श्री प्रदीप कुमार स्वर्णकार चांपा, माननीय बलिहार सिंह जी पूर्व राज्य मंत्री मध्यप्रदेश शासन, चांपा, श्री अरुण

खानखोजे, श्रीमती अरुंधति (कुंदा ताई खानखोजे) बिलासपुर जिन्होंने अपने अनुभव प्रकट किये हैं । जिन्होंने बापट जी के मातृ–पितृ हृदय का निकट से साक्षात्कार किया ऐसी सुश्री सुलभा ताई देशपांडे, राष्ट्रसेविका समिति की सहकार्यवाहिका, ने अपने अनुभव लिखकर दिये और इस संकलन को पूरा करने हेतु अपना आशीर्वाद भी मुझे दिया । दीपक कुमार कहरा जी जिन्होंने मुझे बापट जी द्वारा लिखे एवं प्राप्त पत्रों की प्रतियाँ उपलब्ध कराईं । बापट जी के मानस पुत्र श्री जयकिशन जायसवाल, क्रीड़ाधिकारी विवेकानन्द केन्द्रीय विद्यालय, याजाली, जीरो, जिला लोअर सुबनसिरी (अरुणाचल प्रदेश), उनकी पत्नी श्रीमती कुसुम जायसवाल, श्री व्यंकटेश तेलंग (काका) नाशिक, डॉक्टर पंकज भाटिया आगरा, आदि महानुभावों ने संस्मरणों के माध्यम से सहयोग दिया ।

जिनका विशेष आशीर्वाद प्राप्त हुआ । संकलनकर्ता को जिनसे ऊर्जा मिली उनमें श्रद्धेय बाबा साहब आमटे, डॉक्टर विनय गोविंद पोल आनंदवन वरोड़ा (महाराष्ट्र), श्री अविनाश साठे वरोड़ा, माधव विट्ठल क्षीरसागर आदि महानुभाव भी उल्लेखनीय हैं । डॉक्टर हरीसिंह चंदेल चांपा, नारायण देव शर्मा, प्रभाकर सखाराम जोशी एवं राधेश्याम जलक्षत्री चांपा जिनका मैं विशेष आभारी हूँ । अनेक महानुभाव एवं समाचार पत्र–पत्रिकाएँ, चैनल, दूरदर्शन आदि के उल्लेख इस पुस्तक के अंतिम पृष्ठ पर दिये गये हैं, उन सबके प्रति मैं अपनी विनम्र कृतज्ञता प्रगट करता हूँ ।

इन सभी के सहयोग से इस पुस्तक को तैयार किया गया है इसमें भाषा संबंधी जो भी न्यूनताएँ होंगी वह संकलनकर्ता की हैं, अतः पाठकगण कृपापूर्वक क्षमा करेंगे । अंत में भारतीय कुष्ठ निवारक संघ के सभी कार्यकर्ता एवं आश्रमवासी बंधु–भगिनियों को सादर प्रणाम ।

।। श्री दामोदराय नमः श्री गणेशाय नमः ।।

विनयावनत्

(सुनील किरवई)
केशव धाम, गुवाहाटी (असम)

पूर्वाभास :–

एक बार एक व्यक्ति आश्रम में आया । वह बड़ा ही परेशान था, हताश निराश था । घर में बिना बताये वह आया था उसके हाथ में दाग था । डॉक्टर ने उसका परीक्षण किया । आधे घंटे बाद रिपोर्ट आई कि वह एक प्रकार का चर्म रोग है, कुष्ठ रोग नहीं है । दवाई लगाने से ठीक हो जाएगा । इतना सुनते ही वह खुशी से उछल पड़ा । भयभीत आतंकित, भविष्य से निराश, मुरझाया चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा । बापट जी ने उनसे पूँछा–''इस दाग को लेकर आपके मन में क्या–क्या कल्पनाएँ थी ? उस व्यक्ति ने कहा–महाराज मैं कल्पना कर रहा था कि घर के लोगों ने मुझे निकाल दिया है । मेरे हाथ–पाँव गल गये हैं । मैं अपना मल–मूत्र भी साफ नहीं कर पा रहा हूँ । मक्खियाँ भिनभिना रही हैं । अपने ठूँठ के समान दिखने वाले हाथों में एक डिब्बा लटकाकर एक कोने में बैठा भीख माँग रहा हूँ । सारा समाज मेरी ओर घृणा की दृष्टि से देख रहा है और एक कुष्ठ रोगी के रुप में मेरा जीवन कैसा होगा ? इसकी भयंकर कल्पना लेकर आया था ।

कुष्ठ रोग की कल्पना मात्र से सारा शरीर काँप जाता है । यदि यह कहा जाए कि यह रोग मानव के प्रादुर्भाव के साथ ही अस्तित्व में आया तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । सभ्यता के विकास के साथ–साथ इसका उल्लेख साहित्य में आया । भारत में चरक–सुश्रुत एवं वागभट्ठ में वात रक्त और वात शोषित के नाम से जो वर्णन आता है वह चर्म रोग की ओर संकेत करता है । सभी प्रकार के चर्म रोगों के लिए प्राचीन साहित्य में कुष्ठ शब्द का प्रयोग हुआ है । बाद में रोगों के गुणधर्म के आधार पर सभी चर्म रोग कुष्ठ नहीं है ऐसा भी वर्णन मिलता है । मनुस्मृति में स्पष्ट दिया है कि कुष्ठ दो प्रकार के हैं – अरुण कुष्ठ (लेप्रोसी) एवं श्वेत कुष्ठ (ल्यूकोडर्मा) ।

अरुण कुष्ठ (लेप्रोसी) भगवान कृष्ण के पुत्र शाम्ब को दुर्वासा ऋषि के श्राप से हुआ था जो सूर्योपासना से ठीक हुआ ऐसा उल्लेख आता है । कोढ़ी एक बदनाम शब्द है यह रोग अतिप्राचीन होने के बाद भी उसके त्वरित उपचार की कोई पद्धति अथवा औषधि उपलब्ध नहीं थी । इस रोग से ग्रसित व्यक्ति की शारीरिक विद्रुपता, शरीर का गलना, मक्खियों का भिनभिनाना यह लोगों के मन में घृणा उत्पन्न करता है । इसे मानव जाति के लिए अभिशाप माना जाने लगा । कुष्ठ रोग की कल्पना मात्र ही व्यक्ति, परिवार, समाज की नींव को हिलाकर रख देती है । रोगी का यह स्वरुप समाज बहिष्कृत हो जाता है । ऐसे रोगियों की सेवा का कार्य भी प्रारंभ हुआ परन्तु उचित औषधि का अभाव इसके मार्ग में बाधक था ।

पन्द्रहवीं शताब्दी के लगभग पश्चिमी जगत में कुछ परिवर्तन आना प्रारंभ हुआ । परलोक सिधारने के बजाय वर्तमान में इस भूमंडल पर निवासरत जीवित मृत्युमुखी मानव जाति को मुक्त, स्वस्थ, सुखी समृद्ध करने की दिशा में विचार प्रारंभ हुआ । आधुनिक संशोधनों के माध्यम से अनेक रोगों से मानव जाति को मुक्त करने का कार्य सोचा जाने लगा । डच वैज्ञानिक लिव्हेन हॉक (1632–1723) ने सूक्ष्मदर्शी यंत्र के माध्यम से सूक्ष्म कीटाणुओं के अस्तित्व के प्रभाव को ज्ञात किया । आगे अनेक विद्वानों ने इस दिशा में प्रयत्न किया । फ्रेंच वैज्ञानिक लुई पाश्चर (1622–1695), इटेलियन वैज्ञानिक लाझारो इस्पालांजानी (1729–1799), जर्मन वैज्ञानिक राबर्ट कोरव (1843–1910), रशियन वैज्ञानिक एलि मेजनीकाफ (1845–1916) ने अनेक असाध्य रोगों की खोज की । नार्वे के एक वैज्ञानिक डॉक्टर आरमोर हेन्स ने (1841–1912) सन् 1873 में कुष्ठ रोग के कीटाणुओं को खोज निकाला । इसे माईक्रो बैक्टीरियम लेप्री या एम लेप्री कहा जाता है ।

यह बात सिद्ध हो गयी कि कुष्ठ रोग माईक्रो बैक्टीरियम लेप्री नामक सूक्ष्म कीटाणुओं से होता है । डॉक्टर हेन्स ने इसको खोज निकाला इसलिए इसको हेंसेज डिसीज भी कहा जाता है । यह संसर्गजन्य रोग नहीं है । कुछ लोगों में यह धारणा बैठी है कि यह रोग दैवीय प्रकोप एवं पूर्वजन्मों के पापों का प्रतिफल है । यह छूत की बीमारी है । रोगी को अन्य लोगों से दूर रखने की आवश्यकता है । इस प्रकार की धारणा का प्रमुख कारण अज्ञानता है । परन्तु प्रथम दृष्टि में रोगी के जिस भयानक स्वरुप का दर्शन होता है वह इस रोग के एवं रोगी के प्रति घृणा उत्पन्न करता है ।

वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह पूर्ण रुप से सिद्ध हो चुका है कि वह दैवीय प्रकोप अथवा पूर्वजन्म के पापों का प्रतिफल नहीं है और न ही पीढ़ी दर पीढ़ी फैलने वाला अनुवांशिक रोग है । यह सब जानकारी होते हुए भी हमारे समाज की मनःस्थिति में परिवर्तन नहीं आ पाया है । इसमें हजारों परिवार और रोगी ऐसे हैं जो अपने घर और समाज की प्रताड़ना से ग्रसित हो गये हैं । घर और समाज में इनका अनादर किया जाता है । ये रोगी घृणा के पात्र हो गये हैं । इन्हें पापी कहकर सम्बोधित करने में भी कोई संकोच नहीं करता है ।

ऐसा नारकीय जीवन जीने वालों की सेवा की जाये तथा सेवा करते समय सम्पूर्ण समर्पण एवं अपनत्व की भावना से उनके साथ व्यवहार किया जाये, ऐसा विचार यदि किसी के मन में आता है तो उन्हें देव–पुरुष कहने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये । यह भी सत्य है कि जिन्होंने भी इस कार्य को समर्पण की भावना से किया है वे देवपुरुष कहलाना कदापि पसन्द नहीं करेंगे । परन्तु सामाजिक मर्यादा के

प्रकाश में यह अपरिहार्य हो जाता है कि इस दिशा में जिन्होंने भी औषधि संशोधन से लेकर उनके सफल प्रयोग करने तक की साहसिक यात्रा की है उनके बारे में जानकारी तो समाज को होनी ही चाहिये जिनके प्रयासों से समाज को कुष्ठ के कलंक से बचाने का महानतम कार्य किया जा रहा है।

यह शाश्वत सत्य है कि भारतीय वाङ्गमय में रोग एवं उसके उपचार का विस्तार से वर्णन किया गया है। प्राचीन काल से ही इस रोग के उपर प्रभावी उपचार के रुप में ''चोलमुग्रा'' तेल का उपयोग किया गया है। मुम्बई के ग्रेड मेडिकल कॉलेज के प्रथम उपाधि प्राप्त डॉक्टर भाऊ दाजी लाड़ (1824–74) ने कायत (कवठी) नामक फल जिसे सुश्रुत संहिता में (चिकित्सास्थानम्) अध्याय 14 श्लोक (20 से 34) तुवरक कहा गया है, का प्रयोग प्रारंभ किया। आगे संशोधनों के द्वारा सन् 1920 में एक इंजेक्शन विकसित किया गया। सन् 1950 में डॅप्सोन (डायमायनों डायफेनिल सल्फोन) डीडीएस नामक दवाई विकसित हुई। सर्वप्रथम डॉ. क्रोकेन, डॉ. मूर एवं डॉ. वारदेकर ने इस दवा का कुष्ठ रोग पर सफल प्रयोग किया।

कुष्ठ रोग के क्षेत्र में सर्वप्रथम (1879) फॉदर डेमियन (जिनका जन्म बेल्जियम में हुआ) ने कार्य प्रारंभ किया। अनेक कठिनाईयों का सामना करते हुए उन्होंने कार्य किया। अंत में उन्हें भी कुष्ठ रोग हो गया और उनकी मृत्यु हो गई। भारत में ईसाई मिशनरियों ने सराहनीय कार्य किया है। भारत में यह कार्य डॉ. हेमरियरव (बेल्जियम) ने सन् 1891 में शुरु किया परन्तु दुःख इस बात का है कि मानव सेवा का यह सराहनीय कार्य, भारत में मतान्तरण का माध्यम बन गया। सेवा कार्य स्वदेश में राष्ट्र रक्षणार्थ एवं विदेश की धरती पर सेवा की परम मानवीय संवेदना के साथ होना चाहिये न कि अपने समर्थक निर्माण करने के लिये होना चाहिये।

भारत के अन्दर इस बीमारी का तथा इससे होने वाली दुर्दशा का साक्षात्कार अनेक महापुरुषों ने किया। इस रोग के बारे में भ्रम फैलाया जा रहा था इससे जागृत करने का प्रयास पूज्य महात्मा गाँधी जी ने किया। प्रत्यक्ष रुप से प्रथम भारतीय कुष्ठ सेवक के नाते श्री मनोहर दीवान जी ने कार्य प्रारंभ किया। प्रखर आध्यात्मिक भाव–जगत के स्वामी श्री दीवान जी का जन्म बुलढाणा जिला में सन् 1901 में हुआ। आचार्य विनोबा भावे जी की प्रेरणा से उन्होंने इस दिशा में कदम रखा। सन् 1936 में वर्धा में महारोगी सेवा मंडल की स्थापना हुई। बाद में 2 अक्टूबर 1941 को नागपुर–वर्धा मार्ग पर दत्तपुर में कुष्ठ धाम की स्थापना हुई। सन् 1957 में भारत सरकार की ओर से उन्हें पद्मश्री से विभूषित किया गया। 15 फरवरी सन् 1980 को मनोहर दीवान जी का देहावसान हो गया।

शिवाजी राव पटवर्धन जी ने सन् 1949 में विदर्भ महारोगी मंडल का कार्य प्रारंभ किया । वरोड़ा (चन्द्रपुर) में बाबा साहब आमटे जी का आनंदवन तो श्रेष्ठ प्रेरणा केन्द्र ही है । 5 मई सन् 1962 में सदाशिव गोविन्द कात्रे जी ने जांजगीर–चांपा जिले के सोंठी नामक स्थान पर छत्तीसगढ़ प्रांत में ''भारतीय कुष्ठ निवारक संघ'' की स्थापना की । यह संस्था विशेष इसलिये है क्योंकि इसकी स्थापना स्वयं एक कुष्ठ रोगी ने की है । बाकी लोग कुष्ठ रोगी की दशा देखकर द्रवित हुए थे और सेवा के क्षेत्र में कदम रखा था परन्तु सदाशिव गोविन्द कात्रे जी ने स्वयं कुष्ठ रोगी की पीड़ा, वेदना, उपहास, उपेक्षा एवं अपमान का विष पिया था क्योंकि वे स्वयं एक कुष्ठ रोगी थे ।

कुष्ठ रोग कैसा है ? इसकी सामाजिक मान्यता कैसी है ? कुष्ठ रोगियों की सेवा करते समय क्या–क्या कठिनाईयाँ आती हैं ? सेवा–समर्पण निष्काम कर्म क्या है ? यह आदरणीय बापट जी के बारे में पढ़कर समझें ऊपर वर्णित तथ्य तो मात्र इसका ''पूर्वाभास'' ही हैं ।

****

मातृ–पितृ की छाया में :–

नमस्कारऽऽऽऽ – आप कहाँ जा रहे हैं ? लगता है आपने मुझे पहचाना नहीं ?

* आगंतुक महोदय ने कहा–मुझे दूसरी गाड़ी पकड़कर नागपुर जाना है।

* अभी तो प्रातः के 10 बज रहे हैं, नागपुर की गाड़ी तो तीन बजे आएगी। इतनी देर स्टेशन पर आप क्या करेंगे ? मेरा क्वार्टर पास में ही है, घर चलिये स्नान, ध्यान, भोजन करके गाड़ी पकड़िये।

युवक उनका नाममात्र का सामान उठाकर प्रसन्न मुद्रा में आगे–आगे चलने लगा। आगंतुक महोदय उनके पीछे–पीछे चलने लगे। युवक ने कहा आज मेरे लिये महत्व का दिन है। मेरे विवाह को मात्र चार दिन हुए हैं। आज ही मैं अपनी पत्नी को लेकर आया हूँ। हमारी स्वतंत्र गृहस्थी का आज प्रथम दिन है। आज आपकी चरणधूलि हमारे घर पड़ेगी तो हमारा घर पवित्र हो जाएगा।

आगंतुक महोदय असमंजस में थे। वे उसे पहचानने का प्रयास कर रहे थे, उन्हें स्मरण नहीं आ रहा था। अपनी बुद्धि पर जोर देकर स्मरण करने का प्रयास कर रहे थे। युवक का उत्साह एवं श्रद्धा देखते ही बनती थी। युवक ने कहा मैं आपको जीवन भर नहीं भूल सकता। आज मैं जो कुछ भी हूँ आपके कारण हूँ। आपने मेरा जीवन सुधार दिया। आगंतुक महोदय युवक की बातें ध्यान से सुन रहे थे। वे सोचने लगे इससे मैं कब मिला ? मैंने इसके लिये क्या किया ? उनको कुछ भी ध्यान में नहीं आ रहा था। उन्होंने युवक से पूछा–तुम्हारा नाम क्या है ? कहाँ के रहने वाले हो ?

युवक ने उत्तर दिया–मेरा नाम गणेश विनायक बापट है। मैं यहीं रेल्वे में नौकरी करता हूँ और ग्राम पथरोट जिला अमरावती का रहने वाला हूँ।

दोनों चलते–चलते क्वार्टर तक आए। आवास परिसर में प्रवेश करते ही गणेश ने आवाज लगाई–लक्ष्मी ! देखो हमारे घर एक देव पुरुष आए हैं। हमारा कैसा भाग्य है, हमारे गृहस्थ जीवन के प्रथम दिन, प्रथम अतिथि डॉक्टर हेडगेवार हैं।

लक्ष्मी सधे हुए कदमों से बाहर आई। दर्शन हुए एक दिव्य पुरुष के दोनों ने डॉक्टर हेडगेवार जी को प्रणाम किया। लक्ष्मी ने अपने गृहस्थ जीवन की प्रथम चाय डॉक्टर हेडगेवार जी को समर्पित की। चाय पीते–पीते गणेश जी ने अपनी कथा प्रारंभ की .....

हमारा परिवार मूलतः रत्नागिरी आडिबरा के पास होलीदले का निवासी था। हमारे पूर्वजों में पितृपुरुष श्री विश्वनाथ देवणभट थे, मेरे दादाजी श्री महादेव

धोंडोपंत बापट साँतवीं पीढ़ी के थे । हमारे पूर्वज, वेदपाठी, संस्कृत साहित्य का अध्ययन करने वाले थे । पूरे परिवार का स्वभाव बड़ा ही मनस्वी, उदार, समाज हितकारी था । दानी स्वभाव के कारण मांगने वालों की भीड़ भी रहती थी । ऐसे स्वैच्छिक स्वभाव के लिए ''बापट'' शब्द का प्रयोग होता है । अतः सातवीं पीढ़ी आते–आते उपनाम देवनभट से बापट हो गया । इसका अर्थ होता है–स्वैच्छिक, उदार, गंभीर, सक्रीय, सक्षम, सेवाभावी आदि । हमारे पूर्वजों का स्वभाव ऐसा रहा होगा । मेरे दादाजी अमरावती में आकर बस गए । मेरे पिताजी विनायक महादेव बापट पथरोट में शिक्षक हैं । उनकी दो शादियाँ हुईं । मेरी बड़ी माँ पराजंपे परिवार से और छोटी माँ कुंटे परिवार से थीं । हम चार भाई दो बहनें हैं । हमारा गोत्र वशिष्ठ है । मेरे काका दामोदर महादेव बापट सन् 1915 में छत्तीसगढ़ के बिलासपुर नगर में रहने लगे । मेरे तीन भाई जितना पढ़ना था पढ़े । मैं तो पढ़ाई में कमजोर था । दो बार फेल हो गया । घर में आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी । कुछ काम करना चाहिये यह सोचकर एक दुकानदार का पता लेकर नागपुर आ गया । महाल में एक सज्जन से मैंने पता पूछा–वे सज्जन आप थे । आपने पता बताया तो नहीं उल्टा पूछताछ करने लगे । सबकुछ जानने के बाद आपने कहा – आगे पढ़ाई करोगे ? मैंने कहा – व्यवस्था हो गई तो पढ़ लेंगे ।

आप मुझे महाल स्थित जामदार वाड़ा में ले गए । वहाँ कुछ विद्यार्थी पढ़ने के लिये रहते थे । वहाँ आपने मेरे भोजन, आवास, पढ़ाई की व्यवस्था कर दी । उन्हीं की किताबों से मैंने मेट्रिक तक पढ़ाई की । तुरन्त मुझे रेल्वे में नौकरी लग गई । मैं उस दौरान आपसे मिल नहीं सका । आज अचानक मेरी नजर आप पर पड़ी । आज जो भी हूँ मैं आपके कारण हूँ । भगवान ने आज आपको पुनः मेरे घर भेज दिया । मेरे गृहस्थ जीवन की शुरूआत में ही आप आशीर्वाद देने आ गए ।

रेल्वे के वे कर्मचारी ही दामोदर गणेश बापट जी के पिताजी हैं । दामोदर गणेश बापटजी का जन्म दिनांक 29.04.1935, बैसाख कृष्ण पक्ष एकादशी दिन सोमवार विक्रम संवत 1857, को दोपहर 12.45 बजे ग्राम पथरोट में हुआ । उनकी माता जी करन्दीकर परिवार से थी । उनका नाम लक्ष्मीबाई था । तीनों भाईयों में सबसे छोटे दामोदर जी हैं । बड़े भाई क्रमशः श्री महादेव एवं श्री पुरूषोत्तम जी हैं । दामोदर की प्राथमिक पढ़ाई कजगाँव (जलगाँव) में हुई । उनके पिताजी की नौकरी कजगाँव स्टेशन पर थी । कजगाँव बहुत छोटा स्टेशन है । आजकल भुसावल से आने वाली गाडियाँ वहाँ रूकती हैं । इसकी जनसंख्या वर्तमान में लगभग 8000 के करीब है । दामोदर की पढ़ाई वहीं प्रारंभ हुई । भाईयों में सबसे छोटा होने के कारण माता–पिता

का लाड़ला था । घर में सब उसको चन्दू कहकर पुकारते थे । चन्दू बड़ा ही उधमी, नटखट बालक था । मस्ती भी खूब करता था । बड़े भाईयों के साथ प्रतिस्पर्धा करना उसका स्वाभाविक गुण था । गली मोहल्ले में खेलने निकल जाता था । ट्रेन आने के समय अधिकतम बच्चों का रेल्वे स्टेशन पर जाना लगभग दिनचर्या थी । मस्ती के कारण दामोदर की कुहनियाँ–घुटने छिले हुए होते थे । ''रात में सोते समय रोता है, हाथ पैर छिल गए हैं, सुबह उठकर फिर मस्ती करता है ।'' इस प्रकार माँ की डाँट खानी पड़ती थी ।

माँ डाँटती भी थी और मरहम पट्टी भी करती थी, परन्तु दामोदर की चंचलता में कोई कमी नहीं आई । एक दिन तो विचित्र बात हो गई । घटना सुकर तो सबको हँसी आई । चन्दू रोते हुए आया और बोला– मेरे सिर में और नाक में काँटा गड़ गया है ।

⁎ माँ ने कहा काँटा नाक सिर में नहीं पैर में गड़ता है, दिखा तेरा पैर !

⁎ नाक और सिर में काँटा गड़ा है ये देख !

माँ ने देखा सचमुच नाक एवं सिर में काँटा गड़ा है । दामोदर का कान पकड़कर पूछा – बता क्या कर रहा था ? लोंगों के पाँव में काँटा गड़ता है और तेरे नाक और सिर में काँटा गड़ता है, बता क्या कर रहा था, नहीं तो मार पड़ेगी ।''

''मैं बेर के पेड़ पर चढ़ा था ।'' उत्तर सुनकर माँ को भी हँसी आ गई ।

बचपन में माता–पिता की डाँट कुम्भकार के ठठेरे जैसे होती है । कच्चे घड़े को कुम्भकार अपने हाथों के स्नेह तथा ठठेरा से पीटकर आकार देता है, वैसे ही बचपन की अल्हड़ता को भी आकार मिलता है । कई बार झंझावातों में घड़ो को भी नुकसान भी होता है । एक दिन चन्दू खेलते–खेलते गिर गया, आँख में चोट लगी । डाक्टर को दिखाया गया । चोट गंभीर थी । नागपुर या मुंबई ले जाने की सलाह दी गई । दर्द तो ठीक हो गया परन्तु आँख सदा के लिये चली गई । उसकी एक ही आँख काम करती थी ।

चन्दू से अधिक माँ रोई । स्वाभाविक ही था । हँसता, खेलता, दौड़ता कलेजे का टुकड़ा अचानक दिव्यांग की श्रेणी में आ जाए तो इसे क्या संज्ञा दी जाए, ममता की विफलता या हतभाग्य ! परन्तु यदि हम भारत की महान आलोकजीवी

संस्कृति सभ्यता का सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावावलोकन करें तो ध्यान में आएगा कि वात्सल्य न कभी पराजित हुआ है और न भविष्य में कभी पराजित होगा।

बच्चों के लिये ''विद्यालय की छुट्टी और पढ़ाई से मुक्ति'' इससे बढ़कर कोई आनन्द नहीं है। चन्दू को अब ममता की छाया और वात्सल्य का रक्षा कवच सब कुछ मिल गया। माँ कहती थी पढ़ाई ज्यादा नहीं करना, आँखों को तकलीफ होगी। पिताजी पढ़ाई करने कहते तो माताजी कहती–चन्दू की आँखों को तकलीफ होगी।

अरे कितने दिनों तक तकलीफ होगी ? उसको जो पराक्रम करना था कर लिया। कितने दिनों तक उसको अपने आँचल में छुपाकर रखोगी। चन्दू की ओर देखकर पिताजी बोले– अरे चंद्या। अब कल से तेरी पढ़ाई और स्कूल दोनों चालू होना चाहिये समझे !

पिताजी की धमकी से चन्दू की शाला तो प्रारंभ हो गई परन्तु पढ़ाई कमजोर रही। इसका दुष्परिणाम भी सामने आया। चन्दू दो बार फेल हो गया। पिताजी का पारा सातवें आसमान पर था। माँ ढाल बनकर खड़ी हो गई। चन्दू की पीठ पर हाथ फेरते हुए बोली – बेटा चन्दू धीरे–धीरे अभ्यास कर अब। जीवन में कुछ बनना है तो पढ़ाई करना जरूरी है। चन्दू ने प्रयास करने का आश्वासन दिया।

एक दिन माँ ने पिताजी के सामने दु:ख व्यक्त करते हुए कहा, मेरा चन्दू नापास हो गया। माँ की वाणी में करूणा एवं चिन्ता थी। चन्दू के पिताजी ने सांत्वना देते हुए कहा – चिन्ता न करो, मैं भी दो बार नापास हो गया था। अपना चन्दू पढ़ाई करेगा और पूरी पढ़ाई करेगा। पिताजी के शब्दों से माताजी को अपार शक्ति मिली। चन्दू ने भी माँ को दिए आश्वासन के अनुसार अपनी पढ़ाई पूरी की। कजगाँव में उन्होंने प्राथमिक परीक्षा उत्तीर्ण की। पिताजी का स्थानान्तरण कजगाँव से मूर्तिजापुर हो गया। आगे मिडिल स्कूल, हाईस्कूल की पढ़ाई मूर्तिजापुर में हुई। उनके पिताजी ने मूर्तिजापुर में ही बसने का विचार किया और एक मकान भी वहीं बना लिया। आज भी वह मकान बापट वाड़ा के नाम से प्रसिद्ध है। आज भी बापटजी का परिवार वहीं रहता है। सन् 1954 में बापट जी मेट्रिक पास हो गए। आगे की पढ़ाई का विचार करने लगे। नागपुर में रहकर पढ़ाई करें या मूर्तिजापुर से आना–जाना करें ? मूर्तिजापुर से नागपुर की दूरी 214 कि.मी. है। आना–जाना सम्भव नहीं है। चिन्ता थी कि आगे की पढ़ाई कैसे करें ? माँ उसको अकेला छोड़ना नहीं चाहती थी। इसी बीच पिताजी का स्थानान्तरण नरखेड़ स्टेशन में हो गया। वे स्टेशन मास्टर बनकर नरखेड़ आ गए। नरखेड़ नागपुर जिले की एक नगरपालिका है। वर्तमान में इसकी जनसंख्या 20,000 से अधिक है। नरखेड़ से नागपुर की दूरी 84 किलोमीटर और रेलमार्ग से 61

कि.मी. है। प्रतिदिन ट्रेन से आना–जाना कर सकते हैं। पिताजी स्टेशन मास्टर होने के कारण आना–जाना हो सकता था।

श्री गणेश विनायक बापट, स्टेशन मास्टर अपनी गृहस्थी के साथ नरखेड़ आ गए। दामोदर गणेश बापट ने गोविन्दराम सक्सेरिया कॉलेज में प्रवेश ले लिया। माँ को इस बात का सन्तोष था कि घर से ही नागपुर आना–जाना करता है। सन् 1954–55 में नागपुर सी.पी. एण्ड बेरार में आता था। अमरावती से लेकर नरखेड़, पांढुर्णा, छिन्दवाड़ा, महाकोशल, छत्तीसगढ़ को मिलाकर सी.पी. एण्ड बेरार था जिसके मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल जी थे। 1 मई 1956 को महाराष्ट्र एवं 1 नवम्बर 1956 को मध्यप्रदेश बना। चन्दू प्रतिदिन डेढ़–दो घंटे सफर करके नागपुर आता था। और स्टेशन से पटवर्धन ग्राऊण्ड पार करके पैदल कॉलेज आता था। प्रतिदिन नौ कि.मी. पैदल चलना, ट्रेन में चार घंटा। इस प्रकार प्रतिदिन 12 घंटे परिश्रम करता था। सन् 1960 में चन्दू ने बी. ए., बी. कॉम. की डिग्री ली। कॉलेज में पढ़ते समय से ही चन्दू को सिनेमा, नाटक आदि देखने का बड़ा शौक था। एक ही सिनेमा कई बार देखता था। हिन्दी फिल्म बाबुल तो उसने दस बार देखी थी, उसी प्रकार ''श्यामची आई'' कई बार देखी। वह फिल्मों का बड़ा शौकीन था।

बचपन में माता–पिता को जो आश्वासन दिया था वह पूर्ण हुआ। माता–पिता के लिये अपार खुशी का दिन था। चन्दू उपाख्य दामोदर गणेश बापट प्रगतिशील आधुनिक विचारधारा का नवयुवक था। जिस दिन उसे डिग्री मिली उसी दिन नागपुर में सिनेमा का शौक पूरा करने के बाद ही रात में वह घर पहुँचा। अब उसके जीवन का दूसरा पर्व प्रारंभ होना था और वह था अर्थोपाजन। दामोदर को अब नागपुर शहर छोटा लगने लगा। वह योग्य पदवीधारी तो था ही, शौकीन भी था। कल्पना की ऊँची उड़ान, मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास की ओर दौड़ लगाना प्रारंभ हुआ। भारत में ये तीन स्थान ऐसे हैं जहाँ फिल्मों का निर्माण होता है। दामोदर इन तीनों शहरों में जीविकोपार्जन, अर्थोपार्जन का प्रयास करने लगे। नररवेड़ एक छोटा सा स्टेशन था। समाचार पत्र भी समय पर पहुँचता नहीं था। लगभग प्रतिदिन वे नागपुर आ जाया करते थे। एक दिन उनकी मुलाकात एक सज्जन से नागपुर रेल्वे स्टेशन पर हुई। वे कलकत्ता जा रहे थे। वे सज्जन कलकत्ता जाने वाली ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे थे और दामोदर जी ने नररवेड़ जाने वाली गाड़ी की। सज्जन ने देखा कि एक पढ़ा लिखा युवक बाजू में बैठा है तो समय बिताने के लिये कुछ बातचीत करना चाहिये। सज्जन ने पूछा–क्या नाम है तुम्हारा ?

* दामोदर गणेश बापट।

* कहाँ रहते हो ? क्या काम करते हो ?
* मेरे पिताजी नरखेड़ स्टेशन में स्टेशन मास्टर हैं। इसी साल मैंने बी.ए., बी.कॉम. की परीक्षा पास की है।
* अरे वाह ! मेरा नाम मधुकर गणेश गाड़गिल है। मैं महाल नागपुर का रहने वाला हूँ, कलकत्ता में मेरी एक कम्पनी है। काम करना है तो कलकत्ता आ सकते हो।
* दामोदर ने कहा–मैं कलकत्ता आना चाहता हूँ।
* मेरा पता ले लो, जब आना चाहो आ जाना।

मुम्बई से कलकत्ता जाने वाली गाड़ी आई और गाड़गिल जी उसमें निकल गए।

****

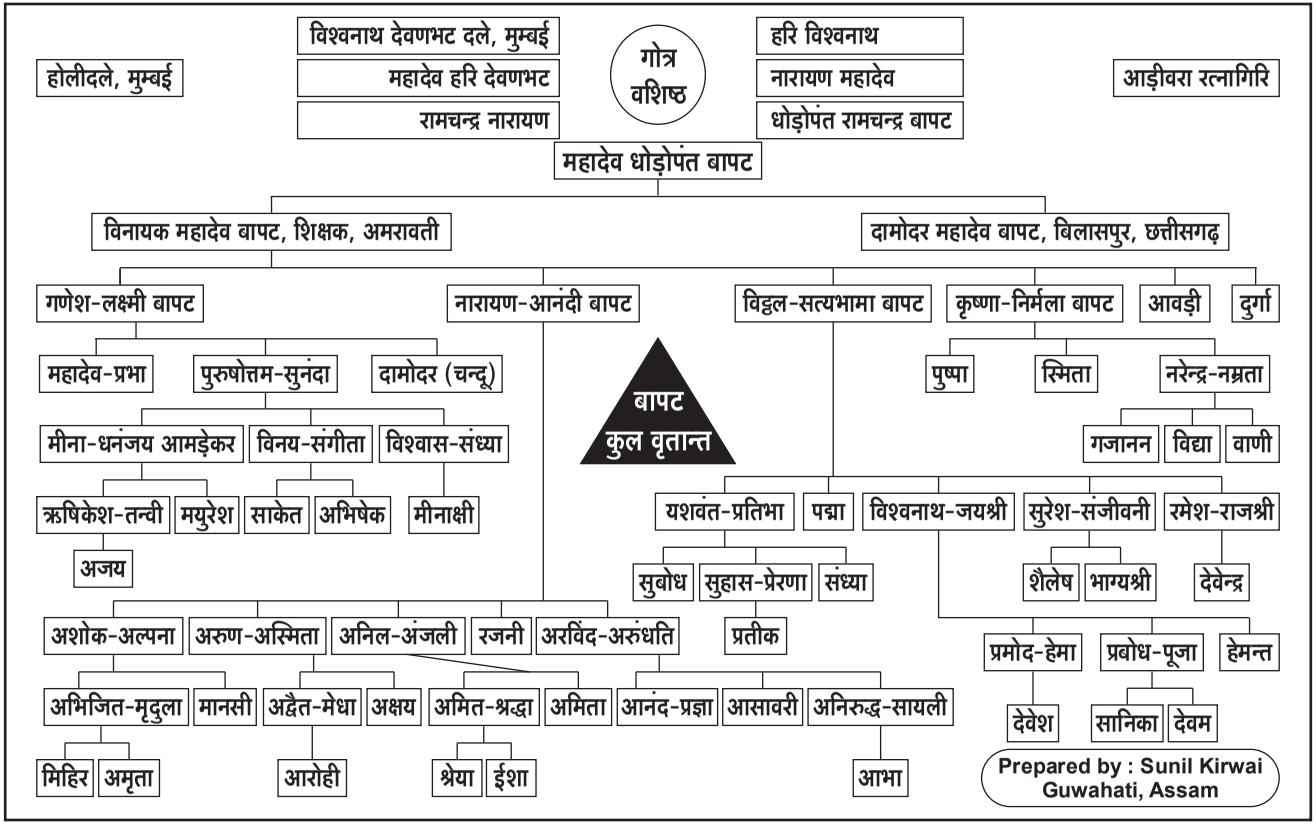
विश्वनाथ देवणभट दले, मुम्बई
महादेव हरि देवणभट
रामचन्द्र नारायण
होलीदले, मुम्बई
गोत्र वशिष्ठ
हरि विश्वनाथ
नारायण महादेव
धोड़ोपंत रामचन्द्र बापट
आड़ीवरा रत्नागिरि
महादेव धोड़ोपंत बापट
विनायक महादेव बापट, शिक्षक, अमरावती
दामोदर महादेव बापट, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
गणेश-लक्ष्मी बापट
नारायण-आनंदी बापट
विट्ठल-सत्यभामा बापट
कृष्णा-निर्मला बापट
आवड़ी
दुर्गा
महादेव-प्रभा
पुरुषोत्तम-सुनंदा
दामोदर (चन्दू)
बापट कुल वृतान्त
पुष्पा
स्मिता
नरेन्द्र-नम्रता
मीना-धनंजय आमड़ेकर
विनय-संगीता
विश्वास-संध्या
गजानन
विद्या
वाणी
ऋषिकेश-तन्वी
मयुरेश
साकेत
अभिषेक
मीनाक्षी
यशवंत-प्रतिभा
पद्मा
विश्वनाथ-जयश्री
सुरेश-संजीवनी
रमेश-राजश्री
अजय
सुबोध
सुहास-प्रेरणा
संध्या
शैलेष
भाग्यश्री
देवेन्द्र
अशोक-अल्पना
अरुण-अस्मिता
अनिल-अंजली
रजनी
अरविंद-अरुंधति
प्रतीक
प्रमोद-हेमा
प्रबोध-पूजा
हेमन्त
अभिजित-मृदुला
मानसी
अद्वैत-मेधा
अक्षय
अमित-श्रद्धा
अमिता
आनंद-प्रज्ञा
आसावरी
अनिरुद्ध-सायली
देवेश
सानिका
देवम
मिहिर
अमृता
आरोही
श्रेया
ईशा
आभा
Prepared by : Sunil Kirwai
Guwahati, Assam

श्रद्धेय दामोदर गणेश बापट जी के पूज्य माता पिताजी

स्व. श्री गणेश विनायक बापट (पिता)

स्व. श्रीमती लक्ष्मी गणेश बापट (माता)

मुक्ताकाश का पंछी :–

दामोदर के मन में कलकत्ता जाने की धुन सवार हो गई । दो दिनों बाद यह बात घर में बताई । पिताजी कुछ नहीं बोले । माताजी ने जरुर आपत्ति की । उनकी इच्छा थी कि दामोदर (चन्दू) यहीं आस–पास नौकरी कर ले क्योंकि पिताजी सेवानिवृत्त होने वाले थे । माताजी चाहती थी कि चन्दू को नौकरी लग जाए तो चिंता दूर हो जाएगी । कलकत्ता बहुत दूर है ।

दामोदर की महत्वाकांक्षाएं, ऊँची उड़ान के लिये कलकत्ता शहर ठीक था, परन्तु समस्या थी कि कलकत्ता जाने और वहाँ रहने, खाने–पीने का खर्च कौन देगा ? पिताजी ने हाँ या ना में कोई जवाब नहीं दिया था । पिताजी रेल्वे की नौकरी से सेवानिवृत्त हो गए । वे अपना सारा सामान लेकर मूर्तिजापुर आ गए । दामोदर को भी उनके साथ जाना पड़ा । पिताजी कुछ बोल नहीं रहे थे । बड़े भाई पुरुषोत्तम ब्रुक बॉण्ड कम्पनी में एजेंट थे, वे पूसद में रहते थे । दामोदर इस बात को जानते थे कि माँ कितना भी विरोध करे, अंत में इच्छा यही पूरी होगी । हुआ भी यही, कलकत्ता जाने का व्यय माँ ने दिया । दामोदर अपनी इच्छा पूरी करने कलकत्ता की ओर निकल गए ।

कलकत्ता अंग्रेजों की पुरानी राजधानी । भारत का एक व्यापारिक शहर । अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का केन्द्र । तीन दिनों के लगातार प्रवास के बाद दामोदर गणेश बापट गंगा के तट पर हावड़ा पहुँचे । बड़ा बाजार में बापट जी की चचेरी बहन श्रीमती पद्मा शालीग्राम जोशी रहती थी । वह बापट जी के काका विट्ठल विनायक बापट जी की लड़की थी । उनके पति श्री शालीग्राम जोशी एक एजेंसी में काम करते थे । वह कम्पनी कानून की पुस्तकें प्रकाशित करती थी । बापट जी अपनी बहन पद्मा के पास पहुँचे । दामोदर जी की आने की सूचना उन्हें पत्र द्वारा मिल गई थी । बापट जी कलकत्ता में दो–तीन दिन घूमते रहे । एक दिन मधुकर गणेश गाड़गिल द्वारा दिया पता पूछकर प्रमाण पत्रों के साथ ऑफिस पहुँचे । ''कम्पनी की नाम था सेल्स एण्ड इण्डस्ट्रीज प्रायव्हेट लिमिटेड कम्पनी, जो सी.डी.ए. (कलकत्ता डेव्हलपमेंट अथारिटी) बिल्डिंग में थी ।''

दामोदर जी जब ऑफिस पहुँचे तो गाड़गिल साहब नहीं थे । मधुकर गणेश गाड़गिल उस कम्पनी में वर्किंग पार्टनर थे । कंपनी के असली मालिक का नाम था श्री बी. जी. कुलकर्णी, उनको लोग अण्णा साहब कुलकर्णी के नाम से सम्बोधित करते थे । दोनों किसी काम से बाहर गए थे । ऑफिस में एक बंगाली बाबू बैठे थे । उनका नाम था दिपांकर बेनर्जी । दामोदर जी उनके पास गए, उनको बताया ''मैं मूर्तिजापुर

महाराष्ट्र से आया हूँ, मुझे गाड़गिल साहब से मिलना है ।'' बेनर्जी बाबू समझे कि गाड़गिल साहब का कोई सम्बन्धी होगा । उन्होंने बापट जी से बड़े आदर के साथ बातचीत की, बताया वे कल दोपहर आपको मिल पाएंगे । बापट जी बिना रुके वापस आ गए । दूसरे दिन समय पर वे ऑफिस पहुँच गए । गाड़गिल जी को समाचार दिया गया कि महाराष्ट्र से डी.जी. बापट आए हैं ।

दामोदर जी को अधिक इंतजार नहीं करना पड़ा, तुरन्त उन्हें बुलवा लिया । बापट जी को नागपुर रेल्वे स्टेशन पर हुई बातचीत का सन्दर्भ देना पड़ा । गाड़गिल जी भूल गए थे । दामोदर जी को देखकर सोचने लगे कि इसे काम पर रखा जाए या न रखा जाए । उनका प्रमाण पत्र रख लिया और दो दिनों बाद आने को कहा ।

दो दिनों बाद बापट जी फिर पहुँचे तो उनको गाड़गिल जी ने श्री कुलकर्णी के पास भेज दिया । अण्णा कुलकर्णी जी ने उन्हें मार्केटिंग काम के लिये रख लिया । दामोदर जी लगन एवं निष्ठा से काम करने लगे । कंपनी केमिकल का व्यापार करती थी । बापट जी पन्द्रह दिनों तक बहन के घर रहे । बाद में बड़ा बाजार, पिंजरापोल सोसायटी, 34 आरमेनियम रोड में एक कमरा लेकर रहने लगे । बापट जी की आमदनी अच्छी थी । वे अपने काम में ईमानदार एवं परिश्रमी थे, इसलिये वे कुलकर्णी के प्रिय भी थे । उन्होंने कुछ आदतें पाल रखी थी । शौकीन भी थे । पैसा हाथ में आते ही कलकत्ता का पूरा बाजार छान मारते थे ।

पिंजरापोल सोसायटी के प्रथम तल पर उनका निवास था । सोसायटी का चौकीदार था, रामसनेही मिसिर । वह मधुबनी (बिहार) का रहने वाला था । वह दिन में सोसायटी के गेट पर चाय बेचता था । सुबह उठकर बापट जी रामसनेही मिसिर की दुकान पर चाय पीते थे । चौकीदार से उनकी अच्छी मित्रता हो गई थी । वे चौकीदार से हँसी–मजाक करते रहते थे । रामसनेही भोजपुरी लहजे में ''बापटवा'' कहता था । सुबह चाय बन जाने के बाद रामसनेही आवाज लगाता था ''ऐ बापटवा जी चाय बन गईल बा ।'' आवाज सुनकर बापट जी आते थे । चाय पीने के बाद कहते थे ..... पंडित जी ! ये रखो सायकल का वायशर । पहले सायकल के वायशर जैसा छेद वाला ताम्बे का पैसा चलता था । कभी–कभी बापट जी चौकीदार के साथ उसकी रोटी भी खा लेते थे । एक दिन बापट जी ने रामसनेही जी से कहा–पंडित जी ! आप इतना बड़ा होटल चलाते हो परन्तु आपके होटल का कोई नाम नहीं है ? मिसिर जी हँसते हुए कहते–एक केतली में चाय बनाते हैं उसका का नाम रखें ।

दूसरे दिन बापट जी कंपनी के एक पुट्ठे पर नाम लिखकर ले आए ''मिसिर चाय सेंटर'' और सोसायटी के गेट के ठीक सामने दीवाल पर लटका दिया, बोले लो

पंडित जी आपकी दुकान का नाम लग गया।

प्रत्येक रविवार को बापट जी रामसनेही मिसिर के हाथों बनी रोटी खाते थे। अपने पहले वेतन से उन्होंने एक मर्फी रेडियो खरीदा था। दोनों बैठकर रेडियो सिलोन सुना करते थे। दामोदर जी खुशमिजाज, रंगीले व्यक्ति थे। मांसाहार, गांजा, सिनेमा देखना, हरफन मौला उनका स्वभाव बन गया था।

सेल्स एण्ड इण्डस्ट्रीज कम्पनी का ऑडिट श्री वसन्तराव बापट जी किया करते थे। मेसर्स दाण्डेकर एसोसिएट्स नाम की उनकी फर्म थी। श्री वसंतराव बापट जी मूलतः धार (मध्यप्रदेश) के निवासी थे। उन्होंने सन् 1954 में नागपुर से चार्टर्ड एकाउण्टेंट की डिग्री ली और कलकत्ता में स्थाई हो गए। वे संघ (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) के अखिल भारतीय व्यवस्था प्रमुख भी रहे। वे एक दिन कुलकर्णी जी के ऑफिस में बैठे थे। दामोदर गणेश बापट जी ऑफिस पहुँचे, उनके कपड़े कुछ गंदे थे। कुलकर्णी जी उस समय ऑफिस में थे। दामोदर जी को देखते ही कहा–जाओ साफ कपड़े पहनकर आओ, ये कपड़े पहनकर ऑफिस में नहीं बैठ सकते। कुलकर्णी जी ने उनको भगा दिया।

वसन्तराव बापट जी एकाउण्ट के संबंध में गाड़गिल जी से चर्चा कर रहे थे। दामोदर जी कपड़े बदलकर आए और गाड़गिल जी से कहा–मैं कपड़े पहनकर आया था, नंगा तो आया नहीं था। कई किलोमीटर मुझे वापस भेज दिया। मेरा तीन घंटा बरबाद हो गया। ग्राहकों को कितनी परेशानी हो रही है, बेचारे तीन घंटे से इंतजार कर रहे हैं।

कुलकर्णी जी स्वच्छता पसंद व्यक्ति हैं यह बात तो ध्यान में आती है, परन्तु बापट जी की बेचैनी में कार्य के प्रति निष्ठा, समयपालन, समय का महत्व एवं अनुशासन झलकता है। ऑफिस के कर्मचारी दीपांकर बेनर्जी ने बापट जी को कहा–अच्छी खासी छुट्टी मिल गई थी फिर भी गिरते पड़ते वापस आया, आराम से शाम तक वापस आना था। बापट जी ने उसकी ओर देखा और कहा–तेरी धोती खोलकर नंगा कर दिया था फिर भी तू उन्हीं कम्युनिष्टों जैसी बातें करता है।

दीपांकर बेनर्जी विशुद्ध बंगाली ब्राह्मण थे वे माणिकतल्ला में रहते थे। वे प्रतिदिन मंदिर जाया करते थे। उस समय कम्युनिष्टों का प्रचार–प्रसार जोरों पर था। ज्योति बसु जैसे कार्यकर्ता उभरकर आ रहे थे। पूजा–पाठ हिन्दू धर्म का विरोध प्रारंभ हो गया था। बेनर्जी बाबू पूजा पंडाल की ओर जा रहे थे। कुछ उत्पाती लड़कों ने उनकी धोती खोल दी। उनको इतना गुस्सा आया कि वे धोती फेंककर अण्डरवियर पहने ही वापस घर आ गए। यह दृश्य राह चलते कई लोगों ने देखा। एक दिन चाय के

समय बेनर्जी बाबू गुस्से में सारी घटना सुना रहे थे–''ये कामरेड इतने खराब होते हैं, सड़क पर तो धर्म को गाली देंगे और घर में भगवान की पूजा करेंगे। इनका नेता हिरेन दादा गॉड को फ्रॉड बताता है और घर में भगवान की पूजा करता है। उनके घर की महिलाएं अत्यंत धार्मिक होती हैं ये उन्हीं की ताकत से जिन्दा हैं जैसे शंखचूड़ राक्षस योनि का व्यक्ति अपनी पत्नी तुलसी की तपस्या के कारण जिन्दा था।

दामोदर गणेश बापट अत्यंत परिश्रमी व्यक्ति थे। कंपनी के लाभ हानि के लिये वे अपने को जिम्मेदार मानते थे। कंपनी को उनके कारण बड़ा लाभ हुआ। कंपनी ने बापट जी को अतिरिक्त राशि देने का निर्णय लिया। उस समय सन् 1963–64 में 2000/– रुपये बहुत बड़ी राशि होती थी। बापट जी ने विनम्रतापूर्वक जवाब दिया–आप मुझे इसी काम का तो वेतन देते हैं। इसका अतिरिक्त पैसा लेना उचित नहीं होगा।

दामोदर जी का एक रुप तो इतना आदर्शवादी था। दूसरा रुप था सिनेमा में पैसा फँसाना, जुआ खेलना, सिनेमा देखने का शौक। हवाई जहाज में मुंबई जाकर रेस–कोर्स में दाँव लगाना। रातों–रात पूँजीपति बनने का शौक। छुट्टी के दिन साल्ट लेक, विक्टोरिया मेमोरियल, दक्षिणेश्वर, वेल्लूर मठ में चक्कर लगाना। दोनों परस्पर विपरीत आचरण दिखाई देता है।

वे कभी–कभी शूटिंग देखने भी चल देते थे। कुलकर्णी जी बहुत नाराज होते थे। एक दिन ऑफिस आने में देरी हो गई। कुलकर्णी जी गुस्से में बोले–दामोदर तू अपने को क्या समझता है ? बापट जी कुछ नहीं बोले चुपचाप अपने काम में लग गए।

कुलकर्णी जी का व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय था। कमाई भी अच्छी थी। वे अतिआधुनिक विचारधारा के व्यक्ति थे। रेसकोर्स में पैसे लगाने का शौक भी था। मुंबई जाकर घोड़ों पर दाँव लगाना उनका प्रिय खेल था। अधिकतम दाँव उनका लगता नहीं था परन्तु आदत से वे लाचार थे। बापट जी स्वयं बताते हैं–वे एक बार मुझे स्वयं साथ ले गए। किस घोड़े पर दाँव लगाएं यह सोच रहे थे। उन्होंने मुझसे पूछा–दामोदर बता रे ! कौन से घोड़े पर भाग्य आजमाऊँ ? मैं बोला–अण्णा साहेब ! इस बार अपने को काले घोड़े पर दाँव आजमाना चाहिये।'' मेरे कहने पर अण्णा साहब ने काले घोड़े पर दाँव लगाया। आगे–पीछे होते हुए काला घोड़ा जीत गया। कुलकर्णी जी बड़े प्रसन्न हुए। घोड़े का मालिक कौन है पता लगाया गया। बहुत छान–बीन के बाद पता चला वह घोड़ा ग्वालियर की महारानी श्रीमंत राजमाता सिंधिया (विजयाराजे सिंधियाजी) का है। जीत की खुशी में मुझे होटल ताज में चाय पिलाई

गई।

बापट जी को सभी सुविधाएँ उपलब्ध थीं। अच्छी नौकरी, अच्छी कम्पनी, अच्छा मालिक, भारत का सबसे बड़ा व्यावसायिक, खेल, कला, साहित्य, सिनेमा, शिक्षा का केन्द्र माना जाने वाला आधुनिक शहर ''कलकत्ता''। सब कुछ उपलब्ध था। परन्तु बापट जी अपने आप को स्थिर नहीं कर पा रहे थे।

एक दिन बापट जी दोपहर तीन बजे के लगभग ऑफिस आए। गाड़गिल जी अपने चेम्बर में बैठे थे। बापट जी को देखते ही बोले–अरे ! दामोदर आज तोंड गोड़ कर ब्वा। (दामोदर आज मुँह मीठा करो जी) बापट जी ने आश्चर्य से पूछा–गाड़गिल साहब आज कोई विशेष बात है ? अरे ! गोड़ नाहीं तर कमीत कमी चाहा तरी पाज। यंदा योग आहे .....

(इस बार शादी का योग बन रहा है) गाड़गिल साहब ने मुस्कुराते हुए कहा।

बापट जी बड़े विनोदी स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्होंने बिना देरी किये पूरे स्टाफ को चाय पिलाने के लिये आर्डर दे दिया। सभी स्टाफ के लोग गाड़गिल जी के टेबल के पास जमा हो गए। बापट जी स्वयं चाय लेकर आए और कहा हमें गाड़गिल जी को बधाई देना चाहिये। गाड़गिल जी कुछ समझ पाते इसके पूर्व ही सब बधाई देने लगे। गाड़गिल जी जोर से चिल्लाए–दामोदर ये क्या तमाशा है ? बापट जी बोले–कुछ नहीं सर ! आप चिंता न करें, चाय का पैसा मैं दे दुँगा। गाड़गिल जी ने सबको अपने टेबल पर से भगाया। बापट जी मराठी में बोले–काय साहेब, चाहात साखर कमी झाली कि काय ? गाड़गिल जी का दिमाग खराब हो गया। उन्होंने एक पोस्टकार्ड फेंकते हुए कहा–ये देख तेरे घर से चिट्ठी आई है। क्या लिखा है ? बापट जी को आभास हो गया था। गाड़गिल जी के कहने का आशय भी समझ गए थे परन्तु अपने विनोदी स्वभाव के कारण यह तमाशा खड़ा किया। स्टॉफ को बताया कि साहब दूसरी शादी करने वाले हैं, मैं चाय लेने जा रहा हूँ आप सबको साहब ने अपने चेम्बर में बुलाया है।

बापट जी के विवाह का प्रयास हो रहा था। बापट जी की आदतों की जानकारी बहन पद्मा के माध्यम से घर में मिल रही थी। कई दिनों से न तो बापट जी घर गए न ही कोई पत्र लिखा। बापट जी की कमाई अच्छी थी। वे अपना पैसा सिनेमा व्यवसाय में लगा रखे थे। वे स्वयं बताते हैं–उन्होंने पचास हजार रुपया फँसा रखा था, पूरा पैसा डूब गया। बाद में उन्होंने पैसा जमा करना छोड़ दिया। वे हजारों रुपया खर्च कर देते थे। कालीघाट पर भिक्षुओं को पैसा बाँटते देखे जाते थे। दामोदर जी की ये आदतें मूर्तिजापुर में उनके माता–पिता तक पहुँचती थी। श्रीमती मीना धनंजय

आमड़ेकर (भतीजी) एवं संगीता विनय बापट (बहु) बताती हैं–''हमारे चन्दू काका की बातों पर घर में सहसा कोई विश्वास नहीं करता था । परिवार में वे एक अविश्वसनीय व्यक्ति माने जाते थे। जब हम प्रत्यक्ष मिले तो उन्होंने बताया–कौन सा ऐसा गलत काम है जो मैंने नहीं किया । वे बताने लगे तो उनका पिछला इतिहास सुनकर हम दंग रह गए । लगभग सभी प्रकार के व्यसन उनको थे । उनको प्रतिदिन स्नान करना अनिवार्य नहीं था ।

उनका एक दूसरा रुप भी था । पिंजरापोल सोसायटी के चौकीदार रामसनेही मिसिर ने (दि. 15.11.2016) को अपने संस्मरण में बापट जी का स्मरण करते हुए बताया–''मैं एक बार बीमार हुआ तो बापट जी ने मेरा इलाज कराया । दवाई का पैसा भी बापट जी ने ही दिया । बीमारी के कारण मैं ड्यूटी नहीं कर पाता था तो बापट जी पिंजरापोल सोसायटी का दरवाजा रोज सुबह खोलते और बन्द करते थे । इतना ही नहीं बापट जी मेरी चाय की दुकान भी चलाते थे। कमाई की एक–एक पाई बापट जी ने रामसनेही जी को दी । यही कारण है कि रामसनेही मिसिर 85 वर्ष की आयु में भी दामोदर गणेश बापट उपाख्य बापटवा जी को भूले नहीं ।

समय पालन, अतिरिक्त राशि नहीं लेना, रामसनेही की सेवा करना, उसकी जगह ड्यूटी करना, चाय बेचना, एक–एक पाई का हिसाब देना । ऐसा करते समय उन्होंने रिक्शे वालों, कुलियों के जूठे चाय के कप भी धोए होंगे । बर्तन तो माँजे ही होंगे ? इतना करने के बाद, अपने काम पर जाना और काम ईमानदारी से करना । वे अपनी कंपनी में एक परिश्रमी, निष्ठावान और विश्वस्त कर्मचारी माने जाते थे ।

एक दिन दीपांकर बैनर्जी बहुत परेशान थे । बापट जी को देखते ही बोले–बापट जी बहुत बड़ी गलती हो गई । एक लाख का चेक नार्मल डाक से दूसरे पते पर पोस्ट हो गया । यह रजिस्टर्ड डाक से जाना था, अर्जेन्ट आर्डर का है । अभी आते ही गाड़गिल साहब पूछेंगे । क्या किया जा सकता है ? आप बताईये । बापट जी बोले उसमें पार्टी का नाम लिखा है तो वापस आ जाएगा चिन्ता न करो ।

* बापट साहब चैक अर्जेन्ट है । नार्मल डाक से जाने–आने में सात दिन लग जाएंगे । पार्टी का फोन आ जाएगा ।

* अच्छा ये बताओ ! पत्र कौन से पोस्ट बाक्स में डाला है ? चपरासी को मेरे साथ भेजो । पोस्ट बाक्स में खुलने का समय लिखा था । वापस आकर दीपांकर जी को बोले–चिन्ता ना करो आपको कल सुबह चैक वापस मिल जाएगा ।

दीपांकर जी रात भर सो नहीं सके । दूसरे दिन बापट जी ने पत्र लाकर दे दिया । बापट जी सुबह डब्बा खुलने के पहले ही डब्बे के पास खड़े हो गए । पोस्टमैन को

पिंजरापोल सोसायटी कलकत्ता का भवन, 34, आरमेनियम स्ट्रीट, बड़ा बाजार (कोलकाता)

पिंजरापोल सोसायटी के चौकीदार रामसनेही मिसिर, बापट जी के मित्र, बैरकपुर, कोलकाता

कहा–मेरी एक चिट्ठी गलती से इसमें आ गई है। उन्होंने अपना पूरा परिचय दिया। कंपनी को पोस्टमैन जानता था। उसने अपनी चिट्ठी छाँट लेने को कहा। बात बन गई पर पोस्टमैन को चाय पिलानी पड़ी। बापट जी की सूझ–बूझ, प्रत्युत्पन्नमति जबरदस्त थी।

घर से दूसरा पत्र आया था। हाँ या ना में जबाव माँगा गया था। बापट जी पत्र लेकर पूरे कलकत्ता में घूमते रहे। शाम के समय वे वेलूरमठ पहुँचे। गंगाकिनारे बैठे रहे। मठ का दरवाजा बन्द हुआ तो वे अनमने–गुमसुस गंभीर मनःस्थिति में पिंजरापोल सोसायटी पहुँचे। रामसनेही के हाथ की रोटी खाई, दोनों ने भगवान शंकर का प्रसाद खींचा और रात में कमरे में आकर सहगल का गाना सुनते रहे।

बापट जी की आदतों से घर वाले बड़े परेशान रहते थे। उनके भाई–बहनें उन पर विश्वास नहीं करते थे। विनोदी स्वभाव होने के कारण उनके व्यक्तित्व को अत्यंत हल्का समझते थे। भाईयों–भाभियों के बीच वे उपहास–उपेक्षा का पात्र बन जाते थे। उनके आचरण व्यवहार में गंभीरता नहीं थी। अवघड़, अवलिया, बिगड़ा हुआ, जुआरी यही छबि उनकी परिवार के सभी सदस्य मान बैठे थे। दबी आवाज में चर्चा चल पड़ी कि वह भोजन–पानी से पूर्णतः बँगाली हो गया है। माँ का मन दुःखी अवश्य था पर उनको ये आरोप मान्य नहीं थे। आग्रहपूर्वक उसको दूसरा पत्र डलवाया। इस पत्र का भी कोई उत्तर नहीं आया। पिताजी तो मान ही बैठे थे कि ये लड़का बिगड़ गया। इसी चिन्ता में श्री गणेश विनायक बापट जी इस भू–लोक से विदा लेकर चले गए। कलकत्ता में टेलीग्राम द्वारा यह समाचार बापट जी को मिला। वे किसी को भी बिना बताए, सब कुछ छोड़कर मूर्तिजापुर आ गए। वे माताजी के पास रहने लगे। भाई–भाभी उनकी आदतों से परेशान थे। उनके स्वभाव का अवलियापन सब को स्वीकार नहीं था।

श्री वसंतराव बापट जी बताते हैं–सन् 1966–67 का वर्ष होगा। वे अचानक नौकरी छोड़कर चले गए। मैंने कभी भी ध्यान नहीं दिया। जब मैं व्यवस्था प्रमुख बना तो छत्तीसगढ़ प्रवास में गया। वहाँ दामोदर गणेश बापट का परिचय आया। मैं तो समझा कि कोई लेप्रोसी पेशेंट ही परिचय दे रहा है। मैं तो भूल ही गया था। दामोदर जी ने ही मुझे याद दिलाया, नहीं तो हजारों बापट में से यह भी कोई एक होगा ऐसा मान लेना। हम पूर्वांचल जन कल्याण समिति की ओर से प्रतिवर्ष उनको 15000/– रुपये भेजते हैं। लगभग पैंतीस वर्षों बाद वयोवृद्ध दामोदर को देखा। सन् 1966–67 के उत्साही, जवान, फिल्म के शौकीन दामोदर में और सत्तर के लगभग आयु के अस्त–व्यस्त वस्त्रावृत्त शरीर संरचना किंतु एक तपस्वी दामोदर गणेश बापट

में बहुत बड़ा अंतर था। उनके भूतकाल एवं वर्तमानकाल में कोई साम्य नहीं था।

दामोदर गणेश बापट जी के घर में दो किरायेदार रहते थे। श्री चौगावकर और श्रीधर पांडुरंग क्षीरसागर। श्रीधरजी मूर्तिजापुर में स्टेशन मास्टर थे। उनके साथ बापट जी की मित्रता हो गई। क्षीरसागर जी के साथ बापट जी रोज सुबह तैरने निकल जाते थे। दिन के समय वे माँ के पास रहते थे। प्रतिदिन शाम को कोटेपूर्णा मंदिर में दर्शन करने जाते थे। शेष समय नगरभ्रमण करना उनकी दिनचर्या बन गई थी। मनोहर वियाणी जी से भी उनकी अच्छी मित्रता थी। दिन भर उनकी व्यस्तता इसी प्रकार थी। थोड़ा बहुत समय बचता था उसमें वे रेडियो सुना करते थे। माताजी भोजन के लिये प्रतीक्षा करती रहती थी। बापट जी घर आते तो भोजन निकालकर देती थी। भाभियों को उनसे कोई लगाव नहीं था। दामोदर जी की जो प्रतिमा निर्माण हुई थी उससे किसी के भी मन में कोई आस्था या श्रद्धा निर्माण होने की कोई संभावना नहीं थी। वे हरफन मौला शहर में भटकते रहते थे। ''दार्शनिक–विचारक–चिंतक कहते हैं कि व्यक्ति के शरीर को मन भटकाता है। शरीर, बुद्धि स्वस्थ होने पर भी अस्थिर चित्त दिखाई देता है, वह मन के कारण है।''

एक दिन रात में बापट जी रेडियो सुन रहे थे। बाला साहब देशपांडे जी, वनवासी कल्याण आश्रम का साक्षात्कार रेडियो पर आ रहा था। वे ध्यान से सुनने लगे। उनको लगा कि मेरे मन की चंचलता एवं अस्थिरता के लिये मारक मंत्र एवं भावी जीवन के लिये तारक मंत्र मिल गया। श्रद्धेय बाला साहब देशपांडे जी, अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के संस्थापक अध्यक्ष रहे हैं, जिसका मुख्यालय, छत्तीसगढ़ प्रांत के जशपुर जिला के जशपुरनगर में है। यह संस्था पूर्णतः वनवासियों के सर्वांगीण विकास के लिये कार्य करती है। ''निःस्वार्थ भाव से पूर्णतः समर्पित होकर वनवासियों की सेवा करने वाले युवक–युवतियों की आवश्यकता है'' इस आशय का आह्वान बाला साहब जी ने रेडियो के माध्यम से किया था। इससे प्रभावित होकर बापट जी ने एक दिन अपना झोला उठाया और किसी को बिना बताए अनजान शहर ''जशपुर'' के लिये निकल पड़े। मुक्ताकाश का पंछी पुनः अपना बसेरा छोड़कर उड़ चला।

****

दामोदर गणेश बापट जी जहाँ पढ़े मेट्रिक, विद्यालय भवन,
मूर्तिजापुर (महाराष्ट्र)

बापट जी के बाल मित्र मनोहर वियाणी जी,
श्री विनायक बारेजी एवं वियाणी जी के पुत्र, मूर्तिजापुर

श्री मनोहर वियाणी जी के साथ बापट जी के बारे में चर्चा (मूर्तिजापुर) महाराष्ट्र

मंदिर जहाँ बापट जी प्रतिदिन दर्शन के लिये जाया करते थे। मूर्तिजापुर (महाराष्ट्र)

वह पेड़ जिस पर चढ़कर तालाब में छलांग लगाते थे। मूर्तिजापुर (महाराष्ट्र)

तालाब, आज वह गंदा हो गया है। मूर्तिजापुर (महाराष्ट्र)

स्व. वसंतराव जी के संस्मरणों का संकलन करते हुए (कोलकाता)

श्रद्धेय दामोदर गणेश बापट जी के साथ चर्चा करते हुए संकलनकर्ता (कात्रेनगर)

सौ. संगीता बापट जी द्वारा दिया गया सिक्का दिखाती हुई (पुणें) महाराष्ट्र

श्रद्धेय बापट जी की भाभी, भतीजी सौ. मीना आमड़ेकर एवं
बहु सौ. संगीता बापट का संस्मरण संकलित करते हुए पुणें (महाराष्ट्र)

गन्तव्य की ओर .....

दामोदर गणेश बापट ट्रेन से रायगढ़ के लिये निकले। तीन दिनों के प्रवास के बाद वे रायगढ़ पहुँचे वह भी खाली हाथ। उनका सामान रुपया पैसा सब ट्रेन में ही चोरी हो गया। यह भी हो सकता है कि संकल्प की दृढ़ता की परीक्षा के लिये ही नियति ने यह प्रसंग रचा हो ? बापट जी पूछते–पूछते बस स्टेंड आए। जशपुर जाने के लिये पैसा नहीं था। अपने हाथ की घड़ी उन्होंने एक पान दुकान में बेच दी और जशपुर की टिकिट निकाली। वे भूंखे प्यासे ही प्रवास कर रहे थे। रायगढ़ से जशपुर की दूरी लगभग दो सौ दस किलोमीटर थी। रास्ता था ही नहीं कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी, जशपुर जाने में दस से बारह घंटे लगते थे। बस में भीड़ भी अधिक थी। बापट जी ने एक खाली सीट पर कब्जा जमाया। बस छूटने लगी तो एक सज्जन चढ़े और बापट जी से बोले–यह मेरी सीट है, इसमें मैं बैठा था तब बापट जी बोले मैं चढ़ा तो यह सीट खाली थी, इसमें आपका नाम लिखा है क्या ? दोनों आपस में लड़ते हुए जशपुर तक आए। इसी बस में आदरणीय बाला साहब देशपांडे जी थे। जशपुर पहुँचकर बापट जी कल्याण आश्रम का पता पूछने लगे। बाला साहब का ध्यान उसकी ओर गया, वे डॉक्टर प्रसन्न सप्रे जी से बोले–देखो प्रसन्न, कौन आश्रम का पता पूछ रहा है ?

सप्रे जी ने देखा बापट जी आश्रम का पता पूछ रहे हैं। बापट जी जिस व्यक्ति से लड़ रहे थे वे डॉक्टर सप्रे जी ही थे। दोनों साथ–साथ कल्याण आश्रम आए। बापट जी से पूछा गया–चिट्ठी लाए हो ?

* कोई चिट्ठी नहीं
* कैसे आना हुआ ?
* मैंने बाला साहब जी का साक्षात्कार रेडियो में सुना। मेरी इच्छा हुई कि इस प्रकार के आश्रम में काम करना चाहिये। मैं मूर्तिजापुर से रायगढ़ और रायगढ़ से आपके साथ जशपुर आ गया।
* आपकी पढ़ाई कहाँ तक हुई ? इसके पहले आप क्या करते थे ?
* मेरी पढ़ाई बी.ए., बी.कॉम. तक हुई है। मैं कलकत्ता में एक कंपनी में काम करता था। नौकरी छोड़कर आया हूँ।

सारा वृत्तान्त सुनने के बाद बाला साहब बोले–हमारे यहाँ तो सेवाएं देनी पड़ती हैं। कोई मानधन मिलेगा नहीं, अधिक से अधिक हम दो वक्त का भोजन एवं आवास की सुविधा दे सकते हैं।

आदरणीय प्रसन्न दामोदर सप्रे जी बताते हैं मात्र 20/– रुपये महीना मानधन में मान गया। बापट जी सुनिश्चित करके ही आए थे। अतः उन्होंने सारी शर्तें मान लीं। लोग सोचने लगे कलकत्ता जैसे शहर में रहने वाला, हवाई यात्राएं करने वाला व्यक्ति इस जंगल में कहाँ टिक पाएगा ? कुछ दिनों में भाग जाएगा। जशपुरनगर यह छत्तीसगढ़ का सबसे ठंडा नगर था। जिला सरगुजा एवं जशपुर रियासत छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक ठंडा रहता था। सन् 1967–68 में साल, पीपल तथा उच्चकोटि के आम वृक्षों के बीच कच्चे खपरैल के मकान दिखाई देते थे। आज शायद पक्के मकानों के बीच कहीं–कहीं वृक्ष दिखाई देते हैं।

कलकत्ता जैसे अत्यंत आधुनिक शहर में रहने वाले हरफन मौला बापट जी का निश्चय अटल था। अर्थ के प्रभाव से युक्त जीवन जीने वाला व्यक्ति अर्थ के एकदम अभावग्रस्त जीवन को स्वीकार कर रहा था। अत्यंत व्यस्त एवं सक्रिय रहने वाले व्यक्ति को कोई काम नहीं दिया गया था। बापट जी के मन में कैसा द्वंद चल रहा होगा ? कल्पना के परे था। दो–तीन माह तक उनको कोई काम नहीं दिया गया। बापट जी ने इस पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की परन्तु अन्दर ही अन्दर वे बेचैनी का अनुभव करने लगे। अंत में उन्होंने अपने लिये काम ढूंढ लिया। उस जमाने में शौचालय आज जैसा नहीं था। प्रतिदिन साफ करने के लिये श्रीमती हिरोमनी पत्नी रामबिलास (स्वीपर) आती थी। दामोदर गणेश बापट जी ने उसको अपनी बहन बना लिया। बापट जी ने कहा हम दोनों मिलकर शौचालय साफ करेंगे। बापट जी की बात सुनकर वह एकदम अवाक रह गई। उसने बापट जी को मना किया, कहा–''हम तो स्वीपर हैं हमें तो यह काम करना ही है, यह काम आप जैसे बड़े लोगों का नहीं है।'' बापट जी बोले–जब तुम यह काम कर सकती हो तो मैं क्यों नहीं कर सकता ? बापट जी बाल्टी से पानी लाते थे और शौचालय साफ करते थे। यह काम दोनों मिलकर कई दिनों तक करते रहे।

आश्रम के लोग कहने लगे अच्छा डबल ग्रेजुएट स्वीपर मिला है। परन्तु बापट जी इस टिप्पणी की ओर ध्यान नहीं देते थे। वे लगन के साथ अपना काम करते रहे। बापट जी ने ''बहन'' मात्र शाब्दिक सम्बोधन नहीं किया था अपितु जब तक वे जशपुर में रहे तब तक भाई बहन के संबंध को निभाते रहे। प्रत्येक रक्षा बंधन एवं भाई दूज पर वे रामविलास के घर भोजन करने पहुँच जाते थे। बापट जी का आचरण एवं व्यवहार कोई राजनीतिक अथवा प्रशासनिक नौटंकी नहीं था, अपितु शुद्ध अन्तःकरण से, पवित्र भावना से उन्होंने भाई–बहन के संबंधों को शुचिता के साथ जिया है। समाज जिन लोगों के नजदीक अथवा साथ बैठना पसंद नहीं करता था उस

काल में बापट जी उनके घर पर भोजन के लिये जाते थे। महात्मा गांधी ने कहा था– ''अस्पृश्यता भगवान के प्रति अपराध है'' (Untouchability is the Crime against God) इसी आशय के उद्‌गार पूणें के वसन्त व्याख्यान माला में परमपूजनीय बाला साहब देवरस जी ने व्यक्त किये थे। वे कहते हैं ''अस्पृस्यता यदि पाप नहीं तो दुनिया में कुछ भी पाप नहीं।'' बापट जी ने इन्हीं विचारों के अनुरुप आजीवन आचरण किया।

बापट जी ने अपनी पढ़ाई का भी सदुपयोग स्वयं प्रेरणा से करना प्रारंभ किया। वे खाली समय में छात्रावास के बच्चों को अँग्रेजी पढ़ाया करते थे। बच्चों की देखभाल भी करते थे। छात्रावास का एक बालक बापट जी के साथ ही सोता था, उसका नाम था गोविन्द यादव वह ग्राम पगुराटांगर का रहने वाला था। जशपुर में ठंडी भयंकर रहती थी जिसके कारण बच्चे कई बार बिस्तर में पेशाब कर देते थे। ऐसा कई बार गोविन्द यादव भी कर देता था। परन्तु बापट जी ने उसको कभी दुत्कारा नहीं। वे सदैव उसे पढ़ाई के लिये प्रेरित करते रहे। आज वह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में प्राचार्य है। बापट जी के सम्पर्क में आए अनेक विद्यार्थी संघ के तृतीय वर्ष प्रशिक्षित कार्यकर्ता हैं। श्री हरदयालराम ग्राम पटिया ब्लॉक मनोरा, आज भी समाज में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

बापट जी आश्रम के किसी भी कार्य को बड़ी लगन से करते थे। उनके काम को देखकर उन्हें शिक्षक का दायित्व दिया गया। वहाँ प्रत्येक कार्यकर्ता को अपने निर्धारित कार्य के अतिरिक्त भी काम करना होता था। बापट जी का बड़े–बड़े लोगों से सम्पर्क था कि नहीं कहना कठिन है। परन्तु अत्यंत गरीब एवं छोटे स्तर के कार्यकर्ताओं एवं ग्रामीण लोगों से अत्यंत आत्मीय एवं निकट का संबंध था। बापट जी की एक और विशेषता ध्यान में आती है–वे ग्रामीण जीवन, परम्परा एवं व्यक्ति का सूक्ष्मता से अध्ययन किया करते थे। उसके लिये ग्रामीणों के बीच उनके खान–पान, रहन–सहन का प्रत्यक्ष अनुभव किये बिना यह सम्भव नहीं है। उच्चविद्या विभूषित व्यक्ति समाज में असहज तथा कुछ मात्रा में हँसी का पात्र बन जाता है। जो व्यक्ति उनकी आन्तरिक गहराई से किंचित मात्र भी परिचित होते हैं वे उनके बाह्य स्वरुप को देखकर क्षणिक मनोरंजन कर लेते हैं परन्तु वे उपहास नहीं करते। उदाहरण ही देना हो तो–एक बार परमपूज्यनीय रज्जू भैय्या का प्रवास रायपुर (छत्तीसगढ़) में था तब रज्जू भैय्या ने कहा–बापट जी जरा कोट का बटन ठीक से लगाया करिये भाई ! (मकर संक्रांति सन् 1995, सुराना भवन रायपुर) परन्तु रज्जू भैय्या जैसे व्यक्तित्व को बापट जी की ऊँचाई और गहराई का आभास था। महापुरुष संकेत द्वारा ही लौकिक

व्यवस्थितता की ओर ध्यानाकर्षण कर दिया करते हैं। आध्यात्मिकता एवं आधुनिक व्यवस्थितता के साथ–साथ युगानुकुल व्यावहारिकता की दृष्टि से तो स्वामी विवेकानन्द, महर्षि योगी अरविन्द, परमपूज्यनीय श्री गुरुजी, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी जैसे अनेक महापुरुष परिपूर्ण दिखाई देते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि बापट जी जैसा अवलिया हमने देखा नहीं। साल में पचास दिन नहा लिया तो पर्याप्त है। जशपुर में अपेक्षाकृत ठंड अधिक पड़ती है। कार्यकर्ता सुबह से ही आग के पास बैठे रहते थे। विद्यालय की जब घंटी बजती थी तब बापट जी को होश आता था और मुँह पर पानी के छींटे मारकर पढ़ाने चल देते थे। गाँव जाने पर वे पूरी तरह ग्रामीण परिवेश में, खान–पान में रम जाते थे। मद्यपान एवं नाचने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता था। जशपुर के पास एक गाँव है ''बुमतेल'', वहाँ का एक विद्यार्थी गणेश राम भगत आश्रम छात्रावास में रहकर पढ़ाई करता था। बापटजी उनके घर पहुँच जाते थे, उनके पिता का नाम था रामनन्दन भगत। रात में बापटजी और रामनन्दन जी की महफिल जमती थी। दोनों हमप्याला–हमनिवाला थे। थोड़ी चढ़ जाने पर दोनों का संवाद अंग्रेजी में होता था। दोनों में गहरी दोस्ती थी।

शिक्षक के नाते बापटजी बड़े लोकप्रिय थे। जनता में भी इनकी लोकप्रियता थी। कभी भी, कहीं भी जाने में वे संकोच नहीं करते थे। वे वनवासियों के बीच वनवासी बन जाते थे। एक घटना ने तो उन्हें वनवासियों का भक्त ही बना दिया। वे सायकल से करदना गाँव जा रहे थे। रास्ते में उनका कम्बल गिर गया। दूसरे दिन जब वे वापस आ रहे थे तो कम्बल रास्ते में पड़ा मिला। उन्होंने आने–जाने वालों से पूछा–यह कंबल आपने उठाया क्यों नहीं। जवाब मिला हमारा नहीं है तो हम क्यों उठाए। जवाब सुनकर बापट जी वनवासियों के भक्त बन गए।

वनवासी कल्याण आश्रम का प्रत्येक कार्यकर्ता आश्रम के प्रति जवाबदेह था। इसलिये सबको सभी काम करना पड़ता था, जिसको जो काम बताया जाता था वे करते थे। बापट जी किसी भी काम को अत्यंत लगन से करते थे। कल्याण आश्रम का दो स्थानों पर भंडार था। ग्राम करदना के भंडार का दायित्व कुछ दिनों के लिये बापट जी की ओर था। वे प्रति सप्ताह वहाँ जाया करते थे। एक बार वे पैदल ही करदना से भँवर चले गए। वहाँ कल्याण आश्रम के एक कार्यकर्ता श्री चैतूराम जी रहते थे। शाम को बापट जी भी भँवर पहुँचे। उनके घर थोड़ी खेती थी। सुबह भात खाने के बाद धान काटने जाना था। बापट जी भी हँसिया रस्सी लेकर साथ गए। दोपहर को वे भी धान का गट्ठर उठाकर घर तक आए।

बापट जी भरपूर मस्ती के साथ ग्रामीण जीवन का आनन्द ले रहे थे। चैतूराम

जी के घर एक गाय थी वह दुधारु थी । बापट जी गाय का दूध निकालने गए । बर्तन लेकर जैसे ही दूध निकालने के लिये बैठे गाय ने एक लात मारी बापट जी बर्तन सहित पीछे गिर गए । परन्तु उन्होंने हार नहीं मानी । गाय का पिछला पैर बांधकर लगभग एक पाव दूध निकाला, गरम करके पीया । चैतूराम जी की नजर बचाकर हँसिया रस्सी लेकर जंगल चले गए । सूर्यास्त के समय बापट जी हरी घास का बंडल उठाकर लाए । चैतूराम जी कुछ पूछते इसके पूर्व ही बापट जी बोले–गौ माता का दूध पीया तो उसके खाने के लिये चारा ले आया ।

ग्राम भँवर जशपुर की ईब नदी के पश्चिमी तट पर बसा हुआ एक गाँव है । जशपुर के ठंडे इलाके में यह गिना जाता है । करदना से बापट जी पैदल भँवर गए थे वह भी ठंड के दिनों में । बापट जी का यह क्रियाकलाप प्राकृतिक एवं स्वाभाविक था । गाय का दूध के निकालने का, गरम करके पीने का, वर्णन आनंद के साथ रुचिकर ढ़ंग से किया जा सकता है परन्तु गाय को चारा पानी देने का विचार मन में आना यह प्रत्यक्ष संवेदना का प्रमाण है । बापट जी ने किसी को दिखाने के लिये यह नहीं किया, यह तो बापट जी के मन का स्थाई भाव है । उनकी कृति उनका हास्य, उनके मन की प्रसन्नता बच्चों के समान निश्च्छल निर्मल है । उनमें कोई चतुराई, चालाकी या दिखावापन नहीं है बल्कि अन्तर्मन की करुणा एवं संवेदना से सराबोर है ।

बापट जी कलकत्ता के सुखसुविधा से युक्त चकाचौंध के अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव जगत को भूल गए थे । उनके व्यवहार एवं आचरण का जशपुर क्षेत्र के लोग आनन्द लेते थे, उनके साथ विनोद भी किया करते थे । बापट जी इस प्रकार के आनन्द एवं विनोद से नाराज नहीं होते थे । जशपुर के ग्रामीण तथा आश्रम परिसर में लोग उन्हें पापड़राम कहकर पुकारते थे । बापट जी की लोकप्रियता कितनी थी इसका अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि एक कार्यकर्ता के घर बच्चा पैदा हुआ उसका नाम पापड़राम रख दिया गया ।

कल्याण आश्रम छात्रावास के लिये चावल शासकीय राशन दुकान से मिलता था । सन् 1969–70 में भयंकर अकाल पड़ा था । राशन वितरण का कार्य तेजी से चल रहा था । बड़ी लम्बी कतार लगी थी । बापट जी भी उसी कतार में लगे थे । क्लर्क सभी से रजिस्टर में अंगूठे का निशान लगवा रहा था । बापट जी एक गमछा लपेटे खड़े थे । क्लर्क ने उनसे भी अंगूठा लगवा लिया । बापट जी ने भी आसानी से निशान लगा दिया । राशन वितरण का कार्य–निरीक्षण करने एस.डी.ओ. श्री राघवन जी (दक्षिण भारतीय) अधिकारी आए थे । बी.डी.ओ. स्थानीय व्यक्ति थे, वे उन्हें समझाने का प्रयास कर रहे थे । समस्या थी कि राघवन साहब हिन्दी नहीं समझते थे

और बी.डी.ओ. को अंग्रेजी नहीं आती थी। यह बात बापट जी के ध्यान में आई। उन्होंने अनुवादक का काम किया। अंगूठा लगवाने वाला क्लर्क यह सब देख रहा था। अधिकारियों के जाने के बाद वह बापट जी से क्षमा याचना करने लगा। बापट जी ने कहा–अरे ! आपने तो मुझे हस्ताक्षर करने के झंझटों से बचा लिया। चिंता मत करिये आपको कुछ नहीं होगा। बापट जी में बाल–सुलभ सरलता भी झलकती है।

बापट जी की कई हरकतें बड़ी विचित्र थीं, उनको समझना बहुत ही कठिन है। एक बार अमरकंटक में प्रमुख कार्यकर्ताओं का वर्ग लगा था। यादव राव जी कालकर, काशीनाथ गुप्ता जी के साथ शाम को घूमने निकले। बापट जी कुछ गंजेड़ी भिखमंगों के साथ गाँजा पी रहे थे। यादव जी को देखा तो कंबल में मुँह छिपाकर, भीख मांगने की मुद्रा में हाथ फैला दिए।

आश्रम में गोपाल गुरुजी और बापट जी एक ही कमरे में रहते थे बापट जी के मित्रों में भगवान शंकर के बाराती थे। बुमतेल के रामनंदन भगत, करदना के सुकु भंडारी, आश्रम का चौकीदार मोलोराम। एक दिन बापट जी मोलोराम के साथ गाँजा पीने निकले। गोपाल गुरुजी अपने कमरे में आकर चाय बनाने के लिये माचिस ढूंढने लगे, माचिस गायब थी। सन् 1970–71 में एक माचिस का गायब हो जाना भी बहुत महंगा पड़ता था। पड़ोस में माचिस मांगकर काम चलाया। बापट जी रात में आश्रम में पहुँचे, परन्तु आते समय दो माचिस खरीदकर लाए। गोपाल गुरुजी को दो माचिस की डिबिया लाकर दी।

कमरे में दो भाग थे। सामने गोपाल गुरुजी और अन्दर के भाग में बापट जी रहते थे। उनके बिस्तर के बाजू में एक गर्भवती कुतिया घुसकर बैठ गई। बापट जी अपने बिस्तर में आकर सो गए। आधीरात में उनको कुछ आवाज आई। उठकर देखा कुतिया बच्चों को जन्म दे रही है। बापट जी शांत देखते रहे। प्रातः बापट जी ने किसी को भी बिना बताए कुतिया के खाने के लिये प्रबन्ध किया और आश्रम में ही आम के पेड़ के नीचे छोटी सी कुटिया बनाकर, पुआल बोरा बिछाकर कुतिया और बच्चों को सुरक्षित निवास में रखा। बापट जी को ऐसा करते देखकर कुछ लोगों ने अपना मनोरंजन भी किया।

बापट जी का स्वरुप चाहे जैसा हो, परन्तु भाषा ज्ञान, मर्यादाएं, कार्य के प्रति निष्ठा और कर्मठता अटूट थी। किसी भी कार्य को कुशलतापूर्वक सफलता के साथ करना उनकी विशेषता थी। फिर भी उनके लिये अवधूत, अवलिया शब्द प्रचलित हो गया। आश्रम के अधिकांश कार्यकर्ता उनसे विनोद किया करते थे। परन्तु बापट जी पर इसका कोई दुष्परिणाम होता नहीं था। जशपुर उस समय कोई बहुत बड़ा

नगर नहीं था। शिक्षा की दृष्टि से भी अत्यंत असुविधा वाला केन्द्र था। ग्रामीण क्षेत्रों में अवश्य क्रिश्चन मिश्नरीज के विद्यालय थे। जशपुर नगर की जनसंख्या उस समय पाँच से सात हजार के बीच रही होगी। वह नगर कल्याण आश्रम के कारण उच्च विद्या विभूषित व्यक्तियों का केन्द्र बन गया था। बी.ए., बी.कॉम. उपाधि प्राप्त व्यक्ति सुदूर करदना–सन्ना जैसा ग्रामीण इलाके में सम्पर्क करता है यह बापट जी के प्रति ग्रामीण क्षेत्रों में श्रद्धा का कारण था। जशपुर में पहला कॉलेज ''नेशनल एजुकेशन सोसाइटी'' द्वारा प्रारंभ किया गया जिसको एन.ई.एस. कॉलेज के नाम से लोग जानते हैं। बापट जी चलते फिरते बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाया करते थे।

दामोदर गणेश बापट जिनकी आदतें भगवान शंकर, अवधूत जैसी थीं। स्वभाव और आदतें इसमें बड़ा अन्तर है। मनुष्य की आदतें इन्द्रियजन्य होती है। शराब, जुआ, गाँजा यह आदतों में शामिल हो जाती हैं। परन्तु स्वभाव यह आंतरिक संरचना होती है, जिसमें संवेदनशीलता का प्रमुख स्थान होता है। आंतरिक संवेदनाओं का आवेग प्रबल होने से इन्द्रियों पर विजय प्राप्त किया जा सकता है। संवेदनाएं अनुकूल एवं प्रतिकूल हो सकती हैं। प्रतिकूल संवेदनाएं मानव के विकारों एवं वासनाओं को प्रदीप्त कर सकती हैं। अनुकूल संवेदनाओं से मानव का मूल स्वभाव निखर कर आता है। वह रत्नाकर से वाल्मीकि तक की यात्रा कर सकता है। हुलसी के मोह में फँसा तुलसी गोस्वामी तुलसीदास बन सकता है।

****

पूर्णांक की ओर .....

गर्मी के दिन थे। बिजली की कोई व्यवस्था नहीं थी। ग्रामीण क्षेत्र था, सर्वत्र अंधेरा ही था। आश्रम का मुख्य द्वार बंद था। भोजनोपरान्त सब लोग सोने की तैयारी कर रहे थे। उसी समय दरवाजा बजा। एक कार्यकर्ता ने दरवाजा खोला। लगभग 35–36 वर्ष का युवक अन्दर आया। वह युवक कोई और नहीं श्री दामोदर गणेश बापट जी थे।

दामोदर गणेश बापट जी वनवासी कल्याण आश्रम के कार्य से रायगढ़ आए थे। दूसरे दिन रविवार था। अतः दामोदर जी ने सोचा कि यहाँ रुकने के बजाय चांपा चला जाए। सुना था चांपा के पास कोई आश्रम खुला है, वे गाड़ी पकड़कर सीधे चांपा आ गए। स्टेशन से बाहर आकर उन्होंने एक होटल में कुष्ठ आश्रम सोंठी का पता पूछा। शाम का समय था। होटल मालिक अगरबत्ती जला रहा था। झल्लाकर उसने कहा–दीया बत्ती का समय है, कहाँ कोढ़ियों का पता पूछ रहा है ? पूछना ही था तो किसी अच्छे आदमी का पूछता। चले आते हैं दिमाग खराब करने। दामोदर जी ने दो–तीन लोगों से पूछा पर किसी ने नहीं बताया। उल्टे पाँव वे स्टेशन आ गए। वापस रायगढ़ जाने का मन बनाकर स्टेशन आ गए। रात में कोई गाड़ी नहीं थी। प्लेटफार्म पर रात बिताने के अलावा कोई चारा नहीं था। वहाँ कुछ कुष्ठरोगियों के अलावा कोई था नहीं। भीख माँगते हुए एक रोगी बापट जी के पास आया। बापट जी ने उससे पूछा–सुना है कुष्ठरोगियों के लिये कोई आश्रम खुला है ? कुष्ठ रोगी ने बताया–यहाँ से लगभग आठ कि.मी. दूर बिर्रा मार्ग पर एक आश्रम खुला है। बापट जी ने उसको पैसै दिए और रात के अंधेरे में ही पैदल आश्रम की ओर चल दिए।

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ का कार्यकर्ता का नाम है सदाशिव गोविन्द कात्रे। बापट जी उनसे मिलना चाहते थे। कार्यकर्ताओं ने बताया कि कात्रेजी उधर मिलेंगे। बापट जी बड़ी तेजी से उस ओर बढ़ चले। छोटी सी मिट्टी की एक कुटिया, उसमें एक पुरानी खटिया। उस पर लगभग सत्तर वर्षीय एक अशक्त, कमजोर, हाथ पाँव की उंगलियाँ टेढ़ी–मेढ़ी, आधी गली हुई। अपने जीवन की अंतिम साँसे लेता हुआ एक व्यक्ति पड़ा है, परन्तु यह एक आश्चर्य की बात है कि उसके चेहरे पर एवं आँखों में परम सन्तोष झलक रहा है। थके हुए चेहरे पर वैसा ही आत्मविश्वास एवं प्रसन्नता झलक रही है जैसे खूब परिश्रम से थके हुए विजयी खिलाड़ी के चेहरे पर होती है। खटिया के पास ही माधव सदाशिवराव गोलवलकर जी का चित्र रखा था। दामोदर जी ने कुटिया में प्रवेश किया। कात्रे जी खटिया में लेटे हुए थे। बापट जी

सोचने लगे कुष्ठ रोगी, वृद्धावस्था, हाथ–पाँव में जखम ! अब उन्हें उनकी रुदन कथा सुननी पड़ेगी परन्तु कात्रे जी ने उन्हें रात के अंधेरे में कुष्ठ आश्रम तक पैदल चलकर आने के साहसिक कार्य के लिये बधाई दी। बापट जी सोचने लगे, कुष्ठ रोग के बारे में समाज की धारणा एकदम भिन्न है। इसका कटु अनुभव वे चांपा में कर चुके थे। ऐसे प्रतिकूल वातावरण में कात्रे जी की वृद्धावस्था व पाँवों के जखम देखकर वे हैरान थे। बापट जी को उनका निर्णय उचित नहीं लग रहा था। उन्होंने प्रश्न किया–कात्रे जी, ईसाई मिश्नरियाँ यह कार्य कर रही हैं फिर आपने इस कष्ट भरे मार्ग को क्यों स्वीकार किया ? अत्यंत आत्मविश्वास भरे स्वर में उन्होंने कहा–मित्र ! आज हमें स्वतंत्र हुए पच्चीस वर्ष हो गए हैं फिर भी क्या हमें उनके पैरों पर ही खड़ा होना पड़ेगा ? हमें लज्जा नहीं आएगी। टूटे–फूटे हाथ–पैर ही क्यों न हों, लेकिन हम हैं तो इसी माटी के और अपनी माता (भूमि) के कुष्ठ पीड़ित पुत्रों की सेवा में लगे हैं। मुझे यह कष्ट शूल जैसे दुःखदायी नहीं अपितु फूल जैसे आनन्द देते हैं।

बापट जी ने दूसरा प्रश्न किया–आप कहाँ के रहने वाले हैं ? यहाँ आना कैसे हुआ ? यह दायित्व आपको किसने सौंपा ? प्रश्न सुनकर उनका चेहरा खिल उठा। परमपूज्यनीय श्री गुरुजी के चित्र की ओर इशारा करते हुए कहा–''यह दायित्व मुझे इस तपस्वी ने सौंपा है और मैं अपने दिये वचन को रक्त की आखरी बून्द तक निभाने के लिये कटिबद्ध हूँ।'' परमपूज्यनीय श्री गुरुजी का नाम निकलते ही वे उठकर बैठने का प्रयत्न करने लगे। बापट जी सहारा देकर पीठ के पीछे तकिया लगाना चाहते थे परन्तु कात्रे जी ने कहा–''मित्र ! आपने ऐसे तपस्वी का स्मरण करा दिया है कि अब मैं बैठ भी सकता हूँ और आवश्यकता पड़ने पर दौड़ भी सकता हूँ।'' ''मूकं करोति वाचालम् पंगुम् लंघयते गिरिम् ..... उसी परमानन्द माधवम् की इच्छा से यह लंगड़ा जटिल समस्या से जूझने को तैयार हुआ। उन्होंने मात्र आज्ञा नहीं दी अपितु आज्ञा के निर्वाह के लिये आवश्यक प्रज्ञा भी प्रसाद स्वरुप दी है।''

कात्रे जी की वाणी में तेज, ओज एवं प्रखरता झलकती थी। वे आगे बोले–मित्र ! यहाँ कोई आना नहीं चाहता, जो आते हैं वे बातें करके चले जाते हैं। मित्र ! तुम्हें देखकर मुझे ऐसा क्यों लगा कि मैं तुम्हें अपने बारे में सब कुछ बता दूँ। शायद परमपूज्यनीय श्री गुरुजी की ही कोई योजना हो। वही महापुरुष मुझे बाध्य कर रहा है। ..... तुमने प्रश्न किया है तो अब धैर्य से सुनो ..... हमारे पूर्वज मूलतः रत्नागिरी महाराष्ट्र के निवासी हैं। हमारा परिवार पेशवा के जमाने में छत्रसाल बुन्देला के राज्य में आया। मेरे माता–पिता अरौन (गुना, वर्तमान नगर पंचायत, जनसंख्या 21230) मध्यप्रदेश में रहते थे। मेरी पढ़ाई झाँसी में हुई। मुझे रेल्वे में नौकरी लग गई।

विवाह हुआ, परन्तु गृहस्थी की गाड़ी बीच में ही रुक गई । पत्नी का देहांत हो गया । एक कन्या थी प्रभावती । उसका विवाह हो गया, वह अपनी गृहस्थी में मग्न है । मेरा भाग्य खराब था । प्रकृति ने मेरे साथ क्रूर उपहास किया । मुझे कुष्ठ रोग ने आ घेरा । कुछ दिनों तक तो परिवार में किसी को पता नहीं चला । चुपचाप इलाज चलता रहा, परंतु मेरा रोग छुप नहीं सका । हाथ–पैर गलना प्रारंभ हो गये । परिवार, समाज तथा रेल्वे सहकर्मियों को पता लग गया । लोग मुझे देखकर दूर भागने लगे । घावों से पानी बहना प्रारंभ हो गया, उस पर मक्खियाँ भिनभिनाने लगीं । अत्यंत आत्मीय कहे जाने वाले लोग भी मुझे घृणा की दृष्टि से देखने लगे । घर में भी मेरा बिस्तर, भोजन पात्र, स्नानादि की व्यवस्था पृथक हो गई । मेरे कारण परिवार की स्थिति खराब हो रही है यह सोचकर मैं गणेश मंदिर में जाकर रहने लगा । सन् 1952 में मैंने लड़की का विवाह कर दिया और अपना इलाज कराने अमरावती चले गया । कुछ दिनों बाद माँ भी चल बसी । झाँसी आकर मैंने सब धर्म–कर्म किए ।

मेरा शरीर ऐसा हो गया था जिसे देखकर लोगों में घृणा का भाव पैदा हो जाता था । सुना था क्रिश्चन मिश्नरीज द्वारा संचालित एक कुष्ठ रोग निवारण चिकित्सालय बिलासपुर के पास है । पूछते–पूछते उस चिकित्सालय में पहुँचा । बैतलपुर में यह संस्था है । इनका ध्यान मतान्तरण की ओर अधिक रहता था । इलाज तो ठीक करते थे । मरीजों की देखभाल भी उत्तम रीति से करते थे । कुछ दिनों बाद मेरे ध्यान में आया कि यहाँ निर्धन, असहाय, अशिक्षित हिन्दू बंधुओं का इलाज की आड़ में धर्मान्तरण किया जा रहा है । संघ का स्वयंसेवक होने के नाते मैं इसको स्वीकार नहीं कर सका । मैं मरीजों को समझाने लगा कि वे अपना धर्म परिवर्तन न करें । मेरा इलाज डॉ. आइजेक कर रहे थे । मैंने एक दिन डॉक्टर आइजेक से कहा–''आप लोग सेवा तो अच्छी करते हैं परन्तु इसकी आड़ में आप मतान्तरण करते हैं, यह अच्छी बात नहीं है । डॉक्टर आइजेक ने उत्तर दिया – मिस्टर कात्रे ! मैं भी धर्मान्तरण को अच्छा नहीं मानता । डॉक्टर के विचारों में मुझे संबल मिला । मैं मरीजों को लेकर मतान्तरण के विरूद्ध आवाज उठाने लगा । प्रबंधकों को पता चला तो उन्होंने मरीजों की दवा बंद कर दी । तब मुझे खुलकर सामने आना पड़ा । मतान्तरण की शिकायत सरकार को की गई, मैं कुछ लोगों को लेकर राज्यपाल हरिभाऊ पाटस्कर जी से मिला । पूरी कथा सुनने के बाद पाटस्करजी ने कहा–''उनकी शिकायत करने मात्र से कुछ नहीं होगा । वे सात समुद्र पार से आकर चिकित्सा कार्य कर रहे हैं, हमें भी इस प्रकार का कार्य खड़ा करना चाहिये ।

ईसाईयत का मूल सिद्धांत ही साम्राज्यवाद है । सेवा इसका हथियार है । मेरे

ऊपर भी उन्होंने इस हथियार का प्रयोग किया पर वे असफल रहे । मैंने उस चिकित्सालय को छोड़ दिया और अमरावती में जगदम्ब कुष्ठ आश्रम में भर्ती हो गया। मेरे मन को राज्यपाल जी के शब्द मथने लगे । अपने विचारों की स्थापना और साम्राज्य के लिये सात समुद्र पार से आकर मिश्नरियाँ सेवा कार्य कर रही हैं और हम अपने देश में अपने ही बंधु–भगिनियों को अछूत मानकर उन्हें अपने से दूर करते हैं। यह समस्या आगे चलकर राष्ट्र के लिये घातक हो सकती है।

मित्र ! मेरा शरीर जर्जर हो रहा था परन्तु मन कुछ करने के लिये तड़फ रहा था । ''इसी जन्म में इसी शरीर से कुछ करना चाहिये''। मन में बहुत सी बातें आती थीं परन्तु यह भी चिन्ता थी कि इस कार्य के लिये मेरा शरीर साधन बनने लायक है क्या ? यह प्रश्न मेरे मन को अस्वस्थ करने लगा। रोग तो ठीक हो गया परंतु शरीर का रूप ऐसा हो गया मानों सुन्दरमूर्ति में आग लग गई हो और उसे बुझाने का प्रयास पानी डालकर किया गया हो। हाथ पाँव की ऊँगलियाँ टेढ़ी हो गई थीं। शरीर थक रहा था। इन्हीं विचारों एवं चिन्तन की गहराई में डूबा रहता था। अचानक एक दिन हल्की सी आशा की किरण दिखाई दी। परमपूजनीय गुरूजी, माधव सदाशिव राव गोलवलकर जी की भव्य मूर्ति और उनके वचन स्मृति पटल पर उभरकर आए ''जीवन का पासा बेधड़क फेंक दो चाहे जैसा गिरे आत्म समर्पण की सर्वश्रेष्ठ भावना का भगवाध्वज आह्वान करता है''।

मुझे मार्ग मिल गया ''मूकं करोति वाचालं, पंगुम् लंघयते गिरिम यत्कृपात्वमहं वन्दे परमानन्द माधवम्''। अपनी शारीरिक पीड़ा भूलकर मैं माधव के प्रति समर्पित हो गया । उन्होंने ही मुझे मार्ग बताया और आज्ञा के साथ स्नेह एवं आशीर्वाद की प्रज्ञा भी प्रदान की। उनकी कृपा से ही यह अपंग व्यक्ति सागर–माथा चूमने के लिये चला है।

बोलते–बोलते कात्रे जी रूके। आँखें बंद करके कुछ सोचने लगे। कुछ देर शान्ति रही फिर शान्ति भंग करते हुए बोले – मित्र ! आज आपका आगमन उसी ''परमानन्द माधवम्'' की इच्छा प्रतीत होती है। चित्र की ओर इशारा करते हुए बोले – ''जीवन का पासा बेधड़क फेंक दो चाहे जैसा गिरे ..... मित्र ! तुम इस पर विचार करो।

कात्रे जी के शब्दों का चिंतन करते हुए बापट जी रायगढ़ के लिये निकल गए।

****

बाबाराव पुराणिक बिलासपुर विभाग प्रचारक थे । उनका प्रवास जशपुर क्षेत्र में होता रहता था । उन्होंने बापट जी से कहा – ''जरा व्यवस्थित रहना सीखो, मोरू भैया केतकर जी को देखो उनके जैसा रहना सीखो ।'' मोरू भैया केतकर संघ के प्रचारक थे । प्रचारक जैसा जीवन बापट जी के लिये सम्भव भी नहीं था । बापट जी का स्वरूप, स्वभाव एवं साहचर्य ऐसा था ही नहीं । एक दिन वे कोमड़ो पहाड़ उपर चले गए और शाम को वापस आए । शायद वे प्रचारक जीवन का चिंतन, मनन करने गए होंगे । बाबाराव जी के शब्दों का उन पर कोई असर नहीं हुआ । वे स्वयं बताते हैं – ''कल्याण आश्रम में शाखा लगती थी, मैं प्रार्थना के समय खड़ा हो जाता था । बाला साहब संघ स्थान पर खड़े रहते थे । मुझे पूरी प्रार्थना कभी याद नहीं हुई । कभी गीत पर चर्चा नहीं ली । कार्यपद्धति में परिपक्वता नहीं आई । मोरू भैया केतकर, जैसे बनने की कल्पना भी मैं नहीं कर सकता ।''

दामोदर गणेश बापट जी का स्वभाव विचित्र था । उनके स्वभाव पर आदतों का आवरण था जिसके कारण उनका मूल संवेदनशील स्वभाव लोगों को स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ता था । आश्रम के शिक्षक एवं व्यवस्था में लगे लोग शुद्ध भोजन वाले थे किसी प्रकार का व्यसन उनमें नहीं था । इस कारण बापट जी की आदतें विनोद एवं उपहास का विषय बन गई । उसी समय आस्था जागरण एवं धर्म जागरण का कार्य करने के लिये विवेकानन्द आश्रम रामकृष्ण मिशन से दीक्षित सन्यासी पूज्य स्वामी अमरानन्द का आगमन आश्रम में हुआ । वे अत्यंत अनुशासित सन्यासी थे । बापट जी की दिनचर्या, रहन–सहन देखकर उनके मन में बापट जी की अलग ही छबि निर्माण हो गई थी । बापट जी का रहन–सहन और उनके द्वारा सम्पादित कार्य में जमीन–आसमान का अंतर था । कार्य देखकर लोग उनकी प्रशंसा ही करते थे परन्तु बापट जी को देखकर विश्वास नहीं होता था कि यह कार्य इसी व्यक्ति ने किया है ।

श्री सदाशिव गोविन्द कात्रे जी ने श्री बाबाराव पुराणिक जी को दामोदर गणेश बापट जी के बारे में बताया था । बाबाराव जी के मन में बापट जी का चिंतन चल रहा था । कल्याण आश्रण से श्री बापट जी को वे बाहर लाना चाहते थे । बापट जी की आन्तरिक संवेदनशीलता एवं कार्यक्षमता के साथ–साथ कलकत्ता में किये गये कार्यों की जानकारी बाबाराव जी को थी । एक स्वस्थ व्यक्ति की आवश्यकता चांपा आश्रम को थी क्योंकि कात्रे जी का स्वास्थ्य गिरता जा रहा था । बाबाराव जी ने कल्याण आश्रम में बातचीत की और सहमति प्राप्त कर ली ।

बापट जी विद्यालय से अपने कमरे में आए ही थे कि गोपाल गुरुजी ने सूचना दी कि आपको बाबाराव जी याद कर रहे हैं ।

* अरे भाई क्या गड़बड़ हो गई ? क्यों पेशी हो रही है ? बड़बड़ाते हुए बापट जी बाबाराव जी से मिलने गए।

* अरे बापट क्या चल रहा है ? आज तेरा स्नान हुआ ही होगा ?

* आज नहाकर पढ़ाने गया था।

* तू चांपा गया था ? कात्रे जी से मिला था ?

* हाँ गया था, एक रात रुका भी था। कात्रे जी ने कुछ बताया भी।

* तो तेरा क्या कहना है ? तुझे उस संस्था में भेजा जाए तो कैसा रहेगा ?

* पर बाबाराव जी, मैं तो यहाँ काम कर रहा हूँ !

* मैं आश्रम में बात कर लूंगा, तू तैयार है न ?

* मुझे कोई आपत्ति नहीं है मैं तो घर छोड़कर आया हूँ परन्तु प्रचारक जैसा जीवन मेरे लिये कठिन होगा।

* वह सब मैं देख लूंगा, तुम अपनी तैयारी रखो।

बापट जी गंभीर मुद्रा में वापस आए। किसी से कोई बातचीत नहीं की। वे कात्रे जी का स्मरण करने लगे। उनसे हुई बातचीत का चिंतन करने लगे। संघ की योजना से एक चुनौती भरे काम को स्वीकार करने की मानसिक तैयारी चलने लगी। आगे–पीछे विचार करने का कोई समय नहीं था। रात में सोते समय उनके कानों में गूँज सुनाई दी ''जीवन का पासा बेधड़क फेंक दो चाहे जैसा गिरे,आत्म समर्पण की सर्वश्रेष्ठ भावना का भगवाध्वज आह्वान करता है।''

बाबाराव जी ने एक वर्ष पूर्व संकेत दिया था–''प्रचारक जैसा रहना सीखो।'' बापट जी की शैली में कोई बदलाव नहीं आ पाया। (बाबाराव जी के साथ राजनांदगाँव में सन् 2012 में हुई बातचीत के आधार पर)।

दामोदर गणेश बापट जी सन् 1974 में जशपुरनगर छोड़कर संघ की योजना से कात्रे जी के पास आ गए। जशपुर छोड़ने के पूर्व सब से मिले। सबसे भावुक क्षण थे जब वे रामबिलास और उसकी पत्नी से बिदा लेने उनके घर गए। जशपुर से रायगढ़

आने वाली बस में बैठने के पहले रामबिलास के घर भोजन था। रामबिलास और उसकी पत्नी ने बिदाई के समय अपना माथा बापट जी के चरणों में टिका दिया। यही कहा जा सकता है कि ''नैनन के जल से पग धोए।'' एक उच्च विद्या विभूषित वशिष्ठ गोत्रीय ब्राह्मण शहर छोड़ने के पूर्व भंगी महिला के हाथों बना भोजन करता है। उस महिला के हृदय की भावनाएं कैसी रही होंगी ? दो निश्च्छल, निर्मल, पवित्र हृदय में स्नेह, प्रेम एवं श्रद्धा का महासागर हिलोरें ले रहा है, उसको देखकर शब्द ब्रह्म भी अपनी चैतन्यता खो बैठा है। रामबिलास की पत्नी की आँखों से टपके दो अश्रु बिंदुओं के आगे सप्तसिंधु भी अपने को बौना समझ रहा है। बापट जी बताते हैं–जब जशपुर छोड़ने का प्रसंग याद आता है तो उस बहन के हाथों बने भोजन का स्वाद याद आता है। सिर्फ भात और सब्जी बनी थी, साथ में अचार था। मैं राम तो नहीं हूँ पर वह शबरी अवश्य थी, मैं कृष्ण तो नहीं पर वह विदुराणी अवश्य थी। उसका नाम था हिरोमनी। आज रामबिलास और हिरोमनी दोनों इस संसार में नहीं है। (30 जनवरी 2017 को बापट जी के साथ हुई बातचीत के आधार पर)

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ का काम व्यावसायिक चतुराई, स्मार्टनेस अथवा विद्यालय में बच्चों को पढ़ाने जैसा सहज–सरल नहीं था। दो वर्ष पूर्व सन् 1972 में ही वे इसका कटु अनुभव कर चुके थे। जशपुर से रायगढ़ और रायगढ़ से चांपा तक तो सरलता से आ गए थे। चांपा से सोंठी मात्र आठ किलोमीटर में ही उन्हें कुष्ठ और कुष्ठ रोगी की सामाजिक दुरावस्था का अनुभव हुआ। चांपा से बिर्रा जाने वाली बस में खाली सीट होने के बाद भी नहीं बैठाया गया। दो बसें खाली निकल गई। तीसरी बस में खड़े–खड़े आए। वह बस आश्रम से दो किलोमीटर बाद रुकी। वहाँ से पैदल आना पड़ा। कात्रे जी ने अत्यंत आत्मीयता से उनका स्वागत किया।

दूसरे दिन सुबह बापट जी आश्रम का निरीक्षण करने निकले। सबसे पहले वे वहाँ गए जहाँ ड्रेसिंग होती थी। देखा एक पुरुष जिसका नाक नहीं, भौंहे नहीं, हाथ–पाँव की ऊँगलिया नहीं, पैरों–हाथों से पीब बह रहा है, मक्खियाँ भिनभिना रही हैं। एक कुष्ठ रोगी के वीभत्स रुप का इतने करीब से पहली बार दर्शन कर रहे थे। बापट जी स्वयं बताते हैं–मरीज को देखकर लगा कि मैं कहाँ आ गया। मोतीलाल एक महिला की मरहम पट्टी कर रहा था, उसकी हालत तो और खराब थी। मैं आगे बढ़ गया। भोजन कक्ष में गया। वहाँ उसी प्रकार की महिलाएँ भोजन बना रही थी। यह सब देखकर अजीब सा लगा। मैं आश्रम परिसर में घूमता रहा। भोजन की घंटी बजी। सब लोग अपनी विचित्र चाल, रंग रुप लिये भोजन कक्ष की ओर बढ़ने लगे। ऐसा लग रहा था जैसे ये सब प्राणी किसी अन्य ग्रहों से अवतरित हुए हैं। मेरा आसन,

कोमल, मोतीलाल एवं एक छोटे टेबल कुर्सी पर बैठे कात्रे जी के साथ था। भोजन के समय मुझे रोगी याद आने लगे। ड्रेसिंग कक्ष का दृश्य मस्तिष्क में घूमने लगा। भोजन की थाली याद आ गई। भोजन मंत्र हो गया। मैं इधर–उधर देखने लगा। कात्रे जी प्रसन्न मुद्रा में भोजन कर रहे थे। कोमल एवं मोतीलाल जो प्रतिदिन ड्रेसिंग करते हैं, वे भी निश्चिंत होकर भोजन कर रहे थे। मैंने किसी प्रकार साहस जुटाकर दो–चार कौर मुँह में डाला। यह बात शायद कात्रे जी के ध्यान में आ गई।

वनवासी कल्याण आश्रम में, आश्रम की दिनचर्या के साथ मैं सम्बद्ध था। इसके लिये मुझे वर्ष लग गए थे, वहाँ तो सभी स्वस्थ थे, बच्चों की उछलती–कूदती दुनिया थी। यहाँ तो जीवन से हताश–निराश, अभिषप्त सा जीवन था। कुष्ठ आश्रम में प्रतिदिन सुबह उठकर प्रातः स्मरण करते हैं। दो दिन मैं सुबह प्रार्थना में नहीं गया। मुझे किसी ने नहीं कहा बल्कि मोतीलाल सुबह मेरी चाय की चिंता अवश्य करता था। मेरे मन में उहापोह, असमंजस की स्थिति थी। न स्वीकार्यता और न ही अस्वीकार्यता। मैं अलग ही दुनिया में आ गया था। कोई मुस्कुराता, हँसता दिखाई नहीं देता था। हँसते भी होंगे तो मुझे उनका चेहरा रोता हुआ भासित होता था। ऐसा भी हो सकता है कि उस समय मेरा मन अन्दर से रुदन कर रहा था इसलिये भी मुझे हँसता हुआ चेहरा रोता हुआ दिखाई देता था। ''जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि'' हो सकता है। कहाँ कल्याण आश्रम के हँसते–खिलखिलाते, उछल–कूद करते हुए बच्चे, हास्य विनोद का वातावरण, पूज्यनीय बाला साहब देशपांडे जी और मोरु भैय्या केतकर जी के आभामण्डल से वलयाच्छादित वातावरण और कहाँ कुरुप, करुणक्रन्दन, दीन दुःखी कष्ट से पीड़ित अपने परिवार, सगे–संबंधियों द्वारा परित्यक्त प्रताड़ित हताश–निराश लोगों का समूह। मैं अन्तर्मन की गहराई में डूबा हुआ था। मेरे कानों में आवाज सुनाई दी–''कात्रे जी याद कर रहे हैं।'' मोतीलाल मुझे संदेश दे रहा था।

मैं भारी मन से गया। कात्रे जी अपनी खटिया में लेटे थे। मुझे देखते ही कहा–''आओ बैठो ! मैं सामने रखी कुर्सी पर बैठ गया। कात्रे जी के चेहरे पर सदैव मृदुल हास्य खेलते रहता था। खारे पानी के समुद्र के बीच मीठे जल की निर्झरणी।'' इधर ऊधर की बातों के बीच परमपूज्यनीय गुरुजी का एक प्रसंग सुनाया–''गुरुजी प्रवास पर जा रहे थे। एक गरीब व्यक्ति ने उनकी कार रोकी और उनसे अपनी झोपड़ी में चाय पीकर जाने का आग्रह कर रहा था। गुरुजी ने मान लिया। चाय बिना दूध की थी। चाय छानने के लिये कुछ भी नहीं था, थोड़ी देर पहले जिस गमछे से बच्चे की नाक साफ की थी उसी से चाय छानकर गुरुजी को और साथ गए लोगों को पिला दिया। बाहर आकर कुछ लोगों ने उल्टी कर दी। परमपूज्यनीय गुरुजी से लोगों ने पूछा

कि गुरुजी आपने देखा कि उसने चाय किससे छानी थी ? गुरुजी ने कहा–मैंने नाक साफ करते भी देखा और चाय छानते भी देखा परंतु मैंने उस व्यक्ति का प्रेमामृत पीया और आप लोगों ने चाय पी।'' बापट तुम चिंता न करो तुम्हारी व्यवस्था यहाँ से कुछ दूरी पर कर दी जाएगी। मैं सिर झुकाए बाहर निकल गया। मैंने परमपूज्यनीय गुरुजी को कभी सुना नहीं। देखा भी होगा तो याद नहीं। 5 जून 1973 को वे स्वर्गारोहण कर गए।

आश्रम में अनेक लोग थे परन्तु आश्रम के बाहर किसी व्यक्ति से मेरा प्रथम परिचय आया तो वे हैं श्री गोदावरीश शर्मा। वे प्रतिदिन चांपा से आते जाते थे और मरीजों को देखकर दवाई देकर चले जाते थे। कुछ दिनों के बाद आश्रम के सहयोगियों ने मेरी व्यवस्था छः–सात किमी. दूर बाहर कर दी। बापट जी लिखते हैं– ''संघ के आदेश पर मैं सन् 1974 में कात्रे जी का स्थाई सहयोगी बनकर संस्था कार्य में दाखिल हुआ तब संस्था के हितचिंतकों ने संस्था से छः–सात किलोमीटर दूरी पर स्थित चांपा शहर में मेरे निवास का प्रबंध किया था। उन्हें भी भय था कुष्ठ रोग संसर्ग का। कुछ दिनों तक तो सायकल से आना–जाना करता रहा। प्रतिदिन आना–जाना मुझे पसन्द नहीं था, अतः कुष्ठ पीड़ितों के समान आश्रम में ही रहने के लिये कात्रे जी से अनुमति माँगी। पहले तो मेरे कहने पर कात्रे जी को यकीन नहीं हुआ फिर भी आप काफी खुश थे। मेरी इस कृति द्वारा कुष्ठ रोग के संबंध में अपप्रचार को दूर हटाने में काफी मदद मिलेगी। मैं रहता था कुष्ठ रोगियों में, इतना ही नहीं भोजन भी कुष्ठ रोगियों के साथ करने से लोग मुझे भी कुष्ठ रोगी समझते थे। मेरे साथ व्यवहार भी उसी प्रकार किया करते थे।''

कल्याण आश्रम में तो सभी स्वस्थ लोग थे। वहाँ पर स्वस्थ, सशक्त, समर्थ लोगों के माध्यम से स्वस्थ भारत की अवधारणा काम कर रही थी। मानव के प्राकृतिक विकास को गति एवं दिशा देने का काम था। इसलिये भी मैंने शायद जिम्मेदारी और गंभीरता की ओर ध्यान नहीं दिया। भारतीय कुष्ठ निवारक संघ में तो ऐसे लोगों का समूह था जिसमें जीने की इच्छा–शक्ति ही लगभग समाप्त हो गई थी। यह समूह कोई भारत के भविष्य निर्माण के पथ पर दौड़ने वाला नहीं था। मेरा निवास जब चांपा किया गया तब मैंने अनुभव किया कि एक अपंग व्यक्ति प्रतिदिन नियमित, अनुशासनबद्ध दिनचर्या प्रारंभ करता है। प्रातः भजन के समय सबसे पहले आकर बैठ जाता है, दिनभर संस्था का कार्य करता है। मैं स्वस्थ हूँ इसलिये उनसे अलग रहता हूँ? मैं स्वस्थ हूँ इसलिये भोजन अलग करता हूँ? मैं श्रेष्ठ हूँ इसलिये मैं सात

किलोमीटर सायकल चलाकर आता हूँ ? मुझे प्रार्थना में, प्रातः स्मरण में जाने की आवश्यकता क्या है ? मैं तो स्वस्थ हूँ ? व्यक्ति और समाज के स्वस्थ होने की क्या यही पहचान है ? जब कुष्ठ रोगी सब मिलकर एक संस्था का संचालन कर सकते हैं तो फिर मेरा उनसे अलग रहकर उनको हीन, अपने से छोटा समझकर आचरण करना उचित होगा क्या ? कात्रे जी जैसे अस्वस्थ व्यक्ति में कितना आत्मविश्वास है, कितनी ध्येयनिष्ठा, समर्पण एवं राष्ट्रभक्ति का भाव है। इस दृष्टि से तो मैं शारीरिक रुप से स्वस्थ हूँ, मुझे तो कोई शारीरिक पीड़ा नहीं है। मैं यह क्यों नहीं कर सकता ? पर मैं तो अपने अन्दर रोगियों की सेवा का अहंकारिक भाव का अलंकरण धारण करता हूँ। अब मुझे आश्रम की दिनचर्या में, अनुशासन में ढलना होगा, अपने को आश्रम के कार्य में समर्पित करना होगा।

परमपूज्यनीय गुरुजी के मन में तो चाय पीते समय कोई घृणा का भाव नहीं आया। मैंने भंगी महिला हिरोमनी को याद किया जिसको शौचालय साफ करते देखा था। उसके घर में मैंने उसी के हाथों से बना भोजन किया था। उसका स्नेह, उसकी आत्मीयता वही तो मेरी शक्ति है। जब हिरोमनी में मुझे मेरी बहन दिखाई देती है तो यहाँ कुष्ठ पीड़ितों में उस प्रेम एवं वात्सल्य का साक्षात्कार क्यों नहीं कर सकता ? जो होगा वह देखेंगे, तब चुनौतियों का सामना, समस्याओं का सामना वहीं रहकर करेंगे। अपना निश्चय कात्रे जी को बताया और शीघ्र ही मैं आश्रम में चला गया।

बापट जी अपने हरफन मौला, अवलिया, अवधूत आदतों पर नियंत्रण का प्रयास करने लगे। प्रातः उठकर सबके साथ प्रार्थना में सम्मिलित होना प्रारंभ किया। खपरैल का पुराना मकान उसी में एक कोने में उन्होंने अपना बिस्तर लगा लिया। धीरे–धीरे सब कार्यकर्ताओं एवं मरीजों से परिचय प्रारंभ किया। मोतीलाल और कोमल के साथ बापट जी भी मरीजों की मरहम पट्टी करने लगे। आश्रम की सफाई में भी अपना योगदान देने लगे। रोगियों के प्रति आत्मीयता का भाव अन्तःकरण में अनुभव करना और उस भाव से सेवा करना, इसका प्रयास करना आवश्यक है।

बापट जी जिस समय भारतीय कुष्ठ निवारक संघ में आए उस समय आश्रम किस दिशा में जाएगा ? इसे कहाँ जाना है ? लगभग तय हो गया था। कात्रे जी ने एक अधोसंरचना तैयार कर ली थी। प्राथमिक उपचार केन्द्र प्रारंभ हो गया था जो डॉ. गोदावरीश शर्मा जी के देखरेख में चल रहा था जिसमें मोतीलाल एवं कोमल ड्रेसिंग का काम करते थे। एक पढ़े–लिखे मरीज महाराष्ट्र से आए थे उनका नाम था अविनाश साठे। ठीक होने पर वे कात्रे जी का कुछ सहयोग कर पाएंगे ऐसी अपेक्षा थी। बुद्धि से तेज अस्थिर चित्त होने के कारण कोई लाभ नहीं था। कुछ दिनों बाद वे

बाबा साहेब आमटे जी द्वारा संचालित आश्रम ''आनन्दवन वरोड़ा (महाराष्ट्र) चले गए। बापट जी को ऑफिस का काम दिया गया। जहाँ–जहाँ कात्रे जी के संबंध थे वहाँ–वहाँ वे पत्र व्यवहार करने लगे। शासकीय कार्य में भी सहयोग करने लगे थे। शारीरिक रुप से स्वस्थ होने के कारण चांपा नगर में भी सम्पर्क का काम करते थे। नगर के प्रतिष्ठित लोगों से परिचय, बातचीत आश्रम की गतिविधियों पर चर्चा, धन संग्रह की योजना बनाने में भी सुविधा होने लगी। जैसे–जैसे सम्पर्क बढ़ा तो कात्रे जी के संघर्ष एवं परिश्रम की जानकारी भी होती गई। कात्रे जी की संघर्ष गाथा सुनकर वे रोमांचित हो गए।

स्व. सदाशिव गोविन्द कात्रे जी परमपूज्यनीय श्री गुरुजी की प्रेरणा से चांपा आए। वे जीवनलाल साव जी की एक छोटी सी कुटिया में रहते थे। प्रतिदिन हसदेव नदी में निवृत्त होकर सम्पर्क का काम करते थे। कुष्ठ के क्षेत्र में आर्थिक सुख सुविधा सम्पन्न मिश्नरीज का चांपा में अच्छा काम था। कात्रे जी के पास कुछ भी नहीं था यहाँ तक की शरीर भी अपूर्ण था। वे दिन भर चांपा नगर में घूमते थे। उनको रेल्वे स्टेशन, बस अड्डे पर कुष्ठ रोगी भीख मांगते दिखाई देते थे। कात्रे जी तो दिन भर समाज में सम्पर्क का प्रयास करते और कुष्ठ सेवा के महत्व को समझाते थे। कोई भी उनको बैठने के लिये कहने वाला नहीं था, पानी के लिये पूछने वाला तो बहुत दूर की बात थी। कात्रे जी घोघरानाला में छोटी सी झोपड़ी बनाकर रहने लगे। जैसा बन पड़ता वैसे वे कुष्ठरोगियों की सेवा करते थे। कई दिन चना खाकर तो कई दिन स्टेशन पर रात बिताते थे। कुष्ठ रोगी कात्रे जी का निश्च्छल प्रेम, आत्मीयता देखकर अभिभूत थे। जिन्हें पत्नी ने, बाल बच्चों ने अछूत समझकर त्याग दिया था उन्हें प्रेम एवं आत्मीयता के दो शब्द सुनने मिले थे। एक महिला थी धनमती वह बिलईगढ़ के पास की रहने वाली थी। उसके दोनों पैर गल गए थे। ऊँगलियाँ तो थी ही नहीं। वह छोटी सी झोपड़ी में मक्खियों एवं कीड़ों के बीच पड़ी थी। वह चल नहीं सकती थी। भीख मांगने भी जा नहीं सकती थी। कात्रे जी उस झोपड़ी में में गए, जैसा सम्भव हुआ महिला के पैरों की सफाई करके मरहम पट्टी की। उसने सुना था कोई व्यक्ति आया है और मरहम पट्टी करता है। वह आज साक्षात उस देवदूत को देख रही थी। उसकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। बस्ती वालों को पता चला कि पैरों को धोकर पट्टी बाँधने वाला व्यक्ति ब्राह्मण है तो पूरी बस्ती ही कात्रे जी के प्रति नतमस्तक हो गई। कात्रे जी का निश्च्छल प्रेम भी धनमती को नहीं बचा सका।

कात्रे जी चांपा नगर में आते थे तो लोग ताना मारते थे कोढ़ी भी स्मार्ट बने की कोशिश कर रहा है। कात्रे जी को हर घर में पानी नसीब नहीं होता था। सार्वजनिक

स्थानों पर कुष्ठ रोगियों को पानी के लिये झिड़की सुननी पड़ती थी। कात्रे जी के पैरों में घाव था। पैदल घूमने में उन्हें कठिनाई होती थी उनके लिये एक पुरानी सायकल उपलब्ध करा दी गई। उन्हें सायकल चलाना नहीं आता था। बुढ़ापे में वे सायकल चलाना सीखे। चबूतरे का सहारा लेकर वे सायकल में चढ़ते थे। कन्धे पर एक झोला लटकाए वे गाँव–गाँव संपर्क करते थे। अफरीद, कमरीद, पचोरी, सोंठी, मुड़पार, लखुर्री, हथनेवरा आदि ग्रामों में कात्रे जी संपर्क करते थे। लखुर्री वाले साधराम साव आत्मज माखन साव ने कात्रेजी के परिश्रम को देखकर, उनसे प्रभावित होकर अपनी पुरानी झोपड़ी इस कार्य के लिये दे दी। वहीं एक स्थाई निवास बनाया गया। यहीं से भारतीय कुष्ठ निवारक संघ की नींव पड़ी। कात्रेजी का शरीर थक रहा था। ऊँगलियाँ घायल थी। पाँवों में जखम, ऊँगलियाँ टेढ़ी। ठंड हो, बरसात हो या गर्मी, बारहों मास पाँव में मोजे। बुढ़ापा और रूग्णता शरीर को प्रभावित कर रहे थे। भोजन के अभाव में कई बार बस स्टेण्ड में पेड़ के नीचे दिन बिताना पड़ता था। रायपुर बिलासपुर रायगढ़ जिले के गाँवों में एक झोली लटकाकर सैकड़ों किलोमीटर सायकल से पहुँचते तो लोग नाक भौंह सिकोड़कर उपहास भरे स्वर में कहते–भीख माँगने के लिये कोढ़ी सायकल चलाकर आता है। एक दिन कात्रेजी एक सज्जन के बुलावे पर लगभग पाँच घन्टे सायकल चलाकर रायपुर जिले के भटगाँव ग्राम पहुँचे। दोपहर उस सज्जन के विश्राम का समय था। भूखे प्यासे कात्रेजी प्रतीक्षा करते रहे। दोपहर बाद वे सज्जन मिले उन्होंने दो टूक जवाब दिया–''अगले सप्ताह आइये।'' वहाँ कोई परिचित व्यक्ति नहीं था। कात्रेजी स्वयं कुष्ठ रोगी थे इसलिये उनको पानी के लिये भी कोई पूछता नहीं था। रात्रि में कहीं रूक भी नहीं सकते थे क्योंकि आश्रम की उनको चिन्ता रहती थी। वे रात्रि में ही थके हारे वापस आ गए। कुष्ठ रोगियों को भोजन बनाने में अत्यन्त कठिनाई होती थी। यह कार्य जोखिम भरा था। गरम बर्तन चूल्हे पर से उतारना असंभव होता था। संवेदनहीन अंग कई बार जल जाते थे, दुर्गन्ध आने पर पता लगता था। मरीजों के लिये भोजन बनाने का कार्य कात्रेजी को ही करना पड़ता था। कात्रेजी के काम को समर्थन कम ही था। सहयोग तो दूर उल्टा लोग उन पर संदेह करते थे। ऐसी भी टिप्पणी सुनने को मिलती थी कि उत्तरप्रदेश से आकर एक कोढ़ी घूम–घूम कर कुष्ठ आश्रम के नाम पर पैसा मांग रहा है इसका क्या भरोसा ?

चांपा के पास हसदेव नहर का काम चल रहा था। कात्रेजी बेनीराम को सायकल में बिठाकर सिवनी में एक अधिकारी से मिलने गए। वे दमोह के रहने वाले थे। दोनों को देखकर उनका दिमाग खराब हुआ, पानी के लिये तो पूछा नहीं दोनों को भिखमंगे की तरह खड़ा रखा। अभद्र माँ–बहन की गाली देते हुए कहा – भीख माँगने

का नया तरीका निकाल लिया है अब रसीद बुक छपवाकर अधिकार से पैसे माँगते हैं। कात्रे जी अपमान का घूँट पीकर रह गए वे कुछ बोले नहीं वापस आ गए।

कात्रे जी की संघर्ष गाथा सुनकर दामोदर जी सोचने लगे। कात्रे जी को सेवा के बदले अपमान ही मिला। ''यह कैसा समाज है ? मल्हार की धरती से खुदाई में प्राप्त बिना नाक–कान, हाथ–पैर की खण्डित पाषाण मूर्तियों को देखकर आनंद एवं गौरव का अनुभव करते हैं और प्रत्यक्ष सजीव चलते–फिरते–बोलते अपने ही माता–पिता, सगे रक्त संबंधियों को कोढ़ी समझकर घृणा करने लगता है।''

बापट जी सोचने लगे मुझे इन्हीं चुनौतियों के बीच कार्य करना होगा। कात्रे जी की जो कठिनाईयाँ थीं वह एकदम भिन्न थीं। वे स्वयं एक कुष्ठ रोगी थे और शायद भारतीय कुष्ठ निवारक संघ विश्व की एकमात्र संस्था है जिसे स्वयं एक कुष्ठ रोगी ने अपनी आयु के तिरपनवें पतझड़ में प्रारंभ किया, किसी अन्य की वेदना से द्रवित होकर नहीं अपितु स्वयं अपमान, उपेक्षा, उपहास, तिरस्कार का विष पीकर, रोग की सर्वांगी पीड़ा का अनुभव कर प्रारंभ किया है।

बापट जी ने अनुभव किया कि कुष्ठरोगियों में जीने की इच्छा ही समाप्त हो गई है। रोगी कहते हैं ''हम मर नहीं रहे इसलिये जिन्दा हैं। इस प्रकार जिनकी मानसिकता बन गई हो, उनमें जीने की इच्छा शक्ति जागृत करना, स्वावलम्बन एवं स्वाभिमान का भाव जागृत करना कितना कठिन काम है। यह कार्य कात्रे जी ने किया। दामोदर गणेश बापट जी को कात्रे जी के साथ बातचीत में आश्रम का ध्येय तो समझ में आ रहा था। जिस समय संस्था प्रारंभ हुई उस समय कात्रे जी इसकी दिशा स्पष्ट कर चुके थे। वे कहते हैं–''इस प्रकार के आश्रम का उद्देश्य रोगियों को इकट्ठा करके नई कुष्ठ बस्ती अथवा निरोगी कुष्ठ बस्ती का निर्माण करना नहीं है। यह आश्रम रोग को ठीक करने एवं रोगी के आत्मबल को जागृत करने की पाठशाला है। रोग ठीक होने के बाद रोगी पुनः अपने बाल बच्चों के बीच परिवार में रहकर समाज की सेवा कर सके और सुख से जीवन बिता सके इसके लिये यह आश्रम है। कुष्ठ रोग यह राष्ट्र के लिये कलंक है। आओ ! हम सब मिलकर अपने राष्ट्र को कुष्ठ के कलंक से मुक्त करें। स्वतंत्र भारत में हम लोग कुष्ठ रोगियों की भिक्षा वृत्ति समाप्त नहीं कर सके इसका प्रमुख कारण यही है कि हम लोग अपने कर्तव्यों के प्रति जागृत नहीं है। हम लोग अधिकारों के प्रति तो प्रायः युद्ध करते हैं परन्तु साथ ही हम प्रथमतः इस कर्तव्य के प्रति जागृत हों और उसके बाद अधिकार की अपेक्षा करें तभी अपना देश उन्नति के शिखर पर पहुँच सकेगा। आशा है हमारे देशवासी इस प्रार्थना की ओर ध्यान देंगे।''

बापट जी के आगमन से समाज में एक उत्साहजनक संदेश गया। एक

पूर्णतः स्वस्थ व्यक्ति आश्रम में रहकर, कुष्ठ पीड़ितों के हाथ का बना भोजन करता है । आश्रम का कार्य करने के लिये एक योग्य व्यक्ति आया है यह समाचार सर्वदूर पहुँचने लगा । समाज जागरण का कार्य तीव्र गति से होना आवश्यक है । परन्तु यह बात तो आसानी से होनी नहीं थी । बापट जी को पहले उस वातावरण में अपने को समाहित करना था । वे आश्रम का काम धीरे–धीरे समझने का प्रयास करने लगे । उनके मन में भी बाकी लोगों की तरह रोगियों से दूर रहने का भाव था । उन्हें सबसे पहले तो अपने आप से ही युद्ध करना पड़ा । वे बताते हैं– ''धीरे–धीरे तन तो मरीजों के नजदीक आ गया परन्तु मन में थोड़ी दूरी कई दिनों तक बनी रही । इसको दूर करने के लिये मैं कात्रे जी के समीप ही रहता था वे भी रोगी ही थे । उनके प्रति श्रद्धा के कारण मैं उनके पास रह सकता था । परमपूज्यनीय गुरुजी के बारे में अनेक बातें उनसे सुनने को मिली । सुनते–सुनते यह बात ध्यान में आई कि श्री गुरुजी अहर्निश उनके पास ही रहते हैं । कात्रे जी उनको अपना आराध्य मानते हैं । कात्रे जी की सेवा करने में मुझे आनंद आने लगा । धीरे–धीरे मेरा मन भी उसमें रम गया । यह कह सकता हूँ कि मेरे मन की कुंठा, दुविधा एवं भ्रम को कात्रे जी ने ही दूर किया । पहले तो मेरे मन में ''सेवा करता हूँ'' यह भाव आया, फिर ''सेवा करना मेरा कर्तव्य है'' यह भाव जगा । साथ ही मन के कोने में यह इच्छा भी छुपी थी कि ''लोग कहें अच्छा काम कर रहा है ।'' यह शब्द सुनने मिल जाए उस दिन बड़ा उत्साह मन में रहता था । धीरे–धीरे रोगी की अवस्था, उनकी पीड़ा देखकर हृदय द्रवित होने लगा, सम्पूर्ण समर्पण, निःस्वार्थ बुद्धि से, अपनेपन की भावना से सेवा करना अपने आप ही प्रारंभ हो गया । ये सब अपने हैं अब यह जीवन अपने लिये नहीं अपनों के लिये है । थोड़ा साहित्य मैंने स्वामी विवेकानन्द जी का पढ़ा था, ''दरिद्र नारायण'' यही ईश्वर है । ईश्वरोपासना समझकर कार्य करना प्रारंभ किया, इसी मार्ग से जीवन में पूर्णांक आएगा । अतः यात्रा प्रारंभ हुई पूर्णांक की ओर .....

बापट जी आश्रम के शुभचिंतकों से सम्पर्क करने का प्रयास करने लगे । कात्रे जी के पत्र व्यवहार का दायित्व बापट जी पर आ गया । समिति में कोई सक्रिय लोग नहीं थे परन्तु संस्था के प्रति उनके मन में निष्ठा थी । कात्रे जी कोई निर्णय लेते थे तो उसका सर्वानुमति से समर्थन ही होता था । बापट जी अपने व्यवहार से समिति के सदस्यों का मन जीतने का प्रयास करने लगे । आश्रम में विभिन्न प्रकल्पों, आयामों को विस्तार देने की योजना बनने लगी । इस दिशा में प्रयास बापट जी को ही करना था । सभी कामों की ओर कात्रे जी की सूक्ष्म दृष्टि रहती थी । सभी प्रकार के निर्णयों की जानकारी बापट जी कात्रे जी को देते थे । धन संग्रह एक बड़ा काम था । कात्रे जी के

सम्पर्कों से कुछ धनराशि आ जाती थी । मुट्ठी चावल योजना भी चल रही थी । आस–पास ग्राम की माताएं बहनें भोजन बनाने के पूर्व एक मुट्ठी चावल आश्रम के नाम से निकालकर रखती थी । यह योजना कात्रे जी ने ही प्रारंभ की थी, इससे कुछ अन्न प्राप्त हो जाता था । बापट जी को आश्रम में आए एक वर्ष ही हुआ था । कार्ययोजना क्रियान्वित करने के लिये प्रवास जरुरी था । अभी संपर्क आरंभ ही हुआ था कि 26 जून सन् 1975 को देश में आपातकाल लग गया । सभी प्रमुख सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यकर्ता, जेल में चले गए । जो कुछ अपने को सामाजिक कार्यकर्ता बताते थे वे सब भाग खड़े हुए । संस्था के प्रमुख पदाधिकारी जेल चले गए । कात्रे जी एवं बापट जी ने अपना धैर्य नहीं खोया । बापट जी अपना समय निकालकर उन परिवारों से मिलते रहे जिनके सदस्य जेलों में बन्द थे । उनका मनोबल बनाए रखने में बापट जी की बहुत बड़ी भूमिका थी ।

आश्रम में निस्तार के लिये एक ही कुँआ था । गर्मी में बड़ी परेशानी होती थी । कुछ जानवर थे उनको पानी की आवश्यकता थी । मरीजों की भी संख्या बढ़ रही थी । भूमि की भी आवश्यकता अनुभव की जा रही थी । संस्था के प्रमुख सदस्य पंढरीराव कृदत्त जी, धमतरी (छत्तीसगढ़) ने परमपूजनीय श्री गुरूजी को गुरूपूर्णिमा के अवसर पर कुछ भूमि दान की थी, वह महानदी जलाशय परियोजना में डुबान में चली गई । उसका मुआवजा मिला । उससे सोंठी में कुछ जमीन खरीदी गई । एक तालाब बनाया गया उसका नाम रखा गया ''माधव सागर''। उसके पानी से गौशाला और खेती का काम होता गया ।

कुष्ठ रोग एक ऐसा रोग है जो किसी भी आयु में किसी भी व्यक्ति को हो सकता है । जवान महिलाएँ–पुरूष कुष्ठ रोगी हो जाते हैं । उनके छोटे–छोटे बच्चे उनको स्कूल में प्रवेश मिलना बड़ा ही कठिन कार्य था । शासन के दबाव में प्रवेश मिल भी जाता था तो भी स्कूल में बच्चों द्वारा अछूत समझा जाता था । खेल–खेल में बच्चे भूल भी जाते थे परन्तु शिक्षकों को याद रहता था । जब घर–परिवार के लोग ही उनको अछूत मानते थे तो अन्य लोगों को कुछ कहना मुश्किल ही था । मरीजों की बढ़ती हुई संख्या, बच्चों की संख्या, उनके आवास की व्यवस्था, बच्चों की निवास व्यवस्था आदि समस्यायें बढ़ते ही जा रही थीं । समिति द्वारा सभी प्रकार के कार्यों का अनुमोदन किया जा चुका था । कात्रे जी ने अपने प्रयासों से अन्नपूर्णा भवन एवं कार्यालय भवन का निर्माण किया था । सबसे अनिवार्य आवश्यकता थी ''महिला निवास'' की ।

बापट जी ने जो रचनात्मक योजनाएं बनाई थीं वह आपातकाल के कारण

ध्वस्त हो गई। कहीं से भी कोई सहयोग मिलने की आशा नहीं थी। आश्रम पूरी तरह से आर्थिक अभाव की स्थिति में आ गया था। सर्वत्र अंधकार का वातावरण छाया था। कोई किसी से खुलकर बातचीत भी करने को तैयार नहीं था। आर्थिक तंगी के कारण अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा था। भोजन में धीरे–धीरे सब्जी की मात्रा कम होते–होते समाप्त ही हो गई। आश्रमवासियों की दाल पर भी आपातकाल का प्रभाव दिखाई देने लगा। दाल में पानी की मात्रा बढ़ानी पड़ रही था। एक बात अच्छी कही जा सकती है कि लगभग सभी मरीज छत्तीसगढ़ के मूल निवासी थे, उनको बासी–पेज खाने की आदत थी। वे बिना दाल एवं सब्जी के काम चला लेते थे। किसी प्रकार दैनन्दिन कार्य चल रहा था। श्री बाबाराव पुराणिक (विभाग प्रचारक) छुपकर कभी–कभी मिला करते थे। उनसे जो जानकारी मिलती थी वह बड़ी भयावह थी। कई लोगों की मौत का समाचार आता था। एक समाचार सुनकर बापट जी थोड़ा विचलित हुए। मोरु भैय्या गद्रे, जो जनसंघ के संगठन मंत्री थे, उनकी मृत्यु का समाचार आया। आपातकाल में भूमिगत रहकर वे काम कर रहे थे। श्री दिनकर राव भाकरे जी से जगदलपुर में मिलकर वे धमतरी आए। वहीं उनकी तबियत खराब हो गई। उनके पीछे पुलिस लगी थी। बीमारी की हालत में ही वे रायपुर आए। किसी तरह वे मोहन कुसरे जी की सत्तीपारा स्थित सायकल दुकान पर आए और चक्कर खाकर गिर पड़े। छद्म नाम से उन्हें दाऊ कल्याण सिंह चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। शुगर बढ़ जाने के कारण ही दूसरे दिन उनकी मृत्यु हो गई। श्री मोहन कुसरे और श्री अशोक पिंगले (बिलासपुर) मृत शरीर को गोद में लेकर सायकल रिक्शे से श्मशान तक ले गए और अंतिम संस्कार किया। गद्रे जी के अनुयायी, शुभचिंतक जेल में थे। शेष भूमिगत थे। वे यदि शव यात्रा में शामिल होते तो पकड़े जाने की सम्भावना थी। ऐसे अनेक प्रसंग आपातकाल में सुनने को मिलते थे। आपातकाल के दौरान हजारों परिवार नष्ट हो गए। विश्व के इतिहास में ऐसा तानाशाही शासन देखने–सुनने को नहीं मिलता है। भूमिगत कार्यकर्ता समाज का, परिवार का, देश का मनोबल बनाए रखने का काम कर रहे थे। उनका अदम्य साहस, प्रचंड आत्मविश्वास ही समाज का सम्बल था। सन् 1977 मार्च में आपातकाल हटा। देश के सारे नेता, समाजसेवी जेल से छूटे। वातावरण में परिवर्तन आया। सारा राष्ट्र आतंक से मुक्त हुआ। भारत की जनता ने मुक्ति की साँस ली। (''आपातकालीन संघर्षगाथा'' लेखक माणिकचन्द्र बाजपेयी अवश्य पढ़ें)। चुनाव की घोषणा हुई, इंदिरा गांधी चुनाव हार गई। जनता पार्टी की सरकार बनी। लोकतंत्र की पुनर्स्थापना हुई।

कात्रे जी का शरीर शिथिल होते जा रहा था। बापट जी का समर्पण,

परिश्रम, ध्येयनिष्ठा देखकर कात्रे जी सन्तुष्ट एवं आनंदित थे। उनके परिश्रम, स्नेह आत्मीयता से लोगों में भी सपर्पण एवं सेवा की भावना विकसित होने लगी। परन्तु आश्रम सामाजिक सहयोग के बिना अपने मूल उद्देश्यों की ओर बढ़ नहीं पा रहा था। कुष्ठ रोग अनुवांशिक न होते हुए भी भय, भ्रांतियाँ, घृणा यथावत हैं। एक अनुभव तो बड़ा ही कारुणिक है। एक छोटे से बालक को कुष्ठ रोग हो गया। उसके माता–पिता ने उसे एक कमरे में बंद कर दिया। लगभग दो माह तक उस बच्चे का भोजन, मलमूत्र त्याग बन्द–कमरे में ही होता रहा। कुछ दिनों बाद उसके माता–पिता ने उसे बोरे में बांधा और आश्रम के गेट के पास छोड़कर चले गए। लड़का बेहोश बोरे में बंधा था। सुबह बापट जी बाहर निकले तो देखा कि एक बोरा पड़ा है उसे खोलकर देखा तो कुष्ठ रोग से पीड़ित बच्चा बेहोश बोरे में बंधा है। बापट जी ने उसे चिकित्सा केन्द्र में लाए। उसका इलाज प्रारंभ हुआ। समय पर भोजन पानी, इलाज से वह ठीक हो गया और एक प्रमुख कार्यकर्ता के नाते वह आश्रम में कार्य करने लगा।

श्री सदाशिव गोविन्द कात्रे जी ''परमानन्द माधवम्'' को ही तारक मंत्र मानकर जप करते थे। उन्होंने अपने आप को आश्रम के सभी कामों से मुक्त कर लिया था। कात्रे जी की शारीरिक पीड़ा बढ़ती जा रही थी। उधर ग्वालियर में ग्रह–शांति यज्ञ पूर्ण हुआ और इधर कात्रे जी ने ''परमानन्द माधवम्'' का उच्चारण करते हुए दिनांक 16 मई 1977 को (वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्दशी, सोमवार, विक्रम संवत् 2034) अपने जीवन यज्ञ की पूर्णाहुति कर दी। आश्रम में गिने–चुने लोग थे। बापट जी भी आश्रम में नहीं थे। आश्रम वासियों ने आश्रम परिसर में ही उनका अंतिम संस्कार कर दिया। पंडित शंकर पाठक के मार्गदर्शन में श्री वसन्तराव कुलकर्णी जी ने उन्हें मुखाग्नि दी।

एक खंडित सा दिखने वाला दैदीप्यमान नक्षत्र अनंत में विलीन हो गया। ईश्वर भक्ति की धुन जिसके मन में, मस्तिष्क में और हृदय में चढ़ती है उसको बाहर का कोई और विचार नहीं रहता कि वे क्या खाते हैं ? क्या पहनते हैं ? कैसे रहते हैं ? कहाँ सोते हैं ? वह अपनी मस्ती और धुन में चलता रहता है। इसी प्रकार कार्य की मस्ती कात्रे जी के जीवन में थी। उन्होंने अपने आप को भारतीय संस्कृति के अनुरुप न केवल ढाला अपितु अपंग, अस्पृश्य, उपेक्षित कुष्ठरोगियों में स्वाभिमान एवं राष्ट्र के प्रति अनन्य भक्ति पैदा की। ''कामये दुःख तप्तानाम् प्राणीनामार्तिनाशम् एवं इदं न मम्'' के श्रेष्ठ भाव से कार्य करते हुए, सम्पूर्ण श्रेय समाज को अर्पित करते हुए उन्होंने महान तपस्वी, कर्मयोगी, राष्ट्रऋषि श्री माधव सदाशिवराव गोलवलकर के चरणों में अपने आप को विसर्जित कर दिया। (पूरी जानकारी के लिये ''परमानन्द माधवम्''

पढ़ें)।

आश्रम में स्व. सदाशिव गोविन्द कात्रे जी का एक आभामंडल था। वह वलय अचानक से लुप्त हो गया। सहारा लेना पड़ा ''आत्मदीपो भवः'' का। इसी के भरोसे दामोदर गणेश बापट आगे बढ़े। अन्न की कमी, दूध की कमी। इसको पूरा करना एक बड़ी चुनौती थी। कम भोजन करके तो रहा जा सकता है। परन्तु बिना दवाई एवं उचित चिकित्सा के अभाव में मरीजों को रखना कहाँ तक उचित होगा ? ये सारे प्रश्न एकदम सामने थे। बापट जी ने अपने सम्पर्क सूत्रों से पत्र व्यवहार प्रारंभ किया। कुछ बंधुओं ने सहयोग का आश्वासन दिया।

कुष्ठ रोगी ठीक होते गए। उन्होंने अपने अनुरुप काम ढूंढ लिया था, परन्तु बापट जी बहुत दूर का सोचते थे। आने वाली शताब्दी (सहस्त्राब्दी) का भारत कैसा होगा ? इस आश्रम का योगदान क्या केवल शासकीय चिकित्सालय जैसा होगा ? क्या भारतीय कुष्ठ निवारक संघ मात्र एक स्वस्थ मरीजों का वृद्धाश्रम बनकर रह जाएगा ? वे सोच रहे थे कुष्ठ रोगी महिला का दूध पीता बच्चा कहाँ जाएगा ? माँ को रोग हो गया उसकी गोद में बच्चा है। बच्चा माँ के बिना और माँ बच्चा के बिना नहीं रह सकती। रोग को अभिशाप समझकर उसे घर से निकाल दिया जाता है। बच्चे को गोद में लेकर भीख मांगने के सिवाय दूसरा कोई मार्ग उसके पास नहीं है। भिक्षा मिल भी जाती है परंतु उचित इलाज और भोजन के अभाव में रोग का सतत बढ़ते जाना, संवेदनशील अंगों का गलना, भोजन बनाने में समस्या आदि बाधाएं आ घेरती हैं। धीरे–धीरे माँ का शरीर गलकर मिट्टी में मिल जाता है। अनाथ कुष्ठ रोगी माँ का बच्चा होने का अभिशाप लिये वह गलत मार्ग पर बढ़कर अपराधी की पंक्ति में खड़ा हो जाता है, अथवा पढ़ने–लिखने की आयु में वह रेल पटरी के किनारे या कूड़े दानों में प्लास्टिक एवं रद्दी कागज बीनकर गुजारा करने का प्रयास करता है। श्री बापट जी कुष्ठ रोगियों के बच्चों की चिंता कर रहे थे।

आश्रम द्वारा धन संग्रह की योजना बना ली गई थी। योजनाएं, निर्णय, प्रस्ताव तो समिति द्वारा सर्वानुमति से ही पारित होते थे परंतु भारतीय कुष्ठ निवारक संघ का कार्य **"Single Man Fight"** (एकांगी संघर्ष) ही था। बापट जी अधोसंरचना की सम्पूर्ण योजना किसी अच्छे वास्तुशास्त्री से बनवाना चाहते थे। कई दिनों के प्रवास के बाद उन्हें एक आशा की किरण दिखाई दी। भिलाई खुर्सीपार में एक कुष्ठ रोगियों का केन्द्र चलता था। उसका काम श्री चौधरी जी देखा करते थे, उनका चांपा आना–जाना लगा रहता था। उनसे पता चला कि अपने एक स्वयंसेवक श्री माधव एकनाथ राजहंस जी अच्छे वास्तुविद हैं। बापट जी को एक सूत्र की

झूलाघर

आवश्यकता थी। दिनांक 03 सितम्बर सन् 1977 को वे भिलाई स्टील प्लांट के सेक्टर 5, स्ट्रीट नंबर 36, में श्री राजहंस जी के घर पहुँच गए। श्री राजहंस जी ने अत्यंत आत्मीयता से बापट जी का स्वागत किया। उनका व्यवहार देखकर बापट जी में थोड़ी आशा जगी कि कुछ काम बन सकता है। बापट जी ने ''भारतीय कुष्ठ निवारक संघ'' की योजना, रुपरेखा एवं आवश्यकता विस्तार से समझाई।

रोगी निवास (महिला–पुरुष), कार्यालय भवन, उद्योग–भवन, छात्रावास, चिकित्सालय भवन, अतिथि निवास आदि का नक्शा बनाकर देने का आग्रह किया। श्री राजहंस जी ने बापट जी को शांतिपूर्वक सुना और कहा–एक दिन मैं चांपा आता हूँ जमीन की स्थिति देखुँगा फिर आपको पूरा नक्शा बनाकर देता हूँ। बापट जी आशा की किरण लेकर वापस आए। आते समय वे रायपुर संघ कार्यालय में श्री शांताराम जी से मिले। सारी योजनाएं उनको बताई। शांताराम जी ने भी राजहंस जी को याद दिलाने का आश्वासन दिया। रायपुर का संघ कार्यालय उस समय जय टाकीज के पीछे था। पहले उसका नाम शारदा टाकीज था इसलिये उस चौक का नाम शारदा चौक है। आज कल वहाँ बड़ा मार्केट बन गया है।

शनिवार दस सितम्बर सन् 1977 को बापट जी रेडियो पर समाचार सुन रहे थे, क्रिस एव्हर्ट को यू एस ओपन का खिताब मिला था, उसने आस्ट्रेलिया की वेंडी टर्नबुला को 7–6, 6–2 से सीधे सेटों में हराकर महिला टेनिस का खिताब अपने नाम किया था। उसी समय मोतीलाल ने आकर बताया कि राजहंस जी भिलाई से चौधरी जी के साथ पहुँचे हैं। बापट जी के आनन्द का ठिकाना नहीं था। कार्य में गति आने की सम्भावना बढ़ गई थी। भोजन विश्राम के बाद बापट जी ने पूरा परिसर राजहंस जी को दिखाया, कुछ अपने मन की कल्पना बताई। सभी बिन्दु राजहंस जी ने अपनी पुस्तिका में नोट किये और कुछ दिनों बाद नक्शा बनाकर देने का आश्वासन दिया।

पंद्रह दिनों के अंदर ही नक्शा बनकर आ गया। वह सारी योजनाएं बापट जी ने परमपूजनीय बाला साहब देवरस जी को दिखाई। उनको बाला साहब जी का प्रोत्साहन मिला। बापट जी ने अपने सम्पर्क सूत्रों से धन संग्रह की योजनाएं बनाने का प्रयास प्रारंभ किया। पूजनीय बाला साहब जी से मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद लेने की योजना पहले से ही थी। श्री माधव एकनाथ राजहंस जी को लिखे पत्र से ही यह बात ध्यान में आती है। वे लिखते हैं :–

श्रद्धेय श्री राजहंस जी दिनांक 22.10.1977

सादर प्रणाम,

आपण पाठविलेले नकाशे मिळाले, आता याचा ब्लाक काढून बुकलेट

मध्ये छापण्यास हरकत नसावी, मी हा प्लान पूजनीय बाला साहेब देवरसांना त्यांच्या बिलासपुर दौऱ्यांचे वेली दाखविल, बहुतेक आपण ही त्या वेली राहालच.

तुमचा
दा.ग.बापट

पत्र का हिन्दी अनुवाद :–

श्रद्धेय श्री राजहंस जी, दिनांक 22.10.1977

सादर प्रणाम,

आपने भेजे हुए नक्शे प्राप्त हुए। अब इसका एक ब्लाक बनाकर बुकलेट में छापने में कोई अड़चन नहीं होनी चाहिये। मैं यह प्लान पूजनीय बाला साहब देवरस जी को उनके बिलासपुर दौरे के समय दिखाऊँगा, सम्भवतः आप भी उस समय रहेंगे ही.

आपका
दा.ग.बापट

परमपूजनीय सरसंघचालक जी के ध्यान में योजना आने से कुछ सुविधा हुई। अनेक बंधुओं के आश्वासन पत्र आए। केन्द्र एवं प्रदेशों में सरकारें बदल गई थीं। पत्र व्यवहार का अनुकूल जवाब आने लगा था। संघ कार्य सन् 1975 में लगभग बंद ही हो गया था। धीरे–धीरे वह व्यवस्थित होने लगा था, परंतु कठिनाईयाँ भी बहुत थीं। प्रचारकों एवं कार्यकर्ताओं की बहुत कमी थी। बंद शाखाओं को प्रारंभ करने का प्रयास चल रहा था। सन् 1978 का संघ शिक्षा वर्ग रायगढ़ (छत्तीसगढ़) में लगा। छत्तीसगढ़ उस समय महाकौशल प्रांत में आता था। बापट जी को भी सबने संघ का प्रशिक्षण प्राप्त करने को कहा। संघ के प्रशिक्षण वर्ग में जाने का अर्थ था बीस दिनों तक आश्रम से छुट्टी लेना। वर्ग में जाने से पूर्व आश्रम की सारी व्यवस्थाएं पूर्ण कर ली गई। बापट जी वर्ग में रायगढ़ चले गए।

बापट जी के स्वभाव से अधिकांश लोग परिचित ही थे। उनके साथ विनोद चलता ही रहता था। उनके रहन–सहन में कोई परिवर्तन नहीं था। संघ शिक्षा वर्ग में एक दिन अंतिम पंक्ति में भोजन परोसने का काम बापट जी कर रहे थे। नमक खतम

हो गया तो बापट जी को दुकान से नमक लाने भेजा गया। वे गमछा लपेटे ही दुकान चले गए। दुकानदार से नमक माँगा। उसने बापट जी को ऊपर से नीचे तक देखा और कहा–पहले ये बोरा उठा फिर नमक देता हूँ। बापट जी ने उसकी आज्ञा का पालन किया। इधर भोजन समाप्त कर पं. लखन लाल चौबे और डॉक्टर राजेन्द्र पाठक बाहर सड़क पर निकले देखा कि बापट जी बोरा उठा रहे हैं। पंडित लखन लाल चौबे जी ने दुकानदार को खूब लताड़ा–जानते हो किससे बोरा उठवा रहे हो ? ये हैं बापट जी, भारतीय कुष्ठ निवारक संघ के सचिव। दुकानदार हाथ जोड़कर माफी माँगने लगा। रुपरंग देखकर मैंने इनको मजदूर समझा, गलती हो गई। बापट जी कहने लगे–चलिये पंडित जी कोई बात नहीं अपने को फ्री में दो पैकेट नमक मिल गया। अपने वर्ग का एक रुपया बच गया।

श्री दामोदर गणेश बापट प्रथम वर्ष शिक्षित स्वयंसेवक बनकर वापस आए। आश्रम के कार्य में लग गए। सबसे पहला काम पत्रों को पढ़ना और जवाब देना था। आश्रम की व्यवस्था का अवलोकन करना, कमियों को तुरन्त दूर करना, मरीजों से मिलना, हाल–चाल पूछना, नए मरीजों की जानकारी, परिचय प्राप्त करना आदि कार्य प्रमुखता से किया। सरकार बदलने से कुछ सुविधाएं भी मिल जाती हैं। बापट जी मुंबई–हावड़ा मेल से रायपुर जा रहे थे। वे प्रथम श्रेणी के डिब्बे में चढ़ गए। टी.टी. ने देखा एक मजदूर प्रथम श्रेणी के डिब्बे में चढ़ गया है उसको भला–बुरा कहकर अगले स्टेशन पर उतरने कहा–बापट जी कुछ बोले नहीं। बिलासपुर के पास वह फिर टी.टी. आया गुस्से में बोला–अपना टिकट दिखा ! बापट जी ने अपना पास दिखाया। पास देखकर टी.टी. के होश उड़ गए। सीधा रेल मंत्रालय से पास जारी किया गया था। वी.वी.आई.पी. पास था। टी.टी. माफी मांगने लगा। सर आपने पहले पास नहीं दिखाया बापट जी ने कहा–आपने पहले नहीं पूछा, कोई बात नहीं आप घबराइये नहीं।

बापट जी अहंकार से रहित व्यक्ति थे। मान–अपमान, यश–अपयश में स्थित प्रज्ञ थे। आश्रम के लिये संसाधन जुटाना, राशि की व्यवस्था में निरंतर व्यस्त रहना, यही उनकी प्राथमिकता थी। संघ शिक्षा वर्ग करने के बाद बापट जी स्वयं वैचारिक प्रबलता का अनुभव करने लगे थे। सन् 1979 में उन्होंने द्वितीय वर्ष और बिना समय गवाँए उन्होंने सन् 1980 में तृतीय वर्ष कर लिया। वे वस्त्रों से अवलिया दिखते होंगे परन्तु वे विनोदी स्वभाव के व्यक्ति थे। उनको शारीरिक में परेशानी होती थी। अंतिम दिन शारीरिक की परीक्षा थी। सिरमार घुमाते समय उन्होंने शिक्षक के सिर पर दे मारा। अरे ! माँफ करना भाई !

* कोई बात नहीं सिरमार क्रमिका तीन करेंगे–सावधान ! अरे रुको–रुको मुझे थोड़ा दूर जाने दो ..... हाँ अब कुरू .....

* बापट जी ने दण्ड उल्टा–सीधा घुमाया और खड़े हो गए। शिक्षक ने पूछा–ये कौन सा प्रयोग है ? यह तो न पाठ्यक्रम में है, न ही हमने सिखाया।

* आपने नहीं सिखाया ! तो फिर मैं कैसे सीख गया।

* शिक्षक परेशान होकर बोले–अरे भाई बापट जी आपको कुछ आता भी है ?

* आता है।

* क्या आता है ?

* आपको देखकर पसीना आता है।

शाम को गणसमता की परीक्षा हुई। बापट जी ने गण को प्रचल की आज्ञा दी। गण आगे बढ़ गया। गण को रोकने की आज्ञा भूल गए। वे दौड़कर गण के आगे गए और जोर से दोनों हाथ ऊपर करके चिल्लाए–''होर–होर–होर'' छत्तीसगढ़ में जानवरों को रोकने के लिये होर–होर शब्द प्रयोग किया जाता है।

संघ शिक्षा वर्ग तीस दिनों का होता है। शारीरिक प्रयोग, गीत, अमृतवचन उन्हें याद है या नहीं, तृतीय वर्ष करके आने के बाद उनका शाखाओं में बौद्धिक होता था या नहीं, किसी को मालूम नहीं परंतु प्रशिक्षित स्वयंसेवक की कर्मकठोरता, प्रामाणिकता, ध्येयनिष्ठा विकसित हुई थी इसमें तो किसी को कोई संदेह नहीं था। वैचारिक दृढ़ता, प्रतिबद्धता असंदिग्ध है। नागपुर से आने के बाद बापट जी दुगुने उत्साह के साथ कार्य में लग गए। व्यवस्था की कमी, अर्थाभाव था ही। बापट जी ने अपने ऊपर अत्यंत कठोर नियंत्रण रखा था। एक–एक पाई जोड़कर रखना, अपने ऊपर आश्रम का पैसा खर्च न करना। कुष्ठ रोगियों से अलग अपनी आवश्यकता नहीं रखी। इतने अभाव के बीच में उन्होंने अपना प्रभाव कैसे जमाया ? इसको एक प्रसंग से समझा जा सकता है।

सुबह पाँच बजे चाय आ जाती थी। एक दिन चाय के समय बापट जी को कहा गया–बापट जी चाय आ गई, मंजन करके आइये ! बापट जी ने उत्तर दिया–अरे ! चालीस सालों से मंजन नहीं किया तो अब क्या करेंगे, तुमने हमको कभी तेल लगाते देखा ? ..... लाओ चाय !

चाय पीते–पीते सहज बातचीत में बापट जी बताने लगे। आपातकाल में एक दिन ऐसी स्थिति आ गई कि सब्जी में डालने के लिये तेल नहीं था। मैं लाल दन्तमंजन करता था उसको खरीदने के लिये पैसे नहीं थे। मैंने विचार किया कि यदि मैं सिर में तेल नहीं लगाता तो कितना पैसा बचता ? कितना तेल बचता ? सिर में तेल

नहीं लगाने से क्या होगा ? मंजन खरीदना बंद कर दुँगा तो क्या होगा ? मैंने सोच–विचार कर सब कुछ छोड़ दिया, आज चालीस साल हो गए। साबुन लगाना भी छोड़ दिया। अपने शरीर पर कितना खर्च करना। जिस क्षेत्र में काम करते हैं, उस क्षेत्र के अनुरुप रहने का प्रयास करना। इसका मतलब तुम मेरी नकल मत करो, तुम रोज साबुन लगाकर नहाओ, रोज मंजन करो, रोज तेल लगाओ। मेरी तो अब आदत पड़ गई है, मैं तो भोजन भी एक बार करता हूँ।

सन् 1978 में एक–एक पाई–पाई जोड़कर खपरैल का एक महिला आवास सन् 1982 में बना। महिला रोगियों को थोड़ी अच्छी व्यवस्था देने में सफल हुए। आश्रम में कोई भी नई प्रगति होती थी तो आश्रम परिसर में उत्साह का वातावरण बनता था। चेहरे पर प्रसन्नता, आनन्द झलकता था। महिला आवास के उद्घाटन के लिये समिति के लोग ही उपस्थित थे। गाँव में जिस प्रकार खपरैल का मकान व्यवस्थित बनता था वैसा ही महिला आवास बनाया गया। यह कहा जा सकता है कि बच्चों के लिये जो शासकीय आवास भवन बनता था उससे तो अच्छा ही बनाया गया था।

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ को शासन की ओर से कुछ सहायता मिलती थी। शासन का अनुदान इतनी आसानी से नहीं मिलता था। ऑफिस के क्लर्क कई प्रकार की आपत्तियाँ लगाते रहते थे। शासन का पैसा किसी संस्था को देना ऑफिस के लोग ऐसा समझते थे कि अपने घर का पैसा खैरात में बाँट रहे हैं। कुछ संस्थाएं इस प्रकार लेन–देन के लिये अपनी पृथक व्यवस्था रखते थे और अपनी राशि स्वीकृत कराकर ले जाते थे, परन्तु बापट जी ने यह रास्ता नहीं अपनाया। धक्का खाना मंजूर था। बापट जी ने अत्यंत धैर्य और संघर्ष के साथ काम किया। वे छोटे–छोटे कामों के लिये चांपा–बिलासपुर कई चक्कर लगाते थे। ऑफिस के लोग भी अनावश्यक आपत्तियाँ लगाते थे। बापट जी प्रत्येक आपत्ति का जवाब देते थे परन्तु उन्होंने कभी भी कलेक्टर–कमिश्नर को शिकायत नहीं की। धैर्य के साथ ऑफिस के लोगों की मनमानी ज्यादती सहते रहे परन्तु कमीशन के तौर पर किसी भी ऑफिस में, किसी भी व्यक्ति को कुछ नहीं दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि सभी संबंधित लोग बापट जी को जानने लग गए। बापट जी ने अपने सहज सरल व्यवहार से लोगों का मन जीता था। ऑफिस में ट्रांसफर होते ही रहते थे। कमिश्नर ऑफिस का क्लर्क बदल गया था। आश्रम के लिये स्वीकृत राशि लेने बापट जी बिलासपुर गए। नए क्लर्क ने बापट जी से पैसे की माँग की। बापट जी ने कहा–मैं पैसे दे दुँगा पहले आप अपनी पत्नी से पूछकर आइये, कोढ़ी लोगों के पैसे में भी कमीशन चाहिये क्या ? अभी आप बता

दीजिये आपका कमीशन कितना हुआ ? कल लेकर आ जाऊँगा । इतना कहकर बापट जी वापस संघ–कार्यालय आ गए । दूसरे दिन समय पर वे कमिश्नर ऑफिस पहुँच गए । बापट जी को देखते ही क्लर्क ने कहा–आपका काम हो गया । ये चेक लीजिये । मेरी पत्नी ने मुझे बहुत खरी–खोटी सुना दी । बापट जी के शब्दों का प्रभाव था ।

बापट जी ने अपना काम अत्यन्त कठिनाई से खड़ा किया । इस काम से चांपा में जो एक मिश्नरीज का काम चलता था उस पर असर होने लगा । मरीजों की संख्या वहाँ कम होने लगी थी जिसकी जानकारी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँच गई थी । विदेशी एजेंसियों के कान खड़े हो गए । वे ऐसी संस्थाओं को आर्थिक सहयोग के बहाने अपने जाल में फँसाना चाहते हैं । बाद में वे अपने विचारों को संस्था पर थोपने का प्रयास करती हैं । वे इस बात का प्रयास करती हैं कि संस्थाओं से देशभक्ति का भाव न जगे । एक बार यदि किसी संस्था को विदेशी धन की आदत पड़ जाए तो फिर बाद में उन पर विदेशी संस्थाएं अपनी शर्तें, योजनाएं लादना प्रारंभ कर देती हैं । एक जर्मनी की संस्था का प्रतिनिधि मंडल भारतीय कुष्ठ निवारक संघ में आया । पूरे आश्रम का अवलोकन किया । बापट जी से उन्होंने कहा आपकी संस्था को हम पर्याप्त आर्थिक सहयोग करना चाहते हैं । बापट जी ने कहा–करोड़ों की राशि के लिये हमारी कोई योजना नहीं है और न ही हम इसे सँभाल पाएंगे । विनम्रतापूर्वक बापट जी ने राशि अस्वीकार कर दी । वे खाली हाथ वापस चले गए ।

शाम को चांपा में एक दुकान पर बापट जी से उनकी पुनः भेंट हो गई । बापट जी उस व्यापारी से प्रार्थना कर रहे थे कि इस वर्ष आपकी सहयोग राशि रु. 12/– अभी तक प्राप्त नहीं हुई । यह दृश्य देखकर जर्मन लोगों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ । वे कहने लगे हम आपको स्वेच्छा से लाखों की मदद कर रहे थे पर आप लेना नहीं चाहते और आप यहाँ मात्र 12/– रुपये के लिये मिन्नतें कर रहे हैं । बापट जी ने कहा– ''इनके भरोसे ही हमारा आश्रम विकसित हुआ है । इनके अन्दर अपने समाज के प्रति प्रेम, आत्मीयता तथा समर्पण का भाव विकसित हो यह हमारा कर्तव्य भी है और दायित्व भी । अपने लोगों की सेवा अपने ही लोगों के दान से हो यही हमारा लक्ष्य है । पवित्र कार्यों के लिये साधनों की पवित्रता होनी चाहिये ।'' ''अर्थ के अभावों के कष्ट एवं अर्थ के प्रभावों के भटकाव'' को बापट जी अच्छी तरह समझते थे । आर्थिक शुचिता, आर्थिक चिंतन–व्यवहार संस्था–जीवन में स्थापित करना यह भी आवश्यक था । ''यद्यपि शुद्धं, संघ विरुद्धं न करणीयम्, लोक हितं मम् करणीयम् ।।'' बापट जी का आजीवन व्रत रहा है । बापट जी अपनी योजनाओं को साकार करने

के लिये सतत कलकत्ता, मुम्बई, पूणें, डोंबिवली प्रवास करने लगे । उन्हें कुष्ठ रोगियों के बच्चों के आवास की बड़ी चिंता थी । बच्चों को स्वतंत्र आवास की जरुरत थी । उनके भोजन का समय स्कूल जाने के पहले होना चाहिये । उनके भोजन की पृथक व्यवस्था, बनाने वाले की व्यवस्था, छात्रावास प्रमुख की व्यवस्था आदि समुचित हो । इसके लिये आर्थिक संसाधन जुटाना । संघर्ष प्रारंभ हुआ । भवन निर्माण तो स्थाई एक बार का काम है परन्तु छात्रावास की व्यवस्था मुख्यतः दैनंदिन भोजन, रसोईया का मानदेय, अधीक्षक का मानदेय आदि स्थाई नियमित व्यय बिना स्थाई स्त्रोत के हो नहीं सकता । बापट जी ने विचार किया कि क्या बच्चों का छात्रावास बच्चों के द्वारा ही चलाया जा सकता है ? उन्होंने अपने विचार समिति के सामने प्रकट किये । भारत सरकार पन्द्रह जनवरी से 30 जनवरी तक कुष्ठ निवारण पखवाड़ा मनाती है । इस समय यदि विद्यालय के बच्चों से हम एक रुपये की टिकट के माध्यम से छात्रावास चलाने के लिये सहयोग की बात करें तो कैसा होगा ? समिति ने सर्वानुमति से अपनी सहमति दे दी । बापट जी के मन में कल्पना थी ही तुरन्त उन्होंने इस पर कार्य प्रारंभ कर दिया । सभी शासकीय, अर्धशासकीय, निजी संस्थाओं को अनुरोध भरा अपील पत्र भेजा गया । विद्याभारती की संस्थाओं ने उत्साह के साथ प्रतिसाद दिया । बच्चों की स्थाई व्यवस्था की दिशा सुनिश्चित हो गई । धीरे–धीरे कच्चे खपरैल का छात्रावास भवन सन् 1987 में बनकर तैयार हो गया । उसी में एक छोटा सा 8x6 का कमरा था जिसमें बापट जी स्वयं रहते थे । वे अपने हाथों से उसे रोज लीपते थे । दरी और चटाई बिछाकर उसी में सोया करते थे । बच्चों का एडमिशन पास के गाँव डिपरापारा के स्कूल में कर दिया गया । छात्रावास का दायित्व श्री जयधर यादव को दिया गया । किसी भी विद्यालय अथवा छात्रावास में बच्चों का भविष्य योग्य छात्रावास प्रमुख अथवा शिक्षक के कारण निर्माण होता है । जयधर यादव स्वयं कक्षा आठवीं तक पढ़े थे, उनकी रुचि खेती में अधिक थी । बच्चों का संस्कार पक्ष कमजोर ही था । संतोष मात्र इतना था कि कुष्ठ रोगियों के बच्चों को एक आश्रय मिल गया था । शासन के भय ने शासकीय विद्यालय में नाम दर्ज करने बाध्य कर दिया था । परन्तु शिक्षकों एवं अन्य विद्यार्थियों का व्यवहार उनके साथ अछूतों जैसा ही था । कई बार बच्चे रोते हुए ही वापस आते थे । जयधर जी बच्चों को पहुँचाने–लाने जाते थे । उनको भी शिक्षक की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता था । बच्चों में पढ़ने की कोई रूचि जग नहीं पा रही थी । एक योग्य छात्रावास प्रमुख की अत्यंत आवश्यकता थी । छात्रावास का वातावरण संस्कार क्षम बनाना आवश्यक था । लगभग दो वर्षों के बाद बिलासपुर के एक सज्जन श्री शरद गोवर्धन छात्रावास सँभालने आए । संघ शाखा के

माध्यम से छात्रावास की दिनचर्या में संध्या–आरती, गीत, भजन, कथा कहानियों के द्वारा बच्चों में उत्साह का संचार हुआ । बापट जी बीच–बीच में बच्चों के साथ बातचीत करने, भोजन करने आ जाते थे, परन्तु यह अधिक दिनों तक नहीं चल पाया । श्री शरद गोवर्धन जी भी वापस चले गए । महाराष्ट्र से एक सज्जन श्री बेड़ेकर आए वे भी जल्दी चले गए ।

बच्चों के लिये भारी व्यवस्थाएं तो थी परन्तु बापट जी के सामने फिर से वही चिंता खड़ी हो गई । छात्रावास में सात–आठ लड़कियाँ भी थीं उनके लिये महिला प्रमुख की आवश्यकता थी । जब बापट जी जशपुर में शिक्षक थे उस समय श्री हरदयालराम नाम का छात्र था । वह ग्राम पटिया, सन्ना जिला जशपुर का रहने वाला था, उससे बापट जी ने संपर्क किया । वे योग के अच्छे शिक्षक थे, उनका विवाह हो गया था । वे दोनों छात्रावास प्रमुख इस नाते से कार्य करने तैयार हो गए । भोजन, आवास, पढ़ाई, संस्कार आदि जिम्मेदारी दोनों ने सँभाल ली थीं । चार वर्षों बाद वे भी शासकीय सेवा में चले गए । इसी बीच भिलाई स्टील प्लांट से सेवा निवृत्त श्री दिवाकर भिखा जी देव आए । उन्होंने छात्रावास का कार्य सँभाल लिया ।

आश्रम का कार्य दो प्रकार का था । एक आश्रम की सम्पूर्ण आंतरिक व्यवस्था और दूसरा काम सबसे कठिन समाज जागरण था । कुष्ठ रोग छूत की बीमारी अथवा अनुवांशिक नहीं है । यह बात लोगों के गले उतारना सबसे कठिन कार्य है । एक प्रसंग तो बापट जी ने लगभग विषपान करते हुए देखा । कुष्ठ आश्रम कार्यसमिति की बैठक थी उनमें एक नये व्यक्ति को बुलाया गया था । कुष्ठ उन्मूलन मनाने एवं विद्यालयों, सामाजिक संस्थाओं में जाकर जागरण करने की योजना बनी, इस चर्चा में नए आए सज्जन ने भी जोश के साथ हिस्सा लिया । बैठक समाप्ति के पश्चात चांपा में बापट जी और बलिहार सिंह जी उनके घर चाय पीने गए । चाय आते तक वे सज्जन नहाकर कपड़े बदलकर आए । यह दृश्य बापट जी ने देखा पर उस समय वे कुछ बोले नहीं । आते समय बलिहार सिंह जी से अपने मन के भाव प्रगट किये । बलिहार सिंह जी ने कहा – बापट जी ! कात्रे जी ने कैसा संघर्ष किया होगा ? इसका विचार करिये । दिसम्बर की ठंड में दोपहर तीन बजे नहाना पड़ रहा है । बैठक में उनके सुझाव और विचार कितने अच्छे थे । हमको चाय पिलाने के बाद कप धोकर रखा या फेंक दिया ? कैसे पता चलेगा ? हम यदि अपने ही कार्यकर्ताओं और शुभचिंतकों का विचार, मत बदल सकें तो भी हमारी बड़ी सफलता होगी । (संकलनकर्ता ने उनका नाम जानना चाहा तो बापट जी टाल गए और कहा स्वयं यदि किसी को बताना चाहें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है) बापट जी ने उस प्रसंग को पचा लिया इतना ही कहा कि – लोग घर

जाकर कपड़े सहित नहाया करते थे।''

आश्रम के मुख्य द्वार पर एक भीख माँगने वाली महिला आई। याचना करने लगी – कई दिनों से भोजन नहीं हुआ है, कुछ बचा हो तो दे दीजिये। जूँठन होगा तो भी चलेगा। रोटी सब्जी बची थी। एक माता जी को लाने कहा गया। भीख माँगने वाली महिला ने रोटी लेकर आने वाली माता जी को देखा और बिफर पड़ी ''हम कोढ़ी के हाथ की रोटी नहीं खाएंगे, हम मर जाएंगे पर ये रोटी नहीं खाएंगे.....''। चिल्लाते हुए वह बुढ़िया चली गई। किसी का भी जूठन खाने को तैय्यार भिखमंगी महिला जिसको घर परिवार के लोगों ने दर–दर भटकने के लिये छोड़ दिया है वह भी कुष्ठ रोग के बारे में कैसा सोचती है ? इससे हम समाज की मानसिकता का अन्दाजा लगा सकते हैं।

प्रतिवर्ष गर्मी में चांपा रेल्वे स्टेशन पर प्याऊ की व्यवस्था की जाती है परंतु वहाँ बैनर नहीं लगता था। बापट जी से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि यदि हम बैनर लगा देंगे तो कुष्ठ शब्द देखकर कोई पानी पीने नहीं आएगा। इसलिये कई वर्षों तक रेल्वे स्टेशन में बैनर नहीं लगाया गया।

कुष्ठ रोग उन्मूलन पखवाड़ा का प्रयोग उत्साह जनक रहा। इस प्रयोग को विद्याभारती जैसी संस्थाओं ने अपने विद्यार्थियों तक पहुँचाने में बड़ी भूमिका निभाई। व्यवस्थाएं धीरे–धीरे ठीक हो रही थीं। आश्रम कार्य के साथ–साथ मरीजों की संख्या बढ़ रही थी। जब जनसंख्या बढ़ती है तो कार्यकर्ताओं में कुछ अनबन, नासमझी, नाराजगी होने लगती है। एक पुरूष कार्यकर्ता एक लड़की से विवाह करना चाहता था, वह उसके मोहपाश में बँध गया था परन्तु उसकी ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दे रहा था। कई दिनों बाद प्रेम पुरूष पधारे और कहने लगे मेरा प्रेम सच्चा है इसके लिये मैं अपना बलिदान भी दे सकता हूँ। लोगों ने उसे गंभीरता से नहीं लिया। वे प्रेमपीड़ित चिल्लाते हुए गए और कुएँ में कूद गए। उनको तैरना नहीं आता था। बड़ी मुश्किल से एक पत्थर से सहारे कुएँ में लटके रहे और चिल्लाने लगे – बचाओ–बचाओ–बचाओ ..... लोग दौड़े उसको रस्सी से बाँधकर बाहर निकाला गया। प्रेम का भूत उतर गया। इस प्रकार की अनेक समस्याएं आईं। एक बार बेनीराम जी नाराज हो गए। गुस्से में वे बापट जी से कहने लगे ''मैं भीख माँगकर खा लुँगा परन्तु अब मैं आश्रम में नहीं रहूँगा।'' बापट जी ने कहा–सुनो ! यह आश्रम ही तुम्हारे लियो बना है जब तुम ही यहाँ नहीं रहोगे तो मैं यहाँ क्या करूँगा। ऐसा करते हैं तुम्हारे साथ मैं भी चलता हूँ दोनों मिलकर भीख माँगेंगे।'' बापट जी की बात सुनकर बेनीराम माफी माँगने लगा। गलती हो गई महाराज ! ..... बापट जी ने कहा–अच्छा अभी तुम अपने कमरे में

जाओ। बाद में फिर विचार करेंगे।

आश्रम की गतिविधियाँ बढ़ती जा रही थीं। समयानुसार गतिविधियाँ बढ़ानी आवश्यक भी थीं। स्वस्थ कुष्ठ रोगियों के लिये क्या–क्या कार्य प्रारंभ किया जा सकता है ? कैसे किया जा सकता है ? यह समझना आवश्यक था। भारत में इस प्रकार चिंतन करने वाले और एक साम्राज्य का निर्माण करने वाले व्यक्ति थे श्रद्धेय बाबासाहब आमटे। उनका ''आनंदवन'' वरोड़ा चन्द्रपुर प्रकल्प कार्यकर्ताओं के लिये प्रेरणा केन्द्र था। स्वस्थ कुष्ठ रोगी क्या–क्या कार्य कर सकते हैं यह यहाँ देखा जा सकता है। बापटजी ने भी सोचा कि एक बार जाकर देखा जाये। उन्होंने श्री अविनाश साठे को पत्र लिखा। श्री अविनाश साठे ने कुछ दिनों तक भारतीय कुष्ठ निवारक संघ में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया था बाद में वे जीवन के अंत तक आनन्दवन वरोड़ा में ही रहे। निश्चित समय पर बापट जी आनंदवन पहुँचे श्रद्धेय बाबासाहब आमटे जी के दर्शन किये, उनसे आशीर्वाद लिया। दो दिन रहकर कुछ कल्पना लेकर वापस आए।

आनन्दवन की व्यवस्था, उसको प्राप्त होने वाली अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहायता, शासन–प्रशासन का सहयोग एवं स्वयं बाबासाहब आमटे जी का तेजस्वी व्यक्तित्व उसके सामने भारतीय कुष्ठ निवारक संघ का अल्प कार्य। बापट जी ने स्वयं के संसाधनों से ही कार्य प्रारंभ करने की योजना बनाई। इन सभी कामों के लिये स्वस्थ कार्यकर्ताओं की आवश्यकता थी। गौशाला, कृषि, बागवानी, आश्रम की स्वच्छता इन कामों को पढ़ा–लिखा व्यक्ति नहीं कर सकता। अतः बापट जी ने ग्रामीण कार्यकर्ता लेने का प्रयास किया। जशपुर जिला के पगुराटोंगर ग्राम के श्री जयधर यादव पहले से ही आश्रम में थे उनको छात्रावास के दायित्व से मुक्तकर कृषि–गौशाला, बागवानी के कार्य में लगाया गया। जयधर जी अति उत्साही कार्यकर्ता थे। सभी प्रकार का कार्य वे करते थे।

कुष्ठरोगियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिये कुछ रोजगार करना चाहिए ऐसा सोचा जाने लगा। सबसे सरल काम ध्यान में आया ''चॉक'' आसानी से बनाया जा सकता है। इस कार्य के लिये एक चॉक बनाने वाला व्यक्ति आ गया था, उसका नाम रशीद भाई। वे स्वयं एक कुष्ठ रोगी थे। उनको इस प्रकार के काम का अच्छा अनुभव था। इस कार्य को उन्होंने बड़ी सफलता पूर्वक किया। चॉक बनना प्रारंभ हुआ। कच्चा माल, साँचा, ट्रे उसको सुखाने की व्यवस्था। सबसे बड़ा स्थाई कार्य था पक्के माल के लिये बाजार। बापट जी ने आस–पास विद्यालयों में संपर्क किया। कुछ लोगों ने चॉक खरीदना स्वीकार किया, कुछ लोगों ने शिकायत की। बाजार

भाव से महँगा है । परंतु चॉक की क्वालिटी ठीक होने के कारण प्रायव्हेट स्कूलों ने खरीदने का मन बनाया । शासकीय विद्यालयों के सामने समस्या थी कि शासन की ओर से राशि की स्वीकृति और दूसरी बाधा थी आश्रम से कमीशन नहीं माँग सकते । कुछ विद्यालयों ने तर्क दिया कि इस प्रकार की खरीदी **Quotation** बुलवाकर (सभी लेखन सामग्री) जिला स्तर पर होती है । कुछ निजी संस्थाओं ने कुष्ठरोगियों द्वारा बनाया गया समझकर एवं उनको हम उसी प्रकार सहायता कर सकते हैं यह सोचकर खरीदना प्रारंभ किया । पहले तो काम घाटे में ही चला, परन्तु स्वरोजगार, स्वावलम्बन को बढ़ाने के लिये यह करना आवश्यक था । धीरे–धीरे उत्पादन बढ़ता गया । चॉक का नाम हो गया सूरज छाप चॉक ।

आश्रम के बारे में जानकारी समाज में होने लगी थी । बापट जी के पत्रों के माध्यम से सहयोग प्राप्त होता गया साथ ही जानकारी भी होती गई । कई समाज के प्रतिष्ठित लोग आश्रम देखने आना चाहते थे । आना–जाना प्रारंभ भी हो गया था । ऐसे लोगों को रुकने, उनके भोजन आदि की व्यवस्था स्वतंत्र होनी चाहिये क्योंकि आर्थिक सहयोग देना आसान है परंतु कुष्ठ पीड़ितों के हाथों से बना भोजन करना आसानी से संभव नहीं है । अनावश्यक हठधर्मिता से समरसता एवं आत्मीयता का तत्वज्ञान बताना यह बापट जी का स्वभाव नहीं था । अतः चार कमरों का आवश्यक सुविधायुक्त अतिथि गृह का निर्माण करने की योजना बनी । राशि भी उपलब्ध हो गई । कार्य प्रारंभ हो गया । 25 सितम्बर सन् 1988 को ''पंडित दीनदयाल उपाध्याय अतिथि गृह'' का लोकार्पण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सरकार्यवाह हो.वी. शेषाद्री जी के हाथों हुआ । आश्रम परिसर में आम का पेड़ भी लगाया गया । कुछ वर्षों बाद उसमें आम लगे तो पहली फसल डब्बे में पैक करके माननीय शेषाद्री जी को भिजवाई । यह बात मा. शेषाद्री जी ने कई जगहों पर बताई, वे कहते थे – जीवन में मैंने पेड़ लगाया और फल खाया वह अवसर मुझे कुष्ठ पीड़ितों ने दिया है ।''

बापट जी 8x6 के एक मिट्टी के कमरे में रहते थे । अधिकांश लोगों ने उनको सलाह दी कि एक अच्छा गेस्ट हाउस बन गया है बापट जी आप उसमें रहिये । बापट जी ने विनम्रता के साथ उत्तर दिया – ''यह आश्रम जिनके लिये बना है वे ही जब अभाव, अव्यवस्था, कम सुविधा में रहते हैं तो मेरा सर्वसुविधायुक्त स्थान पर रहना ईश्वर के प्रति अपराध है । यदि आश्रम में रहने वाले कुष्ठ रोगियों के पाँव जूते पहनने लायक नहीं है तो मैं उनके सामने जूते कैसे पहन सकता हूँ । मुझे तो उनके दुःख दर्द का अनुभव भी नहीं होगा ।'' (शशिभूषण सोनी चांपा द्वारा लिया गया साक्षात्कार) ।

श्री अरुण वसन्त खानखोजे, कोरबा एन.टी.पी.सी. में इंजिनियर थे, वे

बापट जी के सम्पर्क में आए। वे मूलतः बिलासपुर के रहने वाले हैं। वे आश्रम दिखाने के लिये अनेक लोगों को लेकर आते थे। बापट जी के सम्पर्क के कारण बिलासपुर से भी अनेक लोगों का आना–जाना प्रारंभ हुआ। कुछ छुट्टी बिताने के लिये, नई दुनिया बच्चों को दिखाने के लिये आते थे जैसे बच्चों को अजायबघर दिखाते हैं वैसे बिना नाक, कान, ऊंगलियाँ विहीन हाथ पैर वाले अजीब महिला पुरुष को देखकर अपना अवकाश–दिवस सार्थक करते हैं। ऐसे लोगों में कुछ संवेदनशील भी होते हैं। बिलासपुर से कुछ लोग आश्रम देखने आए। आश्रमवासी अपने काम में लगे थे। एक व्यक्ति कुँए से पानी निकाल रहा था। उसके हाथों में ऊंगलियाँ नहीं थीं, वह रस्सी को हाथों से पकड़ नहीं सकता था। रस्सी को अपने हाथों में लपेटकर खींच रहा था। जब भरी हुई बाल्टी ऊपर आती थी तो वह कड़ी में हाथ डालकर बाल्टी निकालता था। अत्यधिक कठिनाई से वह पानी निकाल पाता था। अनेक लोग पानी निकालने के इस दृश्य को देखकर आनंदित हो रहे थे। इस दृश्य को देखकर एक व्यक्ति का हृदय करुणा से भर गया। उन्होंने मन ही मन संकल्प किया कि ऐसे लोगों के लिये कुछ न कुछ करना चाहिये। सेवानिवृत्ति के बाद वे आश्रम में आ गए। पहला काम उन्होंने पम्प लगाकर पाइप लाइन द्वारा जल–आपूर्ति की व्यवस्था की। रस्सी बाल्टी से पानी खींचने वाले व्यक्ति के द्वारा दोनों हाथों से नल की टोटी खुलवाकर उद्घाटन करवाया। पानी की धार देखकर उसका चेहरा आनंद से खिल उठा। सेवाव्रती सज्जन कोई और नहीं श्री राजाभाऊ वरवणकर थे। उन्होंने अपने जीवन के चौदह वर्ष आश्रम को दिये। आश्रम की खेती, जल–व्यवस्था एवं बागवानी सुव्यवस्थित की। इस समय तक गौशाला, सिलाई केन्द्र, दरी एवं चाक उद्योग, वेल्डिंग वर्कशॉप आदि प्रारंभ हो गया था।

आश्रम में लगभग आठ सौ से हजार बोरा अनाज उत्पन्न होता था। अनाजोत्पादन निस्संदेह वरवणकर जी की देन है परंतु इसके पीछे कार्यकर्ताओं का प्रत्यक्ष योगदान, परिश्रम था। समिति द्वारा यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक कार्यकर्ता को एक बोरा धान मानदेय के अतिरिक्त दिया जावे। इस प्रस्ताव को सुनकर लोगों ने कहा कि यह धान हमें नहीं चाहिये बल्कि हमारा यह कहना है कि घोघरानाला में जो अभावग्रस्त हैं उनको यह वितरित कर दिया जाये। बापट जी को इसी प्रकार के उत्तर की आशा थी। बापट जी आश्रमवासियों के मन में समाज के प्रति संवेदना, आत्मीयता निर्माण करने में आंशिक ही क्यों न सफल हुए थे।

बापट जी राजाभाऊ के सहयोग से पत्र व्यवहार करने लगे। सभी प्रकार के भवनों के लिये आर्थिक सहयोग की अपील की गई। धीरे–धीरे आश्रम के पास

लगभग 78 (अठहत्तर) एकड़ भूमि आ गई । समिति में व्यवस्था संबंधी विचार–विमर्श होने लगा । भावी योजनाओं की रूपरेखा नए सिरे से प्रारंभ हुई । योजना बनकर तैयार हो गई :–

01. भव्य चिकित्सालय भवन का निर्माण ।

02. विद्यालय भवन का निर्माण ।

03. पुरूष एवं महिला रोगी के लिये पृथक–पृथक आवास भवनों का निर्माण ।

04. गौशाला शेड का निर्माण ।

05. गोबर गैस प्लांट का निर्माण ।

06. आयुर्वेदिक वनस्पति, फलदार वृक्षों का रोपण, उन्नत वृक्ष, फूलों की बागवानी ।

07. वृद्धाश्रम, कर्मचारी आवास ।

08. उद्योग भवनों का निर्माण (दरी, सिलाई, चॉक, वेल्डिंग वर्कशॉप) ।

09. जल व्यवस्था, टंकी, वाहनों हेतु गेरेज आदि ।

10. कृषि साधनों की व्यवस्था ।

11. अतिथि गृह का निर्माण ।

12. भव्य गणेश मंदिर का निर्माण ।

13. खेल मैदान का निर्माण आदि ।

छोटा चिकित्सालय जो प्राथमिक उपचार केन्द्र ही था । मरीज जो चल नहीं पाते थे उनकी मरहम पट्टी उनके बिस्तर पर ही जाकर करना पड़ता था । कोमल, मोतीलाल तो करते ही थे साथ में बापट जी भी घाव को साफ करते थे । दवाईयों की जानकारी चांपा से आकर डॉ. गोदावरीश शर्मा दिया करते थे । कोमल थोड़ा बहुत जानते थे परन्तु वे कुछ दिन रहकर चले गए । मोतीलाल कोई प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्ता नहीं था । उसको दवाईयों का नाम पढ़ने में भी कठिनाई होती थी । इतने बड़े

प्रकल्प में एक योग्य चिकित्सक की आवश्यकता थी। कहा जाता है कि यदि सच्चे मन से किसी कार्य का चिंतन किया जाए तो ईश्वर भी उन्हीं की ही सहायता करता है। परमपूजनीय श्री गुरुजी कहते हैं **"God helps those who helps themselves."** अचानक एक दिन एक तरुण जिसकी आयु लगभग तीस वर्ष ही रही होगी पूछते–पूछते आश्रम आया। सन् 1977 में 16 मई को सदाशिव गोविन्द कात्रे जी की निधन हुआ। नागपुर के दैनिक तरुण भारत में कात्रे जी और आश्रम के बारे में विस्तृत विवरण छपा उसे पढ़कर वह युवक भारतीय कुष्ठ निवारक संघ में आया उसका नाम है श्री प्रभाकर सखाराम जोशी। वह 1 जून 1977 को भारतीय कुष्ठ निवारक संघ चांपा आया। आश्रमवासियों ने उनका स्वागत किया। भोजन विश्राम के पश्चात उनसे आश्रम आने का कारण पूछा। उन्होंने आश्रम में सेवा देने की इच्छा प्रगट की। श्री प्रभाकर सखाराम जोशी ने गोंदिया महाराष्ट्र से लेप्रोसी विशेषज्ञ का डिप्लोमा लिया था, यह परीक्षा उन्होंने सन् 1968 में पास की थी। सन् 1970 से 1972 दो वर्ष महाराष्ट्र सरकार में नौकरी की थी। आंध्र सीमा के एक गाँव में उनका स्थानान्तरण हो गया। वे वहाँ गए नहीं नौकरी छोड़कर अपने गाँव मोप आ गए। तरुण भारत में छपे लेख को पढ़कर वे सोंठी आ गए । उनके आने से रोगियों की सेवा उत्तम रीति से होने लगी। उनके बोलने का प्रभाव लोगों पर होने लगा। धीरे–धीरे मराठी डॉक्टर छत्तीसगढ़ी के शब्दों का उच्चारण करने लगे। भाषा पर पकड़ बनती गई। एक दिन आश्रम में एक सज्जन आए। वे बड़े ही भयभीत थे कि कहीं उनको भी कुष्ठ न हो जाए। उनके मन में कुष्ठ संसर्ग वाला रोग है यही धारणा बनी थी। डॉक्टर जोशी ने कहा – ''अतेक झन डर्रा गा सियान, छूत के बिमारी रहितिस त सबले पहिली मोला होतिस, मैं हा तो रोजेच मरीज मन ला पोटारथौं।'' भाषा पर प्रभुत्व के कारण वाणी का प्रभाव होने लगा।

जो आश्रम के सम्पर्क में आए वे तो आस्वस्त होते गए, परन्तु अन्दर ग्रामीण इलाके में कोई परिवर्तन नहीं आया था। एक वृद्ध महिला जो रोग से ग्रसित मानकर अपने बच्चों के साथ शाम को लगभग सात बजे आई। उसके पैरों में घाव था। उचित इलाज के अभाव में घाव बढ़ गया था, कीड़े पड़ गए थे। घर वालों ने उसे कुष्ठ रोग समझकर आश्रम लेकर आ गए। उसकी ड्रेसिंग की गई, साथ में 8–10 दिनों की दवा दे दी गई। पर बच्चे उसको साथ ले जाने को तैयार नहीं थे। दबाव डालने पर उसे ले जाने तैयार हुए। परन्तु रात के बारह बजे उसे अंधेरे मे आश्रम के गेट पर छोड़कर चले गए। सुबह लोगों ने देखा कि महिला गेट के पास पड़ी है लोगों ने उसे तुरन्त आश्रम में लाया। डॉक्टर जोशी, बापट जी तथा कुलकर्णी जी ने मिलकर उसकी मरहम पट्टी

की, इंजेक्शन लगाया, दवाईयाँ दी। लगभग पन्द्रह–बीस दिनों में वह महिला ठीक हो गई। एक दिन उनके घर वाले आए, उनको बताया कि आपकी माँ को कुष्ठ रोग नहीं है। घाव सूख गया है, पूरी तरह ठीक हो गई हैं, इसे घर लेकर जाइये। वह माताजी अपने बच्चों के साथ घर जाने तैयार थी। बच्चों ने जवाब दिया – आप इसको अब यहीं रख लीजिये, हमारे लिये अब यह बुढ़िया मर गई है, हमने इसका अंतिम संस्कार भी कर दिया है। बापट जी ने कहा – आपकी माँ आपके सामने जीवित खड़ी है मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ माँ के साथ इस प्रकार व्यवहार ठीक नहीं। उनके बच्चे तो इसलिए आए थे कि रातभर में बुढ़िया मर गई होगी। इसको दफना दिया गया होगा। इतने दिनों बाद उनको कौन पहचानेगा यही सोचकर वे आए थे। वे गाँव में बता चुके थे कि आश्रम पहुँचते–पहुँचते रास्ते में ही मर गई इसलिये हमनें वहीं अंतिम संस्कार कर दिया। गाँव में मुंडन, दशगात्र का आयोजन कर चुके थे। अब उसको स्वस्थ अवस्था में घर ले जाना जघन्य अपराध ही था। माताजी अपने जीवित श्राद्ध की कथा सुन रही थी। अपनी माँ को जिस प्रकार जीवित फेंक कर चले गए थे उनसे अपेक्षा करना ही अनावश्यक था। वह माताजी पन्द्रह वर्षों तक आश्रम में रही। समाज की इस क्रूरता का साक्षात्कार बापट जी ने किया।

आश्रम की गतिविधियाँ समाज को अवगत कराने लायक हो गई थीं। अतः स्मारिका के माध्यम से सन्देश देने का विचार किया गया। सन् 1978 में एक छोटी सी स्मारिका निकाली गई जिसमें चिकित्सालय भवन का मानचित्र डाला गया। इसका सकारात्मक परिणाम हुआ। अनेक हितचिंतक सहयोग करने तैयार हुए। धीरे–धीरे राशि जमा होने लगी। तीन बड़े कुँए, ट्यूबवेल, गौशाला का शेड बन गया।

लघु उद्योगों का काम भी गति पकड़ रहा था। कलकत्ता के श्री डालमिया जी ने पचहत्तर हजार का सहयोग किया। बापट जी उदारमना, जिज्ञासु विचारों के व्यक्ति थे। भंडारा के एक व्यक्ति आए उनका नाम था श्री नारायणराव राजहंस, वे कृषि वैज्ञानिक थे। वे अपने वास्तुविद बंधु श्री माधव एकनाथ राजहंस जी के साथ भारतीय कुष्ठ निवारक संघ चांपा पधारे। उनको केन्द्र शासन द्वारा कृषि मित्र पुरस्कार मिला था। राजाभाऊ और बापट जी को उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिये। रिंग डालकर कुँआ बनाना, केंचुआ खाद, नर्सरी, फलोद्यान, औषधि पौधों का विकास, गोपालन से औषधि, जैविक कृषि आदि जिसका लाभ अभी भी आश्रम को हो रहा है।

श्री अरुण खानखोजे जी लगभग प्रत्येक रविवार को आश्रम में जाते थे। इस बार एक कार्यकर्ता को साथ लेकर गए। उन्होंने कहा संस्था के सचिव आएंगे

उनसे अपनी भेंट होगी। थोड़ी देर में एक मजदूर अपना पसीना पोंछते हुए ऊपर आया। अरुण जी उन्हें देखकर खड़े हुए। साथ गए कार्यकर्ता का परिचय कराया। उस मजदूर ने अत्यंत विनम्रता के साथ अतिथि का स्वागत किया। वे मजदूर ही दामोदर गणेश बापट थे, पच्चासी एकड़ भूमि में फैले विशाल आश्रम के शिल्पकार। चाय पी रहे थे तभी फोन की घंटी बजी, मुंबई से फोन आया था। बापट जी उनसे धाराप्रवाह अंग्रेजी में बात कर रहे थे। बात समाप्त होते ही अरुण जी ने कहा – एन.टी.पी.सी. की महिलाएं आश्रम आने वाली हैं जिसमें जनरल मैनेजर की पत्नी भी आने वाली थी। बापट जी ने अरुण जी को बिलासपुर फोन करने कहा – बापट जी ने लगभग दस–बारह फोन नंबर बताए। बापट जी को देश के कम से कम तीन–चार सौ कार्यकर्ताओं के फोन नंबर एवं पते कंठस्थ थे। बापट जी यदि बाजू में बैठे हैं तो कोई भी कार्यकर्ता फोन डायरी देखने का परिश्रम नहीं करता था। अति निम्न स्तर, रूपरंग के व्यक्ति का व्यक्तित्व इतना विराट होगा इसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।

भूखे एवं भीख माँगने वाले भी आश्रम में भोजन करना पसंद नहीं करते हैं परन्तु बापट जी कुष्ठ रोगियों के हाथों बना भोजन ही करते थे। बापट जी का आवास भी अतिसामान्य सार्वजनिक स्थान पर था। आश्रम परिसर में वे कभी चप्पल या जूता पहनकर नहीं घूमें। जब कुष्ठ रोगियों के पैरों में जूता–चप्पल आ गया तो उन्होंने आश्रम में ही बनी टायर की चप्पल पहनना स्वीकार किया।

बापट जी को आप कोई भी वस्तु देंगे तो वे ले तो लेते थे परन्तु उपयोग के पूर्व उसे देखते थे कि यह कुष्ठ पीड़ितों के स्तर से ऊँचा तो नहीं है। आश्रम के अन्दर आचरण एवं व्यवहार तथा वस्तुओं के उपयोग की सतर्कता स्पष्ट झलकती थी। आश्रम में सर्वप्रथम टी.व्ही. आया तो उन्होंने उसे कुष्ठ पीड़ितों के कक्ष में लगाया। एक सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यकर्ता को किस प्रकार रहना चाहिये ? चिन्तन की दिशा क्या होनी चाहिये ? यह बापट जी के व्यवहार से सीखने का प्रयास करना चाहिये।

श्री दामोदर गणेश बापट जी किसी काम से नागपुर गए। डॉक्टर हेडगेवार भवन में परमपूजनीय सरसंघचालक बाला साहेब देवरस जी से आशीर्वाद लेने पहुँचे। हाल चाल पूछने के बाद बालासाहब जी ने कहा–''अरे बापट–हे घे गरम कापड़, मी बिलासपुर ला येत आहो, शिववून, घालुन मला दाखव, नाहीं तर तूझं काय, कोणी माघितली तर चड्डी पण देवून देशिल !'' वह कुरता बापट जी ने चिथड़े उड़ते तक आशीर्वाद समझकर पहना।

बापट जी को आश्रम में रहकर कार्य करने वाले योग्य व्यक्ति नहीं मिल पा रहे थे। बाह्य सहयोग अवश्य मिलता था। अब कम से कम छुआछूत का मानसिक

आतंक नहीं था । लोग आश्रम में कुछ दिन रहकर अपना समय बिताने लगे थे । आश्रम का सकारात्मक सन्देश सर्वदूर फैल रहा था परन्तु आश्रम के बच्चे जिस विद्यालय में पढ़ते थे, वहाँ पर यह संस्कार अभी भी पहुँचा नहीं था । गाँव के शासकीय विद्यालय में बापट जी जो चाहते थे वह संस्कार भी मिलना सम्भव न था । उनकी चिंता थी कि शीघ्र ही अपना विद्यालय बने । इस कार्य में श्री अरुण खानखोजे जी ने विशेष रुचि ली । एन.टी.पी.सी. और एस.ई.सी.एल. जैसे सार्वजनिक उपक्रमों से आर्थिक सहयोग लेकर भवन निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ । भवन का वास्तु श्री माधव एकनाथ राजहंस जी भिलाई ने खड़ा किया । इस विद्यालय को छत्तीसगढ़ शासन एवं विद्याभारती जैसी संस्था से मान्यता मिल गई । आश्रम छात्रावासी बच्चों के अलावा आस–पास गाँव के विद्यार्थी भी पढ़ने आते हैं ।

''सुशील बालक गृह'' बच्चों का छात्रावास, यह भवन प्राचीन ग्रामीण पद्धति से बना था । कई जगह से पानी टपकता था, उसके भी नवीनीकरण की योजना बनने लगी । बापट जी के अथक प्रयास से सुशील बालक गृह का भवन बनकर तैयार हो गया । बच्चों के भोजन, आवास, वस्त्र, शिक्षा आदि की व्यवस्था हेतु एक अभिनव योजना बनी थी । गाँधी जी की पुण्यतिथि दिनांक 30 जनवरी से 13 फरवरी (15 दिनों तक) कुष्ठ पखवाड़ा मनाया जाता है और इस उपलक्ष्य में अब दो रुपये की एक टिकट निकालकर सभी विद्यालय के बच्चों को भेजा जाता है । ''यह छात्रावास बच्चों का, बच्चों द्वारा, बच्चों के लिये चलाया जाने लगा ।'' इसके द्वारा जन जागरण का कार्य भी चलने लगा । यह योजना सफल हुई । देश के अनेक विद्यालयों से सम्पर्क करके छात्रावास चलाने के लिये कुछ मात्रा में धनराशि एकत्रित करने का अभियान और तेज किया गया ।

रोगी में आत्मविश्वास, जीने की इच्छाशक्ति, उद्यमिता, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, सामाजिक समरसता, राष्ट्रभक्ति आदि के प्रेरणास्त्रोत दामोदर गणेश बापट जी हैं । श्री दामोदर गणेश बापट जी की ऊर्जा, चिन्तन, सक्रियता, शक्ति का स्त्रोत क्या है ? उनकी अपनी प्रार्थना एवं प्रतिज्ञा तो है ही साथ ही अनेक महापुरुषों द्वारा आश्रम को भेंट एवं उनका आशीर्वाद है । परमपूजनीय श्री गुरुजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से ही यह आश्रम प्रारंभ हुआ है । इसके अलावा परमपूजनीय बालासाहब देवरस जी, मा. रज्जु भैय्या, माननीय शेषाद्री जी, मा. भाऊराव जी देवरस, दत्तोपंत ठेंगड़ी जी, बालासाहब देशपांडे जी, सुदर्शन जी, मोरोपंत पिंगले जी, नानाजी देशमुख, अशोक सिंघल जी, पूज्य स्वामी सत्यमित्रानंद जी महाराज, स्वामी रामभिक्षुक महाराज, स्वामी अमरानंद जी महाराज, सरसंघचालक मा. मोहन भागवत

जी, सरकार्यवाह भैय्या जी जोशी, माननीय मदनदास जी, राष्ट्रसेविका समिति की प्रमुख संचालिका वन्दनीया ऊषाताई चाटी जी एवं वन्दनीया प्रमिलाताई मेढ़े, संघ के लगभग सभी अधिकारी, अनेक समाजसेवियों, अधिकारियों, राजनीतिज्ञों का आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं संस्था को प्राप्त हुईं।

माननीय भाऊराव जी के आगमन पर बहुत बड़ा कार्यक्रम रखा गया। बड़ी सार्वजनिक सभा थी। मुख्यमंत्री सुन्दरलाल पटवा जी, खाद्य मंत्री बलिहार सिंह जी, वन मंत्री ननकीराम कँवर जी तथा अनेक प्रशासनिक अधिकारी पधारे थे। भाऊराव जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा – ''संघ की प्रेरणा से अनेक सेवा कार्य चल रहे हैं उनमें से एक भारतीय कुष्ठ निवारक संघ भी है। बापट जैसे कार्यकर्ता पूरा समय देकर कार्य कर रहे हैं, समाज के लोग भी इसमें सहयोग कर रहे हैं। समाज के सहयोग के बिना इस प्रकार का काम करना असम्भव ही है। ऐसे समाजसेवा के मार्ग में कुछ अड़चनें आती है जिसका समाधान शासन–प्रशासन द्वारा भी किया जाता है।''

मुख्यमंत्री जी ने शासन की ओर से हर–सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया। इस कार्यक्रम का संचालन श्री अरुण खानखोजे कर रहे थे। आभार प्रदर्शन करते हुए संस्था अध्यक्ष श्री अरुण गोवर्धन जी ने संस्था को भूमि की आवश्यकता का निवेदन किया। वन्दे मातरम गायन संध्या माहुलीकर (श्रीमती संध्या देवले) ने किया।

सार्वजनिक कार्यक्रम के पश्चात छात्रावास के बच्चों से बातचीत की। भोजनोपरान्त कार्यकर्ताओं से बातचीत करते समय सुझाव दिया कि अपने छात्रावास की बालिकाएं बड़ी हो रही हैं उनके लिये पृथक आवास व्यवस्था का विचार करना चाहिये। माननीय भाऊराव जी ने समूचे आश्रम परिसर का अवलोकन किया।

आश्रम के बढ़ते स्वरुप के लिये भूमि की आवश्यकता भी थी। बापट जी ने भूमि प्राप्त करने के लिये सभी शासकीय प्रक्रिया पूर्ण कर ली। एक आवेदन पत्र जिलाधीश बिलासपुर कार्यालय में लगा दिया। आवेदन बम्हनीडीह ब्लॉक में जमीन की जानकारी के लिये आ गया। बापट जी किसी भी काम के लिये संबंधित कर्मचारी अधिकारी से ही चर्चा करते थे। जमीन के काम के लिये बापट जी सीधे बम्हनीडीह बी.डी.ओ. ऑफिस गए। बैठक चल रही थी इसलिये बापट जी पेड़ की छाया में खड़े हो गए। उसी समय कमिश्नर बासवान की गाड़ी आकर रुकी। उनका ध्यान बापट जी की ओर गया। वे गाड़ी से उतरकर सीधे बापट जी के पास गए और पूछा–आप यहाँ कैसे खड़े हैं ? बापट जी ने कहा बम्हनीडीह के बी.डी.ओ. से काम है। आप थोड़ा रुकिये मैं उसको आपके पास भेजता हूँ। कमिश्नर साहब ने अन्दर आते ही पूछा – बम्हनीडीह का बी.डी.ओ. कौन है ? जाओ बाहर बापट जी खड़े हैं क्या काम है पता

करो।

बी.डी.ओ. को लगा कि बापट जी ने शिकायत कर दी। वह दौड़कर बाहर गया और बोला – बापट जी मैं तो आप का ही काम कर रहा था, आपने मेरी शिकायत कर दी .....

अरे भैय्या मैंने कोई शिकायत नहीं की, उन्होंने मुझे देखा और मेरे पास आ गए और पूछा – क्या काम है ? मैंने उन्हें बता दिया आपसे काम है। घबराइये मत आपकी कोई शिकायत नहीं होगी। बी.डी.ओ. की जान मे जान आई। वह कागजात लेकर चले गया।

बापट जी के मन में भाऊराव जी का सुझाव स्थाई हो गया। बालिकाओं के पृथक छात्रावास एवं पढ़ाई की व्यवस्था का चिंतन प्रारंभ हुआ। बापट जी ने राष्ट्र सेविका समिति से बिलासपुर में सम्पर्क किया। समिति की प्रमुख कार्यकर्ता सुश्री सुलभाताई देशपांडे जी बताती हैं – बापट जी को मैंने सन् 1974 में देखा था परन्तु सन् 1994 में उनसे घनिष्ठ सम्पर्क आया। वे बिलासपुर आए थे। वे चाहते थे कि कन्या छात्रावास का संचालन स्वतंत्र रुप से हो वह भी महिलाओं के माध्यम से। आप समिति का काम करती हैं। कुष्ठ पीड़ितों की स्वस्थ बालिकाओं का छात्रावास आपको चलाना चाहिये।

हम लोगों ने उनकी बात सुन ली उसे अधिक गंभीरता से नहीं लिया। वास्तव में हम छात्रावास चलाने का साहस नहीं जुटा पा रही थीं। बापट जी के मन में कोई विषय आ जाए तो उसके पीछे पड़ जाते थे। वे धुन के पक्के और स्वभाव के आग्रही थे। वे हमारी ओर से कोई विशेष उत्साह देखकर रुके नहीं। नागपुर अहिल्यादेवी मंदिर में जाकर माननीया प्रमिलाताई मेढ़े जी के सामने यह प्रस्ताव रखा और अंत में 16 फरवरी 1997 को ''तेजस्विनी समारोह'' के लिये जब वे बिलासपुर आई तब बापट जी ने यह अवसर नहीं छोड़ा। उनके सामने हमें बिठाकर छात्रावास खोलने का निर्णय हमसे करवाकर ही दम लिया। उनकी इस अदम्य इच्छाशक्ति के कारण ही 13 जुलाई 1997 को ''तेजस्विनी छात्रावास'' का शुभारंभ हुआ। हम पिछले बाईस वर्षों से उनकी इस तीव्र ऊर्जा शक्ति के कारण ही छात्रावास चला पा रहे हैं।

बापट जी ने केवल छात्रावास ही नहीं खुलवाया अपितु दिव्य सुरक्षाकवच के रुप में छात्रावास का संवर्धन एवं संरक्षण करते रहे। छात्रावास के वर्तमान भवन के भूमिपूजन का कार्य हो अथवा छात्रावास के बच्चियों की कुछ समस्या हों, उन्होंने सदैव सकारात्मक सोच के साथ इन समस्याओं को सुलझाया। छात्रावास चलाते–चलाते उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का दर्शन हमें होता रहा तथा हमें भी कार्य

करने की प्रेरणा एवं दिशा मिलती रही।

एक समस्या हमारे सामने खड़ी थी। हमारे छात्रावास से निकली एक छात्रा ने ईसाई युवक से विवाह का निर्णय लिया। यह सुनकर हम सब चिंतित हुए, क्योंकि कुष्ठ परिवार की ये बालिकाएं ईसाई आश्रमों में न जाएं, हिन्दू संस्कार लेकर ही पले बढ़ें यही सोचकर तेजस्विनी छात्रावास प्रारंभ किया। वहाँ से संस्कारित होकर यह पहली बालिका उसी जॉल में फँसे, यह हमें मान्य नहीं था। एक प्रकार से हमारे दिये गए संस्कार को आह्वान था। साल भर यह प्रकरण उसी उलझन में अटका रहा। माननीय बापट जी ने थोड़े शब्दों में समझाकर इस विवाह की अनुमति दे दी। हमनें कहा कि एक हिन्दू लड़की ईसाई परिवार में जाने से उस परिवार के संस्कारों में अंतर आएगा। बापट जी ने कहा–चिंता न करो, उस परिवार की अगली पीढ़ी हिन्दू ही होगी। उनकी इस सकारात्मक सोच की दिशा ने नए दृष्टिकोण से सोचने को बाध्य किया।

छात्रावास के भवन और भूमि की समस्या को भी इसी प्रकार हल किया। माननीय श्री गोपाल व्यास जी सांसद बने। सांसद मद से प्रथम निधि बापट जी ने तेजस्विनी छात्रावास को दिलवाई। कई संकटों को मात देकर भूमिपूजन कार्यक्रम हुआ। उसमें माननीय व्यास जी बोले – ''मेरे लिये माननीय बापट जी के मुखारविंद से निकले शब्द अमृत तुल्य हैं।'' बापट जी के शब्दों का मूल्य हमें उस दिन पता चला।

बापट जी को व्यक्ति की परख कितनी थी इसका उदाहरण मैं देना चाहुँगी। यह छात्रावास कुष्ठ पीड़ितों की स्वस्थ बच्चियों के लिये बनाया गया था। बापट जी एक दिन एक कुष्ठ पीड़ित बच्ची को लेकर आए जिसकी दवाई चल रही थी। हम सोच में पड़ गए एक अनपढ़ कुष्ठ पीड़ित बच्ची को रखना कि नहीं रखना। हमारा स्वर नकारात्मक था। बापट जी ने कहा – इस बालिका को रास्ते पर तो नहीं छोड़ा जा सकता ? आगे चलकर यह बालिका तुम्हारे छात्रावास का सब काम करेगी। डरो मत, निश्चिंत रहो, मैं कह रहा हूँ उस पर विश्वास करो। उनके इस आग्रह को हम टाल नहीं सके। आज वही लड़की छात्रावास की सारी जिम्मेदारियाँ सँभाल रही है। अभी वह कक्षा बारहवीं में पढ़ रही है और आगे वह कॉलेज में पढ़ने की इच्छा रखती है। आदरणीय बापट जी द्वारा आत्मविश्वास से लिया गया निर्णय कितना सार्थक है। आज उसका महत्व एवं मूल्य समझ में आता है।

उनके कार्य का आँकलन उन्हें देखकर नहीं बल्कि उनकी कर्मस्थली के दर्शन से आता है। उनकी विशेषता यह है कि मुंबई–पूना से आने वाले लोगों को वे आग्रहपूर्वक छात्रावास दिखाने अवश्य भेजते हैं। वे उस वट वृक्ष के समान हैं जिस पर

नाना कीट पतंग, पशु–पक्षी से लेकर हर पथिक को आसरा मिलता है एवँ सुखद छाया में दुःख से झुलसे व्यक्ति को शांति एवं विश्राम मिलता है।

करूणा, दया, प्रेम, आत्मीयता से ओतप्रोत इस ऋषितुल्य व्यक्ति की जीवनडोर ने अपने आस–पास अनेक लोगों को बाँधकर रखा है। हम जिन्हें नकारते हैं उन्हें वे स्वीकारते हैं, हृदय से लगाते हैं उसे अपना बनाते हैं।

बापट जी ने जिस धैर्य से कार्यकर्ताओं को सँभाला वह असीम अनन्त है। एक प्रसंग में उनके धैर्य का परिचय मिलता है। श्री अरूणजी, प्रदीप कुमार सराफ जी, रविन्द्र सराफ जी आदि कार्यकर्ता बैठे थे। एक कुष्ठरोगी बहुत ही अभद्र भाषा में गालियाँ दे रहा था। अरूणजी ने कहा ये कैसा है। गाली दे रहा है इसको चुप कराया जाये। बापट जी एकदम शान्त स्वर में बोले – अरे यार ! अपने को कौन सी गाली लगने वाली है, उसको चिल्लाने दो, उसकी भड़ास निकल जाएगी थोड़ी देर में ठीक हो जाएगा।

वह जोर–जोर से चिल्ला रहा था – मैं भीख माँगकर खा लुँगा अब मैं जा रहा हूँ।

बापट जी बोले – अरे यार भीख माँगना ही है तो मैं भी साथ चलता हूँ। तुम एक पैर से लँगड़े हो मैं एक आँख से अँधा हूँ। ये आश्रम तो तुम्हारे लिये है जब तुम ही नहीं रहोगे तो मेरा क्या काम है ? ... बापट जी की बात सुनकर वह एकदम नम्र हो गया। बापट जी ने उसको तम्बाखु खिलायी वह चुपचाप चला गया।

कार्यकर्ताओं के साथ मातृवत एवं भ्रातृवत व्यवहार बापट जी की विशेषता थी। आश्रम को एक नई मोटर सायकल प्राप्त हुई थी। बापट जी कभी मोटर सायकल चलाते नहीं थे। वे तो सायकल पर ही चलते थे। मोटर सायकल समीर नाम का कार्यकर्ता चलाया करता था। दो–चार दिनों में ही उन्होंने मोटर सायकल एक दीवार पर ही दे मारी। मोटर सायकल का सामने का हिस्सा बुरी तरह टूट गया। गाड़ी पर भोला एवं समीर दोनों थे। दोनों ने डरते–डरते, डाँट खाने और सजा भुगतने की पूरी तैयारी और मानसिकता से बापट जी को यह बताया। पूरी घटना सुनने के बाद उनकी पहली प्रतिक्रिया थी ''तुम लोगों को तो कुछ नहीं हुआ न ! कहीं लगा तो नहीं? बापट जी ने दोनों कार्यकर्ताओं के शरीर का निरीक्षण किया। थोड़ी खरोंच आई थी। समीर ने डबडबाई आँखों से कहा–महाराज गलती हो गई।'' जवानी में गलतियाँ होती है, तुम लोगों से और भी गलतियाँ होंगी। पर याद रखो एक गलती दूसरी बार होगी तो पिटाई होगी। चलो अस्पताल !

बापट जी दोनों को अस्पताल लेकर गए। जख्मों पर मरहम पट्टी अपने

सामने करवाई। दोनों कार्यकर्ता भयभीत आतंकित, सजा भुगतने की मानसिकता से सो गए थे परन्तु विरासत में वे दोनों बापट जी की ममता, वात्सल्य तथा हृदय में बापट जी के प्रति अपार श्रद्धा लेकर लौटे। आज भोला और समीर उत्तम वाहन चालक हैं। समीर कई वर्षों तक परमपूजनीय बाला साहब जी का वाहन चला चुका है। आज दोनों आश्रम के प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

अनेक सामाजिक संस्थाओं, व्यक्तियों, शासन के सतत् प्रयासों के बाद भी क्या कुष्ठ रोग के बारे में भ्रम दूर हो गया ऐसा विश्वास के साथ नहीं कहा जा सकता। आश्रम के द्वारा चलाये जाने वाला जन–जागरण अभियान युद्ध स्तर पर चल रहा था। फिर भी बापट जी को यदा–कदा कटु प्रसंगों का सामना करना ही पड़ता था। बापट जी साल–दो–साल में एक चक्कर जशपुर का लगाते थे। रामविलास और हीरामणी के साथ–साथ अपने आत्मीय लोगों से भेंट करके आते थे। एकबार वे बिलासपुर से सीधे रायगढ़ और वहाँ से जशपुर जाने के लिये निकले। बिलासपुर के एक कार्यकर्ता ने कहा – मेरा भाई रायगढ़ रेल्वे स्टेशन के पास ही है। आप दिन के बारह बजे तक पहुँचेंगे। भोजन उसके घर करके जाइये। मैं फोन कर देता हूँ। वह भी संघ की शाखा में गया है। संघ को जानता है।

बापट जी आश्रम में भोजन पैकेट के लिये बोलने वाले थे परन्तु वे बोले नहीं। टीटलागढ़ पैसेंजर लगभग बारह बजे रायगढ़ पहुँचती थी । वे सीधे कार्यकर्ता के घर गए। बापट जी का इतिहास सुनकर बाहर से चाय मँगाकर पिलाई और बिदा कर दिया। बापट जी चुपचाप नमस्कार करके पैदल ही संघ कार्यालय निकल गये। कार्यालय की चाबी श्री प्रभाकर राव तामस्कर जी के घर रहती थी। वे कार्यालय खोलकर विश्राम करने ही वाले थे, तामस्कर जी ने भोजन पर आमंत्रित किया। बापट जी ने अपने साथ हुई घटना उस समय नहीं बताई। रात्रि भोजन भी तामस्कर जी के घर ही हुआ। रात में जशपुर जाने वाली बस में उन्हें श्री लखनलाल चौबे जी ने बिठाया। सभी बस के मालिक, कंडक्टर, ड्रॉयवर श्री चौबे जी को पहचानते थे। उन्हें विधायक सीट पर बिठाया और कहा इनसे पैसा नहीं लेना।

बापट जी कहते हैं – कुष्ठ रोग पर पूर्ण नियंत्रण के बाद भी कुष्ठ शब्द बदनाम ही रहेगा। हमको पढ़े–लिखे सभ्य लोगों के मन को दृढ़ और संस्कारित करना होगा। अभी तक तो ''दीया तले अंधेरा है''।

मरीजों की संख्या बढ़ रही थी। एक बड़े चिकित्सालय भवन की आवश्यकता का अनुभव प्रतीत होने लगा। डाक्टर जोशी एक छोटे से कमरे में चिकित्सा करते थे। भव्य भवन का नक्शा सन् 1977 में ही बन गया था जिसका

आश्रम स्थित संत गुरुघासीदास चिकित्सालय

आश्रम स्थित श्री गणेश जी का मंदिर

निर्माण कार्य सन् 1990 के दशक में आरंभ हो सका। निर्माण का खर्च एकत्रित करने के लिये बापट जी को मुंबई, नागपुर, डोंबिवली , पूना आदि शहरों में जाना पड़ा उन्हें कई चक्कर लगाने पड़े। 14 जनवरी सन् 1999 को 30 बिस्तरों का चिकित्सालय बनकर तैयार हो गया। संघ के अ.भा. कार्यकारिणी के सदस्य मा. गो. वैद्य (बाबूराव जी) द्वारा भवन का लोकार्पण हुआ। चिकित्सालय का नाम छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध समाज सुधारक संत गुरुघासीदास जी के नाम पर रखा गया।

आश्रम में उद्योग भवन, नारी निकेतन, कात्रेजी की समाधि, माधव–सागर, गौशाला, कार्यालय भवन, पोस्ट ऑफिस, अन्न भंडारण भवन, कर्मचारी भवन आदि का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ। बापट जी की योजना थी कि आश्रमवासियों के लिये एक धार्मिक स्थान बन जाए। आस–पास के गाँव में ऐसा कोई मंदिर नहीं है जहाँ लोग आ सकें। एक भव्य मंदिर का निर्माण आश्रम परिसर में ही किया जाये, कम से कम इसी बहाने आस–पास गाँव के लोग आएंगे। एक दानदाता मिले उनकी इच्छा थी कि एक मंदिर निर्माण हो। वे मंदिर के लिये ही दान देना चाहते थे। इसी शर्त पर उन्होंने दान किया। स्थान देखकर चिकित्सालय भवन के सामने पूर्वाभिमुख मंदिर के लिए 26 अगस्त सन् 1998, बुधवार, भाद्रपद मास चतुर्थी, शुक्ल पक्ष, विक्रम संवत 2055 को भूमिपूजन हुआ। मंदिर के वास्तु के लिये श्री माधव एकनाथ राजहंस जी को बुलवाया गया। उनकी देखरेख में 22 नवम्बर से निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ। इस मंदिर के लिये जो पत्थर लगने थे वे उसके लिए बापट जी स्वयं राजस्थान गए। भव्य मूर्ति गणेश जी की बनें इसके लिये वे स्वयं मुंबई गए और प्रमोद जोशी से मिले। अष्ट धातु की सुन्दर मूर्ति बनकर सड़क मार्ग से आश्रम पहुँच गई। इसे लाने का दायित्व डोंबिवली के श्री बापू कुंटे जी को दिया गया।

04 दिसम्बर 2001 को गणेश चतुर्थी के दिन भव्य आयोजन में प्राण–प्रतिष्ठा समारोह सम्पन्न हुआ। आस–पास ग्राम के हजारों की संख्या में भक्त उपस्थित थे। बापट जी का संकल्प, संयम, सूझबूझ, दृढ़ इच्छा शक्ति, विश्वास, कार्यकुशलता एवं परिपक्वता का यह जीवंत उदाहरण है।

बापट जी अब सत्तरवें वसंत की ओर अग्रसर हो रहे थे। बाहरी कार्य एवं पत्रलेखन के लिये एक सहयोगी की आवश्यकता अनुभव होने लगी। दामोदर गणेश बापट जी का पत्र–संसार व्यापक था, विस्तृत था। कार्य–विस्तार को देखते हुए उनको समयाभाव का अनुभव होने लगा। कार्यालय का काम तो नाना मराठे और देशमुख जी देखते थे। चिकित्सालय का काम डॉक्टर जोशी की तरफ था। एक अमेरिका के सुप्रसिद्ध अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉक्टर अप्पा जी कृष्णराव जगदाले चांपा

में आए। पूरे क्षेत्र में यह समाचार फैल गया कि कात्रेनगर चांपा में अमेरिका से डॉक्टर आया है।

अपना भारत देश विश्व में अजूबा है। सर्दी खाँसी बुखार की दवा लेने, इलाज कराने अमेरिकन डॉक्टर के पास आने लगे। डॉक्टर जगदाले यहाँ की दवाईयों के नाम भी जानते नहीं थे। अंत में वे मरीजों को कहने लगे मैं छोटा डॉक्टर हूँ बड़ा डॉक्टर जोशी अन्दर बैठा है वहाँ मिलिये। लोग कहने लगे अमेरिका से आया है सर्दी खाँसी की दवा भी नहीं जानता।

चांपा के डॉक्टर हरी सिंह चन्देल अस्थि रोग विशेषज्ञ और डॉक्टर जगदाले ने मिलकर सैकड़ों मरीजों का सफल ऑपरेशन किया। इंडिया टुडे ने डॉक्टर चंदेल जी पर एक विस्तृत लेख छापा। डॉक्टर चंदेल कहते हैं कि डॉक्टर जगदाले जी से मुझे बड़ा लाभ हुआ। डॉक्टर जगदाले चार वर्षों तक चांपा में रहे उनका देहान्त भारत में ही हुआ।

प्रत्युत्पन्नमति के अनेक किस्से बापट जी के प्रचलित हैं। एक बार स्वामी जी के साथ वे जशपुर जा रहे थे। स्वामी जी को प्रसाधन की अत्यंत आवश्यकता थी। जीप रायगढ़ शहर पार हो रही थी। बापट जी ने जीप एक होटल के पास रुकवाई। काऊण्टर पर जाकर महाराष्ट्र के दो काल्पनिक नाम खोजने लगे। स्वामी जी जब तक प्रसाधन का उपयोग करके वापस नहीं आए तब तक वे काल्पनिक नाम खोजते रहे। स्वामी जी के आने पर उन्होंने कहा – स्वामी जी चार–पाँच होटल खोज चुके उनका पता नहीं चल रहा है। अब हमें तुरन्त निकलना चाहिये। जशपुर हम समय पर नहीं पहुँच पाएंगे। बापट जी ने धन्यवाद दिया और निकल गए जीप में बैठते ही स्वामी जी बोले – अरे बापट मैं तो तुझे अवलिया समझता था रे ! तू तो बड़ा चतुर निकला।

बहुत पहले संघ का एक वर्ग लगा था। अधिकारियों को स्टेशन से लाने की जिम्मेदारी बापट जी को दी गई। वे स्टेशन के गेट पर खड़े थे। अधिकारियों को कोई दिखा नहीं। बाहर गेट पर खड़े बापट जी को कुली समझकर उन्हें सामान उठाकर चलने को कहा। बापट जी ने दोनों अधिकारियों का बैग सिर पर उठाया और वर्ग स्थल पर आए। अधिकारी वर्ग व्यवस्था में लगे कार्यकर्ताओं पर झल्लाए – किसी को आपने स्टेशन पर भेजा नहीं, कुली से सामान उठवाना पड़ा। कार्यकर्ताओं ने कहा जिसे आप कुली समझ रहे हैं वही आपको लेने गए थे, ये हैं दामोदर गणेश बापट।

बापट जी के कार्य को देखकर कई सामाजिक संस्थाओं ने उनको बुलाना प्रारंभ किया। एक कार्यक्रम का आयोजन डॉक्टर मेहता जी ने राघवेन्द्रराव सभा गृह में किया था। आमंत्रण पत्र में बापट जी का विस्तृत वर्णन किया गया था। अधिकांश

लोग सूट–बूट टाई लगाकर आए थे। मंच पर बापट जी को देखकर बड़ी निराशा हुई। कार्यक्रम का संचालन आधी हिन्दी आधी अंग्रेजी में हुआ। जब बापट जी को बुलाया गया तो संचालनकर्ता ने हिन्दी में संबोधित किया। बापट जी ने अंग्रेजी साहित्यिक भाषा में संबोधन प्रारंभ किया तो सभी आगंतुक अंग्रेजी पूरी समझ रहे हैं ? इसका प्रहसन करने लगे। बापट जी ने अपनी योग्यता, ज्ञान एवं व्यवहार की सरलता से सामान्य से सामान्य एवं उच्च से उच्च वर्ग वर्गों में अपना स्थान बनाया था। यही कारण है कि जांजगीर लोकसभा के कांग्रेसी सांसद डॉ. प्रभात मिश्रा जी ने राम मंदिर बिलासपुर में, एक सम्मान समारोह में बापट जी के कार्यों की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

दामोदर गणेश बापट एक मौन तपस्वी। कार्यकर्ताओं को साथ लेकर चलने वाले सर्वसमावेशी व्यक्तित्व। जबसे आश्रम का कार्य अपने हाथों में लिया तभी से उन्हें ज्ञात था कि यह कार्य कोई व्यक्ति अकेले नहीं कर सकता। अतः उनका ध्येय था – ''सब समाज को लिये साथ में आगे है बढ़ते जाना।'' जब तक समाज की आत्मीयता, सक्रियता तथा सहयोग नहीं होगा तब तक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती।

आश्रम की आंतरिक व्यवस्था तो प्रमुख कार्यकर्ता देखने लग गए थे। वरवणकर जी के जाने के बाद नई टीम आ गई थी। खेती का काम समीर जी, गौशाला श्री जयधर जी, बागवानी गोवर्धन दीवान, वाहनों की देखरेख भोला जी, विद्यालय की देखरेख श्री रविन्द्र सराफ चांपा से आकर करने लगे। चिकित्सालय प्रभाकर जोशी जी, कार्यालय देशमुख जी, छात्रावास दीपक जी, सिलाई केन्द्र विनोद जी, दरी उद्योग जगदीश एवं देवांगन, भंडार एवं हालर का काम जगेश्वर जी देखते हैं। अन्नपूर्णा भवन का सारा काम तीन देवियाँ सम्हालती हैं, बदाला बाई, नीर बाई एवं रुखमिन बाई। स्वच्छता विभाग श्रीमती भगवंतिन बाई (चाची) की ओर है। किसी को भी काम बताने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

बापट जी की सादगी, मिलनसारिता से प्रभावित होकर एक व्यक्ति सेवानिवृत्त होकर वानप्रस्थी जीवन बिताने आश्रम में आ गए। उनका नाम था श्रीधर हरी काले। वे रिजर्व बैंक में काम करते थे। डोंबिवली के रहने वाले थे वे पत्र व्यवहार के साथ–साथ शासकीय कार्य भी देखा करते थे। अनेक वर्षों तक उन्होंने निःस्वार्थ भाव से अपनी सेवाएं दी। बाद में उनका शरीर थक गया तो वे वापस डोंबिवली चले गए वहीं उनका निधन हो गया।

आश्रम में जो भी रोगी आया उसको ठीक करके आश्रम के काम में बापट जी ने लगा दिया। आश्रम के सभी आयामों के प्रभारी आश्रम में चिकित्सा प्राप्त कर

ठीक हुए लोग हैं। एक प्रकार से बापट जी ही उनके माता पिता हैं। छात्रावास के कई विद्यार्थी पढ़कर योग्य बनकर बाहर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। एक विद्यार्थी श्री जयकिशन जी आश्रम में पढ़कर अरुणाचल प्रदेश के लोअर सुबनसिरी जिला, जीरो के पास याजाली में विवेकानन्द केन्द्रीय विद्यालय में क्रीड़ा अधिकारी है। वे बताते हैं कि – ''जब मैंने अपनी आँखे खोली तो माता–पिता के रुप में बापट जी को पाया। मैंने अपने जन्म देने वाले माता–पिता को नहीं देखा। बापट जी ने मेरा पालन–पोषण किया है। नहलाना, कपड़ा पहनाना, बाल ठीक करना आदि काम बापट जी ही करते थे। मेरा विवाह भी उन्होंने ही किया। आज मेरी दो लड़कियाँ है। मेरी पत्नी भी मेरे साथ ही विद्यालय में काम करती है। मैं छुट्टियों में अपने घर अर्थात् आश्रम ही जाता हूँ।''

बापट जी न जाने कितने बच्चों के माता–पिता हैं। उनके एक मित्र हैं श्रीधर पांडुरंग क्षीरसागर, वे अकोला में रहते हैं। बचपन में वे मूर्तिजापुर महाराष्ट्र में रहते थे। वर्तमान में वे अकोला में हैं। उनके बच्चे की फीस बापट जी ही देते रहे। महाविद्यालय की पढ़ाई का व्यय भी उन्होंने उठाया। उनका लड़का आज अच्छे पद पर कार्यरत है।

बापट जी को काम से कई स्थानों पर जाना पड़ता था। कई कार्यकर्ताओं के घर जाते थे तब अपने साथ आश्रम से फल सब्जी लेकर जाते थे। एन.टी.पी.सी. में एक कार्यकर्ता थे अरुण खानखोजे, वे इंजिनियर थे। आश्रम के बच्चों के लिये कपड़े, दवाईयाँ, आर्थिक सहयोग एवं समाज के लोगों को आश्रम दिखाने के लिये वे ले जाया करते थे। कालोनी से घरों में बची हुई दवाईयाँ इकट्ठा कर लाते थे और अपनी धर्मपत्नी के सामने रख देते थे। वे एक्सपायरी डेट देखकर काम की दवाईयों का पैकेट बनाकर रखती थीं। वे पैकेट आश्रम पहुँच जाते थे। श्री बापट जी का ध्यान ऐसे कार्यकर्ता परिवारों की ओर भी होता था। वे कोरबा दो–चार माह में पहुँच ही जाते थे। श्रीमती खानखोजे, उनका नाम अरुंधती है। बापट जी और उसका संबंध पिता–पुत्री के समान था। वे अपना संस्मरण बताती हैं – ''मई महीना था, दोपहर दरवाजे की घंटी बजी। दरवाजा खोला, बापट जी गेट पर खड़े थे। बहुत बड़ा बोरा देखकर मैंने पूछा – बापट जी रिक्शा वाले चले गया क्या ? चलिये बोरा दोनों उठाते हैं।''

⁂ छोड़ दो मैं उठाता हूँ।

⁂ सीढ़ी से भी बोरा आप ही उठाकर लाए क्या ?

⁂ हाँ ! रिक्शा वाला बीस रुपये माँग रहा था, बहुत ज्यादा था, इसलिये मैं ही उठाकर ले आया, मात्र एक किलोमीटर ही तो है।

⁂ मैं सुनकर दंग रह गई। पहली बार और आखिरी बार कठोर शब्दों में

बोली – बापट जी आपने ये क्या किया ? मई मास की गर्मी, 45 डिग्री का तापमान चल रहा है, दोपहर बारह बजे, आप इतना बड़ा बोरा उठाकर चले आए। बीस रुपये के कारण कितना बड़ा खतरा मोल लिया।

* अपने आश्रम के बीस रुपये बच गए न।

मैंने गंभीर मुद्रा में बापट जी को देखा, वे अपना पसीना पोंछ रहे थे। मेरी आँखे भर आई, मैं अपना आवेग नहीं रोक सकी। मैंने भावावेश में बापट जी को प्रणाम किया। बापट जी रोक पाते तब तक दो अश्रु बिन्दु उनके चरणों में टपक पड़े।

आश्रम के पैसे की बचत। जहाँ तक सम्भव हो समाज के पैसे का व्यय अपने ऊपर नहीं करना चाहिये। कम से कम अपनी आवश्यकताएं होनी चाहिये। बापट जी वनवासी क्षेत्र में काम कर चुके थे। वनवासियों की परिस्थिति का उन्हें पूर्ण अनुभव था। छत्तीसगढ़ का एक इलाका है बस्तर। घनघोर जंगलों से घिरा हुआ। उस क्षेत्र की ओर भी उनका ध्यान था। वहाँ क्या काम किया जा सकता है इसका चिंतन चल रहा था। श्री सुधीर देव प्रांत के सेवा प्रमुख थे। उनके साथ बापट जी प्रवास पर गए। वहाँ लोगों से चर्चा की। ध्यान आया कि एक नेत्र शिविर का आयोजन किया जा सकता है। बापट जी ने नेत्र–शिविर की कल्पना लेकर बस्तर से निकले। शिविर की सम्पूर्ण व्यवस्था उनके मस्तिष्क में घूमती रही। बापट जी की एक विशेषता थी कि वे कार्यक्रम के लिये कार्यक्रम नहीं करते। कार्यक्रम के माध्यम से अपनी कोई न कोई दूरगामी स्थायी योजना की कल्पना भी वे करते थे। इसका संकेत श्री बलिहार सिंह जी की कमिश्नर मजुमदार जी से हुई चर्चा से मिलता है।

प्रसंग ऐसा था श्री मजुमदार बिलासपुर सम्भाग के नए कमिश्नर होकर आए। बापट जी सहज सौजन्य भेंट के लिये गये। चपरासी को पर्ची लिखकर दी और बेंच पर बैठ गए। बहुत देर बैठने के बाद बापट जी ने कहा – मैं जा रहा हूँ मेरा काम है। लगभग एक घंटे के बाद कमिश्नर साहब ने चपरासी को कहा – कौन मिस्टर बापट हैं उनको भेजो ! चपरासी ने कहा साहब वे तो चले गए कुछ अर्जेन्ट काम है कहा और निकल गए। मजुमदार जी सोचने लगे – यह कौन व्यक्ति है जिसके पास मुझसे मिलने का समय नहीं है। उन्होंने अपने पी.ए. को बुलवाया और पूछा – ''इनको जानते हो ?''

* जी सर ! ये दामोदर गणेश बापट जी हैं। चांपा में एक कुष्ठ आश्रम चलाते हैं।

कुछ दिनों बाद कमिश्नर साहब का कार्यक्रम कोरबा में था। वहाँ मजुमदार जी ने अपने भाषण में बापट जी का उल्लेख किया वह कार्यक्रम लायंस क्लब द्वारा

आयोजित था। एक दिन कमिश्नर साहब भारतीय कुष्ठ निवारक संघ में आए। साथ में प्रो. श्यामलाल चतुर्वेदी एवं बलिहार सिंह जी थे कुष्ठ रोगियों ने उनका स्वागत किया। कार्यक्रम समापन में पूरा वन्दे मातरम् गाया गया। आश्रम का अवलोकन करते समय वे वन्दे मातरम् गुनगुनाते रहे। चाय के समय उन्होंने कहा – जीवन में पूरा वन्दे मातरम् किसी कार्यक्रम में पहली बार सुना। यह गीत बँगाल में लिखा गया और लिखने वाला बँगाली था परन्तु यह गीत बँगाल में पूरा क्या आधा भी नहीं गाया जाता।

आश्रम के बारे में बलिहार सिंह जी ने बताना प्रारंभ किया–आश्रम कैसे प्रारंभ हुआ ? कैसे हम इसकी व्यवस्था करते हैं ? इसमें बापट जी का क्या योगदान है ? कैसे पत्रों के माध्यम से पूरे देश में सम्पर्क करते हैं ? कार्यकर्ताओं, रोगियों को कैसे सम्हालते हैं ? यह सब बापट जी का परिश्रम मानिये, हम तो फोटो खिंचवाने के लिये, मंच की शोभा बढ़ाने के लिये आ जाते हैं। बापट जी के चिंतन में अभी और क्या योजनाएं चल रही है बताना कठिन है। कोई नई योजनाएं लेकर आते हैं, हमें लगता है यह तो आवश्यक है, महत्वपूर्ण है। कल्पनाएं तो कोई भी कर सकता है। माननीय बापट जी की विशेषता यह है कि वे केवल विचार ही नहीं करते, अपितु उस काम के लिये आवश्यक धनराशि, योग्य व्यक्ति, काम की सतत निगरानी। निर्मित वस्तुओं के लिये बाजार उपलब्ध कराना, इतना व्यापक, बहुआयामी चिंतन वे स्वयं करते हैं। वे कोई योजना लेकर आते हैं तो हम उनका आँख मूंदकर समर्थन करते हैं क्योंकि हमें मालूम है कि इसके पीछे बापट जी का गहरा लम्बा चिंतन है। यदि किसी ने कोई सुझाव दिया तो वे उसे गंभीरता से लेते हैं। सुझाव देने वाला व्यक्ति किस स्तर का है, उसकी योग्यता क्या है ? इसका बंधन वे पालते नहीं हैं। सुझाव संस्था हित में है या नहीं इसको महत्व देते हैं।

बस्तर प्रवास के पीछे बापट जी की कोई योजना अवश्य होगी। आश्रम के बारे में कई प्रकार के लेख, संस्मरण छपते ही रहते थे। मुंबई के एक व्यापारी श्री राजीव भाई ने आश्रम के बारे में लेख पढ़ा। उनको संस्था के बारे में जानने की जिज्ञासा हुई। बापट जी से उनका सम्पर्क आया। बापट जी अवसर नहीं गवाँना चाहते थे। समय निकालकर वे मुम्बई निकल गए। श्री राजीव जी से भेंट की और अपनी योजनाएँ बताई। राजीव जी बहुत बड़े हीरे के व्यापारी हैं। वे बापट जी की सहजता, सादगी एवं विनम्रता से प्रभावित हुए। वे स्वयं बापट जी को छोड़ने बाहर तक आए। सभी कर्मचारी आश्चर्य से देख रहे थे। बापट जी अपनी योजना में सफल रहे।

प्रांत सेवा प्रमुख श्री सुधीर देव जी के माध्यम से जगदलपुर में एक नेत्र

शिविर का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय सामाजिक संस्थाओं ने भरपूर सहयोग दिया । इस शिविर में लगभग चार सौ वनवासी बंधुओं–बहनों का नेत्र परीक्षण, चश्मा वितरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें मुम्बई के ''सुशीला बेन रमणीक भाई झवेरी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई'' का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ । महिलाओं में हीमोग्लोबिन की कमी, बच्चों के कुपोषण, रक्त एवं प्रोटीन की कमी, आदि समस्याएं भी बड़ी मात्रा में बस्तर में पाई गईं । उत्तर, मध्य बस्तर से भी अधिक भयंकर स्थिति दक्षिण बस्तर में देखी गई । दन्तेवाड़ा जिले में सिकल सेल नाम की बीमारी पाई, शरीर में खून की खराबी ।

माननीय बापट जी का चिंतन चल ही रहा था । वे उचित व्यक्ति की तलाश में थे ही, बिलासपुर से संस्था के अध्यक्ष का समाचार आया कि श्री जयंतराव कोठे, ओ.एन.जी.सी. से सेवानिवृत्त हुए हैं वे अपना समय आश्रम को देना चाहते हैं । उनकी इच्छा वनांचल क्षेत्र में सेवा करने की है । वे जब आश्रम आए तो बापट जी ने उनसे बस्तर के बारे में चर्चा की । वे तैयार हो गए । पति–पत्नी दोनों, जिनको लोग श्रद्धा के साथ मामा–मामी कहते हैं, वे भैरमगढ़, बीजापुर जिले के ''इन्द्रावती अभयारण्य'' में साल भर रहे । बाद में उन्होंने दन्तेवाड़ा जिला, नकुलमार (कूआकोंडा) ब्लाक के एक छोटे से ग्राम ''हल्बारास'' को अपना केन्द्र बनाया । वहाँ दोनों पति–पत्नी ने एक खंडहर पड़े थाना को अपना आवास बनाया । पंचायत ने सेवाकार्य के लिये पुराना थाना भवन आबंटित कर दिया । जिस समय वे वहाँ गए उस समय वहाँ नक्सलियों का आतंक था । कई बार नक्सलियों ने उनकी कड़ाई से पूछताछ की, धमकी भी दी, परन्तु दृढ़निश्चयी दम्पत्ति ने अपना सेवा का मार्ग नहीं छोड़ा । कुपोषण से पीड़ित बच्चों के लिये पोषक आहार, दवाईयाँ, सिकलसेल बीमारी का परीक्षण कार्य प्रारंभ हुआ । बापट जी ने देशी गुड़, चना बच्चों के लिये भिजवाया । वहाँ की संस्था का नाम ''भारतीय कुपोषण निवारक संघ'' हल्बारास रखा गया । बीच–बीच में योग्य चिकित्सकों की सेवाएं उपलब्ध कराई जाने लगीं । आहार तज्ञ डॉक्टर सीमा पाठक, वर्षा तत्ववादी आदि विशेषज्ञों द्वारा दिए गए सुझावों के आधार पर कार्य प्रारंभ हुआ । सिकल सेल की दवा होमियोपैथी में खोजने वाले मुंबई के डॉक्टर निकम और उसकी टीम द्वारा बस्तर के हल्बारास में दो दिनों का कैम्प लगाकर बस्तर को स्वास्थ्य के लिए जागरुक करने का प्रयास प्रारंभ किया गया । परिणाम यह हुआ कि वहाँ के बच्चे पढ़कर निकले । मामा–मामी ने बच्चों को पहली बार ट्रेन में बिठाया । बाल फिल्म महोत्सव में बच्चे गए । वहाँ गीत प्रस्तुत किया । बापट जी ने एक बड़ी एम्बुलेंस भारतीय कुपोषण निवारक संघ हल्बारास को दिलवाई । एम्बुलेंस का बहुआयामी

उपयोग होने लगा। कोठे दम्पत्ति बस्तर में दादा–दादी के रुप में पहचाने जाने लगे। श्री दामोदर गणेश बापट जी यदि कहीं सुदूर कोई कार्यक्रम कर रहे हैं ऐसी जानकारी मिली तो समझिये निकट भविष्य में वहाँ कुछ स्थाई योजना बनने वाली है।

सेवा रुपी चन्दन की गंध रुक नहीं सकती। हवा के संग–संग बहने लगती है। इसको फैलाने में प्रचार–प्रसार माध्यमों की भूमिका बड़ी रही है। दैनिक भास्कर, दैनिक नवभारत, हरिभूमि, नई दुनिया, नवभारत टाइम्स दैनिक तरुणभारत, जी टी.व्ही., दूरदर्शन, स्थानीय चैनलों, शाश्वत राष्ट्रबोध, साप्ताहिक विवेक मराठी। हिन्दी, पांचजन्य, राष्ट्रधर्म, ऑर्गेनाइजर इनके अलावा भी अनेक पत्र–पत्रिकाएं हैं। महापुरुषों, अनेक स्वयंसेवी संगठन के माध्यम से आश्रम की जानकारी लोगों तक पहुँची। सन् 1992 में पू.वा. भावे स्मारक समिति ने प्रमोद महाजन के हाथों आश्रम को सम्मानित किया।

दामोदर गणेश बापट जी पुरस्कारों के प्रति अत्यंत उदासीन थे। अपनों की सेवा करने के बदले पुरस्कार लेना उचित है क्या ? क्या हम पुरस्कार की आशा में समाज सेवा में लगे हैं ? श्री बापट जी ने कई दिनों तक इस पुरस्कार के लिये कोई सहमति नहीं दी। प्रमुख कार्यकर्ताओं ने बापट जी को समझाया – ''यह पुरस्कार आपको नहीं दिया गया है, यह सम्मान आप जो कार्य कर रहे हैं उसका सम्मान है।'' आपकी भूमिका तो ''निमित्त मात्रं भव सव्यसाची'' है। आपके मन में यह बात क्यों आ गई कि यह मेरा सम्मान है। बापट जी आप दूसरा पक्ष सोचिये, सामाजिक संस्थाओं को हम यदि अच्छे कामों का सम्मान करने से रोकेंगे तो वे किसी अन्य संगठनों को सम्मानित करेंगे आखिर उनको भी तो अपनी संस्था चलानी है। बापट जी अनमने भाव से ही गए पुरस्कार लेने।

ऐसा कौन सा काम है जो बापट जी नहीं कर सकते ? यह अंत तक उनको जानने वालों की समझ से परे रहा। आश्रम में मरीजों की मरहम पट्टी से लेकर हाथ पैर दबाने का काम भी करना पड़ता था। एक समय ऐसा था जब बापट जी को आश्रम की सफाई, कार्यालय का काम, खेती का काम, गौशाला, छात्रावास के बच्चों को स्नान कराना, कटिंग करना, शासकीय कार्य सभी करना पड़ता था।

कोरबा से एक दम्पत्ति बच्चा गोद लेने के लिये आश्रम आए। छात्रावास में गए। रविवार का दिन था, बच्चे खेल रहे थे। एक सज्जन बच्चों की कटिंग कर रहे थे। दम्पत्ति को कोई छोटा बच्चा नहीं मिला। वे वापस कार्यालय आए श्री कुलकर्णी जी से मिले। उन्होंने कहा आश्रम के सचिव थोड़ी देर में आएंगे। घंटे भर बाद बापट जी आए। उनको देखकर पति–पत्नी दंग रह गए – ये हैं इस आश्रम के सचिव। अभी ये

बच्चों की हजामत कर रहे थे। बापट जी ने कई बार कुष्ठ रोगियों की भी हजामत बनाई थी।

बापट जी का स्वरुप कैसा था ? एक कुष्ठ रोगी से ऊँचा उनका रहन–सहन नहीं था । टायर की चप्पल, घुटने तक धोती, कुष्ठ रोगी द्वारा बनाई हुई कटिंग, सामान्य सस्ता कुरता। वे कहते थे – ''अपना स्तर कार्यकर्ताओं से ऊँचा नहीं रखना। कार्यकर्ताओं में मालिक मजदूर का सम्बन्ध न दिखे। हम सभी कार्यकर्ता हैं यही भाव बना रहे।'' बापट जी के विचार किसी भी सामाजिक कार्यकर्ता के लिये अनुकरणीय हैं, अत्यंत मार्गदर्शक है। फिर भी बापट जी जैसा रहना अत्यंत कठिन है। उनकी सभी बातों को नकल करना भी उचित नहीं।

एक बार वे रायगढ़ ट्रेन से गए। साथ में जयकिशन नाम का कार्यकर्ता था। वह टिकट लेने गया। पेसेंजर आ गई। बापट जी डब्बे में चढ़ गए। जयकिशन दौड़कर दूसरे डब्बे में चढ़ गया। रायगढ़ स्टेशन पर चेकिंग चल रही थी। उस समय के रेल मंत्री माधवराव सिंधिया थे वे रायगढ़ आने वाले थे । बापट जी जयकिशन को और जयकिशन बापट जी को खोज रहे थे। स्टेशन पर भीख माँगने वाले कुष्ठ रोगी भी थे। उनमें से एक ने बापट जी को पहचान लिया। बापट जी को परेशान देखकर पूछा – क्या हुआ महाराज ? बापट जी ने अपनी परेशानी बताई। कुष्ठ रोगी ने कहा – हमको प्लेटफार्म से भगाया जा रहा है आप हमारे साथ ही निकल चलिये। बापट जी का रुप ऐसा था कि पुलिस वालों ने बापट जी को भीड़ के साथ बाहर निकाल दिया।

बापट जी किसी वस्तु अथवा पदार्थ के गुलाम नहीं थे। सब कुछ करते हुए भी सबसे अलिप्त रहते थे। चराचर जगत में उपलब्ध सभी प्रकार के खाद्य एवं पेय पदार्थों का सेवन बापट जी ने किया है। उनके कु–प्रभाव एवं सु–प्रभाव का उन्हें अच्छा अनुभव था परन्तु वे कभी उन वस्तुओं के अधीन नहीं रहे। शेगांव के संत गजानन महाराज के वे पक्के अनुयायी थे। हमारे जैसे सामान्य व्यक्ति उनके पक्षों की नकल न करें। उनके जैसा आत्मबली, दृढ़निश्चयी, जितेन्द्रीय हम बन सकें ऐसा प्रयास हमें करना चाहिये। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है–''ब्रह्मण्याधाय कर्माणि संगम् त्यक्त्वा करोतियः, लिप्यते न स पापेन पद्मपत्र मिवाम्भसा।'' जैसे कमल पत्र जल में रहते हुए कभी जलभरा नहीं होता वैसे ही बापट जी सभी में रहते हुए भी सभी से अलिप्त थे।

सेवा, समर्पण, भक्ति तथा कर्तव्य भावना से युक्त एवं सभी प्रकार की एष्णाओं से मुक्त व्यक्तित्व का नाम ही दामोदर गणेश बापट जी है। वे कभी भी बाह्य पूजा–पाठ करते नहीं देखे गए परन्तु ऐसा लगता है कि उनके अन्तःकरण में

सतत ईश्वरोपासना चलती रहती है । ऐसे व्यक्ति को कभी बाह्य कर्मकांड की आवश्यकता नहीं होती । एक बार ऐसा अनुभव आया – आश्रम में कुछ शिक्षार्थी प्रथम वर्ष करके आए उनसे प्रतिज्ञा याद है क्या पूछा गया । बापट जी वहीं तम्बाखू रगड़ते खड़े थे । स्वयंसेवक सोचने लगे । उनमें से एक ने साहस करके बोलना प्रारंभ किया – संघ का कार्य मैं प्रामाणिकता से तथा तन–मन–धन पूर्वक करुंगा और इस व्रत का मैं आजन्म पालन करुंगा । भारत माता की जय ।

बापट जी भी वहीं खड़े थे । बहुत जोर से चिल्लाए –''प्रामाणिकता से, निःस्वार्थ बुद्धि से तथा तन–मन–धन पूर्वक''..... सुनकर स्वयंसेवक हँसे–गलती हो गई महाराज । बापट जी तम्बाखू मुँह में रखते हुए कार्यालय की ओर निकल गए । यह बात ध्यान में आती है कि बापट जी का बाह्य स्वरुप अलग है । उनके बाह्य रुप को देखकर जो उनको समझने का प्रयास करेंगे वे असफल होंगे । ये तो समुद्र की लहरें हैं लहरों से समुद्र की गहराई का आँकलन नहीं किया जा सकता । किसी भी स्वयंसेवक को अचानक प्रतिज्ञा बोलने कहा जाए, प्रतिज्ञा ही क्यों ? प्रतिदिन प्रार्थना करने वाले को भी अचानक प्रार्थना बोलने कहा जाए तो वह भी अटक जाता है । पूरे देश में बहुत कम ही स्वयंसेवक होंगे जो प्रतिज्ञा रोज बोलते होंगे । बापट जी को शायद किसी ने कोई चर्चा, प्रवचन, प्रार्थना, प्रतिज्ञा का अभ्यास करते–कराते देखा होगा । अचानक प्रतिज्ञा में सुधार करना, प्रतिज्ञा के अहर्निश, सतत, निरंतर पारायण का ही परिणाम हो सकता है । बापट जी के इस लाक्षणिक संकेत से यदि संवेदनशील व्यक्ति की उनकी ओर देखने की दृष्टि बदलती है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । इसलिये बापट जी जब प्रचारक बैठक में अपना परिचय देने खड़े होते थे तो उनका बाह्य रुप देखकर कुछ लोगों को हँसी आती थी परन्तु जो बापट जी की गहराई और ऊँचाई से परिचित थे वे गंभीर रहते थे ।

श्री अनुराग पांडेय, भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी हैं उनका विवाह निश्चित हुआ । वे बापट जी को निमंत्रण देने आए । उनके पिताजी स्वर्गीय मनहरन लाल पांडेय, पूर्व सांसद बापट जी के मित्रों में से थे । बापट जी ने अपने एक मित्र का प्रसंग सुनाया – मेरे एक मित्र थे कलेक्टर, उनसे मिलने मैं उनके बंगले में गया । ऑफिस से निकलने में कलेक्टर को देर हो गई, उसने अपनी पत्नी को फोन कर दिया । उसकी पत्नी ने मुझे बैठाया । मुझे देखकर वह परेशान थी । यह व्यक्ति कलेक्टर का मित्र है ? उन्होंने तो कहा था कि किसी बहुत बड़ी संस्था का सचिव है । इनको देखकर तो किसी भी दृष्टि से लगता नहीं कि ये किसी अखिल भारतीय संस्था का सचिव है । मैडम जी से रहा नहीं गया उन्होंने पूछ ही लिया – आप किस संस्था के सचिव हैं ? मैंने

उत्तर दिया – ''भारतीय कुष्ठ निवारक संघ''।

कुष्ठ शब्द सुनकर चौंक पड़ी। अंत में पूछ ही लिया–''आपको भी कुष्ठ रोग है क्या?'' इस प्रश्न पर मैं चुप रहा। प्रसंग बदलते हुए मैंने कहा – मेरा अभिन्न मित्र बनता है और अपनी शादी का निमंत्रण नहीं दिया।

मैडम बोली–हमारी शादी में इनके माता–पिता के अलावा कोई नहीं था। मेरे पिताजी कोर्ट में अर्दली थे। वादी–प्रतिवादियों को आवाज देकर बुलाते थे। आपके मित्र के पिताजी जज थे। मेरी शादी प्रायमरी स्कूल के एक टीचर से तय हुई। द्वाराचार के समय लड़के के पिताजी दहेज की माँग करने लगे। जो तय हुआ था वह पिताजी पहले ही दे चुके थे। पिताजी के पास कुछ भी नहीं था, हाथ–पाँव जोड़े पर बारात वापस चली गई। आपके मित्र, उनके माता–पिता शादी में आए थे। जज साहब ने अपने पुत्र से कहा–तुम चाहो तो इस परिवार की इज्जत बचा सकते हो। तुम तैयार हो तो हमें कोई आपत्ति नहीं है। मैं एक प्रायमरी स्कूल के टीचर की पत्नी बनते–बनते कलेक्टर की पत्नी बन गई।

मैडम की आँखों में अश्रुबिंदु झिलमिलाने लगे थे। बापट जी ने उन आँसुओं में अपने मित्र के विशाल हृदय का साक्षात्कार किया। अनुराग से कहा तुम्हें भी इस प्रकार क्रांतिकारी उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिये। अनुराग ने बापट जी से कहा – ''दहेज को लेकर मेरी शादी में कोई बातचीत नहीं होगी। परम्परागत जीवन मूल्यों के अनुरुप ही विवाह होगा। न मेरी कोई मांग होगी और न ही मेरे माता–पिता ही कुछ प्रस्ताव रखेंगे।'' आज श्री अनुराग पांडेय जी अपने परिश्रम से आई.ए.एस. अधिकारी हैं।

दामोदर गणेश बापट जी ने अपने पत्रों के माध्यम से हजारों परिवारों को देशभर में बाँध रखा था। बापट जी से चर्चा करते समय जब आधुनिक उपकरणों के उपयोग का विषय आया तब वे बोले – फोन, मोबाइल ये सूचना तंत्र हैं इसका उपयोग करना चाहिये परन्तु इस बात का भी हमें विचार करना चाहिये कि हम इन साधनों का कितना उपयोग करें। जब किसी साधन का उपयोग सीमा से अधिक होता है तो वह उपयोगिता न रहकर विलासिता और व्यसन में बदल जाता है। दस कदम चलने के लिये मोटर सायकल का उपयोग उचित है क्या ? हम आजकल पत्रलेखन भूल गए हैं। बिलासपुर में मैंने एक कॉलेज विद्यार्थी से कहा – दस अन्तरदेशीय पत्र ले आओ। उसने जवाब दिया ये क्या होता है हमने कभी देखा नहीं। हमारा काम मोबाइल से चल जाता है। टेलीफोन से क्षणिक सूचनात्मक काम होता है, कार्यकर्ता निर्माण नहीं होता। एक बार कात्रे जी बड़ी मानसिक उलझन में फँस गए थे।

परमपूजनीय श्री गुरुजी का एक पत्र आया उसे पढ़कर वे स्वस्थ हो गए । यदि टेलीफोन पर वार्ता होती तो थोड़ी देर के लिये ठीक था । पत्र होने के कारण उनको जब परेशानी होती थी तब पत्र को निकालकर पढ़ लेते थे, उनका समाधान हो जाता था । कई पत्र उन्होंने मुझे भी पढ़वाए । समाज और व्यक्ति को जोड़कर रखना है तो पत्र लिखना सीखो । पत्र में अक्षर होते हैं, अक्षरों से शब्द बनते हैं, शब्दों में भाव होता है, भाव का प्रभाव व्यक्ति पर होता है । अगर महापुरुषों के पत्रों का संग्रह पढ़ोगे तो जिनको कभी देखा नहीं उनको भी समझ सकते हो । बीस–पच्चीस वर्षों बाद भी पत्रों के माध्यम से प्रेरणा मिल सकती है । मोबाइल पर बात हुई थोड़ी देर बाद पता भी नहीं चलेगा कि हमने क्या शब्द प्रयोग किये थे । पत्रों के मामले में परमपूजनीय श्री गुरुजी मेरे आदर्श हैं । आज मैं जो भी, जितना भी कार्य कर सका उसमें मेरे पत्रों की भूमिका बहुत बड़ी है । याद रखो किसी परिवार में एक पत्र आता है तो उसे पूरे परिवार के लोग पढ़ते हैं । यह सम्पर्क और संवाद का उत्कृष्ट माध्यम है । अच्छा आप लोग ये बताओ – कल तुम्हारी किससे बात हुई और क्या बात हुई ? सोचना पड़ेगा ? ..... क्या बात हुई यह भी नहीं पूछता – कितने लोगों से बात हुई और क्यों हुई ? इतना ही बता दीजिये ?

बापट जी के प्रश्नों का उत्तर आसान नहीं है । यह बात बिल्कुल सत्य है कि आज के पत्रों का संग्रह कल का साहित्य बन जाता है । कहा जाता है कि ''साहित्य समाज का दर्पण है ।'' **(Literature is the mirror of Society)** वैसे ही **(A bunch of the letters is the shadow of a man and his personality.** (पत्रों का संग्रह किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब होता है ।)

बापट जी ने कहा – अभी कौन सन् चल रहा है ? 2017, परमपूजनीय सरसंघचालक श्री मोहन भागवत जी ने मुझे क्या आशीर्वाद दिया मैं बता सकता हूँ । मैं सन् 2014 में ही मरने वाला था परन्तु मुझे पत्र रुपी दवाई मिल गई । अभी मैं मरने वाला नहीं हूँ । थोड़ी तबियत गड़बड़ होती है तो मैं इस पत्र को पढ़ लेता हूँ लो तुम भी पढ़ो .....

।। श्री ।।

दि. 07.09.2014

आदरणीय बापट जी, नयी दिल्ली

सादर सस्नेह नमस्कार ।

आप सानन्द, स्वस्थ एवं सकुशल होंगे ही। आपका 26 अगस्त का लिखा पत्र मिला। वास्तव में सरसंघचालक बनने के पश्चात् बैठक की भीड़भाड़ में मैंने आपसे आत्मीय आशीर्वाद पाने की चेष्टा नहीं की, ये मेरी ही त्रुटि रही है, जिसके लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। अब यह सब बीती बातें मन से निकाल दीजिये और शीघ्र स्वस्थ होने के कार्य में एकाग्र होईए। भेंट तो यथावकाश होगी ही। तब तक आपके दीर्घायुरारोग्य के लिये अनेकों शुभकामनाओं के साथ तत्रस्थ सभी को यथायोग्य नमस्कार।

आपका
(मोहन भागवत)

इस पत्र की नम्रता और भाव पढ़ो। हम फोन पर कुछ भी बातें कर लें परन्तु पत्र का महत्व और उनसे मिलने वाली प्रेरणा अलग ही है।

डॉक्टर जगदाले बताते हैं कि बहुत छोटा मराठी में लिखा पत्र मुझे अमेरिका में मिला। पत्र मन को छू गया। बच्चे और पत्नी के मना करने के बाद भी मैं नहीं रुका। पहले नागपुर आया और वहाँ से सीधे चांपा आ गया। डॉक्टर जगदाले छः–सात वर्षों तक चांपा में रहे।

बापट जी के पिता का देहान्त बहुत पहले ही हो गया। माताजी पूसद में दूसरे नंबर के पुत्र के पास रहती थीं। वर्ष–दो–वर्ष में बापट जी माताजी से मिलने चले जाते थे। माँ की आयु अस्सी वर्ष के लगभग थी। शरीर एकदम शिथिल हो गया था परन्तु बीमारी कुछ भी नहीं थी। एक दिन माँ चक्कर खाकर गिर पड़ी। उसके सिर पर चोट लगी। आठ दिन चिकित्सालय में थी। बापट जी को पत्र मिला। उनको घर आने में चार दिन लग गए। तब तक माँ घर आ गई थी। परिवार के लोग बिस्तर पर ही सेवा करने लगे। बापट जी उन्हें हाथ पकड़कर घर में ही चलाने लगे। माँ को दर्द होता था पर बापट जी जबरदस्ती चलाने लगे ''बूढ़ी बाई, बूढ़ी बाई चला–चला'' कहकर प्रतिदिन सुबह शाम चलाने लगे। माँ बिना सहारे के चलने लग गई तब वे वापस आए। कुछ दिनों बाद सूचना आई कि बड़े भाई कैंसर से पीड़ित हैं और अंतिम साँसे गिन रहे हैं। वे शीघ्र ही बड़े भाई के पास पहुँच गए और अंतिम समय तक उनकी सेवा की।

कुछ ही समय बीता था कि माँ के महाप्रयाण की सूचना आ गई। माँ अंतिम समय में आमला में थी। बापट जी ने आश्रम का अनिवार्य काम निपटाया और जाने की तैयारी करने लगे। माँ के निधन के समाचार ने बापट जी को अन्दर तक हिला दिया

। उनको भयंकर बुखार चढ़ गया वे दो दिन बिस्तर में पड़े रहे । दो दिन बाद आमला जाने के लिये निकले । वे अपना आत्मबल संचित करते हुए निकले । जितना रोना था ट्रेन में रो लिये क्योंकि घर में शोकाकुल परिवार उनकी प्रतीक्षा कर रहा था । घर गए तो हाहाकार मच गया । बापट जी आँखें मूँदकर माँ के छायाचित्र के सामने बैठे रहे । वे शरीर का अंतिम दर्शन नहीं कर पाए थे । उन्होंने परिवार वालों को सांत्वना दी । ''अंतिम समय तक आप लोगों ने माँ की सेवा की । माँ लम्बी आयु तक हमारे साथ रही यही हमारा सौभाग्य है ।''

''अनासक्त निष्काम कर्मयोगी पुनः अपने कर्मक्षेत्र में वापस आ गया ।''

आश्रम की देखरेख के काम में एक सज्जन का नाम और आता है वे हैं श्री व्यंकटेश शंकर तेलंग (वर्तमान में नाशिक निवासी) वे बिलासपुर के रहने वाले थे । बीच–बीच में वे आश्रम में आकर रहते थे और बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाते थे । विशेष रुप से परीक्षा के दिनों में वे एक दो मास रहकर बच्चों की तैयारी करवाते थे । गर्मी के दिनों में बच्चों की ''दीनदयाल उपाध्याय भवन'' के छत पर रात के समय दस बजे तक पढ़ाई चलती थी । बच्चों को निबंध और पत्र रटवाते थे । यह क्रम सन् 2015–16 तक नियमित चला । अब उनकी आयु नब्बे वर्ष के करीब हो गई है ।

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ के काम का बड़ा आर्थिक आधार कोलकाता भी रहा । प्रतिवर्ष 15000/– रुपये ''पूर्वांचल जन कल्याण समिति, कोलकाता'' से आता है । साथ ही अनेक दानदाता बंधु भी हैं जो मुक्त हस्त से आश्रम को सामग्री एवं धनराशि सहयोग करते हैं ।

बंगाल में अकाल पड़ा । डालमिया जी ने मुक्त हस्त से सहयोग करने की समाज से अपील की । देश भर से राशि, अनाज एकत्रित होने लगा । उसमें एक ड्राफ्ट 75/– (पछत्तर रूपये) का आया, उसके साथ एक पत्र भी था । उसमें लिखा था हम कुष्ठ रोगी हैं, हमने एक–एक रूपया जोड़कर राशि एकत्रित की है । उन अभावग्रस्त लोगों को यह हमारा अकिंचन सा सहयोग है । डालमिया जी ने यह पत्र रख लिया । बाद में उन्होंने भारतीय कुष्ठ निवारक संघ से संपर्क किया और संस्था को सहयोग करने का आश्वासन दिया । भारतीय कुष्ठ निवारक संघ की जानकारी अनेक नागरिकों, सामजिक संस्थाओं को होने लगी । ऐसी ही एक संस्था है – ''बड़ा बाजार कुमार सभा पुस्तकालय,'' कोलकोता । वह सेवाभावी संस्थाओं, व्यक्तियों को सम्मानित एवं प्रोत्साहित करने का कार्य करती है । सन् 1995 में विवेकानंद पुरस्कार

के लिये बापट जी के नाम का चयन किया गया। 05 फरवरी 1995 को कलकत्ता में ''बड़ा बाजार कुमार सभा पुस्तकालय'' द्वारा ''विवेकानंद सेवा पुरस्कार'' स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज सांसद के हाथों प्रदान किया गया।

हसदेव नदी के पुल पर एवं नीचे आस–पास बहुत भीड़ थी। चींखने–चिल्लानें की आवाजें आ रही थीं। अहमदाबाद एक्सप्रेस के दो डब्बे पुल के नीचे लटक रहे थे। संवेदन हीन लोग नीचे लटकते हुए डब्बे को देखकर आनंदित हो रहे थे। समाचार पत्र एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लोग उस रोमांचक दृश्य को अपने कैमरे में कैद करने का राष्ट्रीय दायित्व निभा रहे थे। कुछ निष्काम कर्मयोगी, भले ही उनके हाथ–पाँव की ऊंगलियाँ नहीं थी, जख्मी लोगों को उठाकर सही–सलामत निकालकर भारतीय कुष्ठ निवारक संघ कात्रेनगर चांपा की एम्बुलेंस से चिकित्सालय पहुँचाने का काम कर रहे थे। अपंग कहे जाने वाले कुष्ठरोगियों ने कात्रेनगर से आकर दुर्घटना से प्रभावित लोगों को शीघ्र चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई। भोजन, आवास, चिकित्सा आदि सभी व्यवस्थाओं में लोग बिना शोरगुल, कैमरा, समाचार पत्रों से दूर रहकर लगातार दो दिन लगे रहे। प्रभावितों को न केवल चांपा अपितु कोरबा एवं बिलासपुर तक पहुँचाने का कार्य किया। अन्य सामजिक शासकीय, अर्धशासकीय, धार्मिक संस्थाएं भी कार्य कर रही थीं, सभी ने कात्रेनगर से आए कार्यकर्ताओं की मुक्तकंठ से प्रशंसा की, इसमें मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजयसिंह जी भी थे, सभी राजनीतिक दलों के लोग भी शामिल थे।

बिलासपुर के सुप्रसिद्ध ट्रेड युनियनिष्ट श्री वसंतराव खानखोजे बीमार हो गए। वे सदर बाजार के एक निजी चिकित्सालय में भर्ती हुए। बापट जी को पता चला तो वे बिलासपुर आकर उनसे मिले। शाम का समय था, उनकी बहु सेवा में थी, उन्होंने सूचना दी बापट जी भेंट करने आए हैं। बापट जी का नाम सुनकर वे बैठने का प्रयास करने लगे। बापट जी के आने से खानखोजे जी के चेहरे पर प्रसन्नता आई। वे कहने लगे–''मैं जानता हूँ बापट जी आप दोनों संघ के कार्यकर्ता हैं आप मुझसे मिलने आए हैं। मैं चार दिनों से यहाँ पड़ा हूँ। मैं कम्युनिष्ट ट्रेड युनियनिष्ट हूँ पर कोई कम्युनिष्ट मुझे देखने आया नहीं।''

बापट जी के मिलकर आने के बाद संघ के स्वयंसेवक लगभग प्रतिदिन प्रभात शाखा के बाद पहुँच जाते थे। देखने वालों ने कहा–लगता है संघ का कोई बड़ा नेता भर्ती हुआ है। चौकीदार ने कहा–पुराना कम्युनिष्ट नेता भर्ती है उसे देखने संघ वाले ही आ रहे हैं कम्युनिष्ट नेता कोई झाँकता भी नहीं।

कुछ दिनों बाद बापट जी को सूचना आई कि वसंतराव खोनखोजे जी ने

दीपावली पर आपको भोजन हेतु बुलाया है । दीपावली के दिन बापट जी सुवह पैसेंजर से बिलासपुर आ गए । खानखोजे जी के घर पहुँचे, उन्हें चरण स्पर्श कर प्रणाम किया । वसन्तराव जी ने कहा – बापट जी आप जैसा सेवाव्रती मैंने नहीं देखा । आपसे मिलकर मुझे आनंद आता है । मैंने जीवन भर कामरेड बनकर काम किया, जिनका मैं भला किया वे भी मुझे देखने नहीं आए । मेरे पास लेबर लॉ की दो बड़ी किताबें हैं , मुझे पूरा विश्वास है तुम लोगों को देने पर कम से कम तुम लोग जलाओगे नहीं । साथ गए कार्यकर्ता ने कहा – आप सप्रेम भेंट लिखकर और दिनांक डालकर देंगे तो हम दीपावली पर आपका आशीर्वाद समझकर ले लेंगे ।

वसंतराव खानखोजे जी ने हस्ताक्षर करके दो अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की पुस्तकें दी । वे एक तत्वनिष्ठ ईमानदार नेता रहे । अपने जीवन में उन्होंने सेवाभाव में ही यूनियनें चलायीं । बापट जी दीपावली के दिन आश्रम का काम छोड़कर आए और भोजन करके चले गए । यदि वसंतराव जी अपने जीवन में अनुशासित एवं प्रामाणिक नहीं होते तो बापट जी सिर्फ भोजन करने कात्रेनगर से बिलासपुर नहीं आते । श्री वसन्तराव जी आचरण से पक्के सनातनी थे । उनके मन में बापट जी के प्रति अपार श्रद्धा थी वे कहते हैं – ''यदि बापट जी संघ के स्वयंसेवक हैं तो संघ को अच्छा कहने में मुझे कोई संकोच नहीं है ।''

श्री दामोदर गणेश बापट जी व्यक्तियों के साथ–साथ सामाजिक संस्थाओं के भी हितचिंतक थे ऐसी ही एक संस्था कोरबा जिले में देवपहरी नामक स्थान पर चलती है उनके प्रमुख कायकर्ता बापट जी के बारे में बताते हैं – ''आदरणीय दामोदर गणेश बापट जी तो''मुक्तसंगोऽनहंवादी'' व्यक्तित्व के धनी हैं । मैं विद्यार्थी परिषद् के एक कार्यक्रम में सायकल से नागपुर गया था वहाँ संघ कार्यालय में बापट जी से भेंट हुई । मैंने अपना परिचय दिया मेरा नाम किशोर बुटोलिया है मैं कोरबा से आया हूँ । परिचय होने के बाद रात्रि में बापट जी सायकल यात्रियों को दूध पिलाने ले गए । उन्होंने तीन पाव दूध का आर्डर दिया । बापट जी का रंगरूप देखकर कोई भी व्यक्ति उनके साथ चतुराई कर सकता है । होटल वाले ने भी ऐसा ही किया । दो सौ ग्राम के गिलास में दूध भरकर लाया । गिलास खाली होने के बाद बापट जी ने कहा – अब बचा हुआ दूध लेकर आओ । यह बात हमारे ध्यान में नहीं आई हम लोग तो दूध पी गए परन्तु बापट जी का सूक्ष्म एवं सतर्क दृष्टि के दर्शन मुझे प्रथम मिलन में ही हुए । बाद में तो कई बार मिलना हुआ । जब मैंने देवपहरी प्रकल्प प्रारंभ किया तो उनके सहयोगी स्वभाव एवं अनासक्त भाव का अति निकट से परिचय आया । यहाँ पर मैं दो प्रसंगों का उल्लेख करना चाहुँगा । एक बार देवपहरी प्रकल्प में एक बड़ा कार्यक्रम था । मैं

उनको सूचना देने गया। सामान्य बातचीत में उन्होंने पूछा–सब व्यवस्था हो गई है ? मैं संकोचवश कुछ बोल नहीं पा रहा था, उन्होंने ही कहा–हमारे यहाँ सब्जी–भाजी है ले जाओ। चावल दाल की क्या व्यवस्था है ? ऐसा करो – कुछ चावल–दाल भी लेते जाओ। अरे यार किशोर– ''तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा''। अपना क्या है सब समाज का ही तो है। पर तुम लेकर कैसे जाओगे ? ऐसा करो अपने 407 में सब लाद लो, साथ में भोजन बनाने वाला भी ले जाओ। समाज का काम है सब ठीक होना चाहिये।

सामाजिक काम करने वालों को सहयोग एवं प्रोत्साहन देना बापट जी का आन्तरिक पिंड था। काम व्यवस्थित एवं सफल हो इस ओर उनका विशेष ध्यान रहता था। जब देवपहरी में हमने छोटा चिकित्सालय प्रारंभ किया तो भी दवाईयों, उपकरणों सहित पलंग कुर्सियाँ भी उन्होंने हमको दी। बहुत ही महत्वपूर्ण सुझाव भी उन्होंने दिये। उनके आशीर्वाद से हम छात्रावास, मंदिर, चिकित्सालय के साथ–साथ समाज जागरण की ओर भी कदम बढ़ा सके। आज कोरबा ही नहीं आस–पास जिलों का देवपहरी प्रकल्प श्रद्धा एवं प्रेरणा का केन्द्र है। बापट जी तो वहाँ कुछ भी नहीं थे परन्तु जब मैं उस प्रकल्प में जाता हूँ तो अनायास ही मेरे मन में बापट जी की छबि उभरकर आती है।

वर्तमान समय में कुष्ठ सेवा के क्षेत्र में पूज्य बाबासाहेब आमटे जी की तपस्या, परिश्रम के बारे में किसी भी सच्चे भारतीय को गर्व होगा। श्री माधव विट्ठल कवीश्वर जी, आनन्दवन वरोड़ा अपना एक संस्मरण सुनाते हैं –''यह बात सन् 1985 की होगी। मैं माननीय यादवराव जी जोशी, श्री कृष्णप्पा जी, डॉ आबा जी थत्ते और एक–दो अन्य कार्यकर्ता परमपूजनीय बालासाहब जी के कक्ष में बैठे थे। वहाँ पूज्य बाबासाहब आमटे जी का संदर्भ निकला। उस समय बाबासाहब जम्मू कश्मीर से कन्याकुमारी भारत छोड़ो आन्दोलन के नाम से सायकल यात्रा पर थे। परमपूजनीय बालासाहब देवरस जी ने कहा–''राष्ट्र को सबल सशक्त बनाने के लिये आदरणीय बाबासाहब आमटे जी का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है, अगर ऐसे दीन–दुःखी, पीड़ित बंधुओं–भगिनियों की ओर दुर्लक्ष्य होगा तो राष्ट्र कभी भी सबल नहीं हो सकेगा। आमटे जी का कार्य राष्ट्रीय कार्य है। आप लोगों को समय निकालकर वह काम देखना चाहिये।''

माननीय यादवराव जी तो जाते ही रहते हैं। मैं और कृष्णाप्पाजी नागपुर से सीधे आनन्दवन गए। आनन्दवन पूरा देखा बाद में मैं सन् 1992 में सदा के लिये आनन्दवन में आ गया।

परमपूजनीय बालासाहब जी के उद्‌गार राजनीतिक, लच्छेदार, ताली पिटवाने के लिए कहे गए शब्द नहीं हैं अपितु एक तपस्वी द्वारा दूसरे तपस्या पथगामी ऋषि के लिये कहे गए हैं। ये वैसे ही शब्द हैं जैसे सतयुग में मुनि वशिष्ठ के द्वारा विश्वामित्र को गले लगाते हुए कहे गए थे ''उठो ब्रह्मर्षि।''

बाबासाहब आमटे जी ने मानवता की सेवा का व्रत लेकर कार्य प्रारंभ किया। और अपने समर्थकों और संपर्क में आए लोगों को भी उन्होंने विशुद्ध भावना से मानव सेवा करने का ही उपदेश दिया। बाबासाहब आमटे जी स्वयं एक वैश्विक परिवार की कल्पना करते थे। ''अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम् उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥''(जो उदार चारित्र्य सम्पन्न होते हैं वे पूरे विश्व को अपना कुटुम्ब मानते हैं।) इस प्रकार उन्होंने आसक्ति से रहित होकर बड़ा कार्य किया।

आनन्दवन में मुख्य चिकित्सा अधिकारी हैं डॉक्टर विजय गोविन्द पोल। वे मूलतः छत्तीसगढ़ प्रान्त के बेमेतरा जिला के रहने वाले हैं। रायपुर (छत्तीसगढ़) मेडिकल कॉलेज से एम.बी.बी.एस. की डिग्री लेकर सम्पूर्ण जीवन आनन्दवन वरोड़ा में कुष्ठरोगियों की सेवा में सपर्पित कर दिया है। उन्हें लगभग पैंतीस वर्ष से भी अधिक समय हो गया है कुष्ठरोगियों की सेवा करते हुए। संकलनकर्ता को उनके साथ दो दिन रहने का अवसर आया। वे बाबासाहब आमटे के अनन्य भक्तों में से हैं, उन्होंने बाबासाहब की अंतिम समय तक सेवा की।

डॉक्टर साहब के साथ आनन्दवन के साप्ताहिक बाजार में जाने का अवसर आया। अनेक लोग डॉक्टर साहब को नमस्कार करने लगे। हम एक फल दुकान में रूके। फल वाला मुसलमान था। डॉक्टर साहब ने मराठी में पूछा–काय रे बशीर काय हाल–चाल आहे तूझा ? (क्या बशीर क्या हाल–चाल है तेरा) बशीर ने अपना ठूँठ जैसा हाथ जोड़कर कहा–डॉक्टर साहब सब आपकी कृपा है। आपके कारण ही मैं कमाने–खाने लायक बना। डॉक्टर साहब बोले–सब बाबासाहब की माया है।

बुधवार बाजार से वापस आते समय डॉक्टर साहब ने कहा–बाबासाहब के आनन्दवन से ऐसे अनेक लोग भिन्न–भिन्न मतपंथों के कुष्ठरोगी ठीक होकर निकले पर किसी का भी मत परिवर्तन नहीं किया, धर्मान्तरण नहीं किया। बाबा साहब मरीजों को भगवान मानते थे। वे कहते थे आप मुझे आशीर्वाद दीजिये। सुबह उठकर वे मरीजों को भगवान मानकर दर्शन करते थे और आशीर्वाद प्राप्त करते थे।

मदर टेरेसा का भी वैश्विक बोलबाला है। अब तो वे संत की श्रेणी में आ गई हैं। संकलनकर्ता को ऐसा लगता है कि मदर टेरेसा के समग्र कार्य का अधिष्ठान

मतान्तरण है। वे भी प्रतिदिन रोगियों के पास जाती थीं परन्तु दर्शन देने, आशीर्वाद देने के लिये। पूज्य बाबासाहब आमटे दर्शन करने और आशीर्वाद प्राप्त करने जाते थे। कुष्ठरोगियों के अन्दर भी ईश्वर का साक्षात्कार करने की पवित्र दृष्टि है। ''सकल चराचर जगत में एक ही तत्व विद्यमान है।'' यह बाबासाहब के आचरण में दिखाई देता है।

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ कात्रेनगर चांपा में बापट जी ने एक मुसलमान को रखा था, वह स्वयं मरीज था। बापट जी ने उनकी अहर्निश सेवा की उसका नाम था रसीद भाई। उसको बापट जी अथवा आश्रमवासियों ने कभी भी हिन्दू बनाने का प्रयास नहीं किया और न ही कभी व्यक्तिगत नमाज पढ़ने से उसे रोका। रसीद भाई को बापट जी ने बड़े ही महत्व का काम दिया था। रसीद भाई को देखकर कुछ लोगों ने बापट जी से प्रश्न किया तो एक वाक्य में बापट जी ने उत्तर दिया ''हिन्दू कभी साम्प्रदायिक नहीं होता।''

संकलनकर्ता सन् 1995 में भी आनन्दवन गया था। मात्र चार–पाँच घंटे का समय था। श्रद्धेय बाबासाहब आमटे जी के दर्शन का अवसर मिला। डॉक्टर विजय पोल और विकास आमटे नागपुर गए थे उनसे भेंट नहीं हो सकी। मेरा परिचय कराने के लिये श्री अविनाश साठे जी थे। भारतीय कुष्ठ निवारक संघ चांपा का विषय निकला तो उन्होंने कहा–अविनाश ने मुझे बताया था। एक बार बापट यहाँ आया भी था। कात्रे जी के बारे में मैंने इसी से सुना पर मैंने उन्हें कभी देखा नहीं–हाँ उनका जो अपमान, उपेक्षा, तिरस्कार, उपहास हुआ उसकी कल्पना करता हूँ तो सोच में पड़ जाता हूँ – ''मैंने अपना काम कुछ न कुछ सामाजिक सम्मान के बीच प्रारंभ किया। मैं वकील था, नगर पालिका अध्यक्ष था, परन्तु कात्रे जी ने अपना कार्य सामाजिक उपेक्षा, अपमान, उपहास एवं मानसिक प्रताड़ना से संघर्ष करते हुए प्रारंभ किया।''

जब संकलनकर्ता का परिचय संघ स्वयंसेवक के नाते हुआ तो बाबा साहब ने कहा – यादवराव जोशी आपके अधिकारी यहाँ प्रतिवर्ष गर्मी में आते थे। यादवराव जी का नाम आते ही उनकी वाणी में नम्रता और आदर भाव का आभास मुझे हुआ। पूजनीय बाला साहब एवं शेषाद्री जी का स्मरण उन्होंने किया। दूसरा अनुभव यह आया कि अविनाश साठे जी प्रति उनकी नाराजगी है। यदि संकलनकर्ता अकेले जाते तो शायद पिता समान प्रेम की मात्रा और बढ़ जाती परन्तु मेन गेट में प्रवेश करते ही भैंस के तबेले के पास अविनाश जी ही मिले।

****

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी के हाथों सम्मान प्राप्त करते हुए बापट जी

बापट जी का शरीर थकने लगा था। अब उनको एक पूर्णकालिक सहयोगी की आवश्यकता अनुभव होने लगी थी। प्रवास अब कठिन होने लगा था। ऐसे समय में उनको एक अतिरिक्त दायित्व दे दिया गया। देश के अन्दर दिव्यांगों की संख्या, उनके उत्थान, उनके व्यक्तित्व विकास हेतु एक अखिल भारतीय स्तर की संस्था बनी उसका नाम ''सक्षम'' रखा गया। उसके प्रथम अध्यक्ष बनें श्री दामोदर गणेश बापट। अधिक काम तो नहीं था परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर बैठकों में जाना पड़ता था। बापट जी का एक विशिष्ट गुण था ''जहाँ अपेक्षित वहाँ उपस्थित''। अतः कहीं पर भी, किसी भी बैठक में वे अनुपस्थित नहीं रहे। बापट जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था, परन्तु वे अमरकंटक में होने वाले पाँच दिवसीय वर्ग में पधारे, पूरे समय रहे। वर्ग समाप्त होने पर ही वापस आए। उनके हाथों में कम्पन बढ़ गया था। उनको हस्ताक्षर करने में भी परेशानी होने लगी थी।

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ को उत्तरप्रदेश की एक संस्था ''भाऊराव देवरस न्यास'' द्वारा सम्मानित करने का निर्णय लिया गया। इस पुरस्कार की घोषणा से बापट जी की ऊँचाई में क्या अन्तर आया होगा पता नहीं परन्तु इसके माध्यम से संस्था का परिचय एवं कुष्ठरोग के मूल स्वरुप का परिचय समाज को कराने का अवसर बापट जी मानते थे। रोग के प्रति जो भ्रांतियाँ हैं उसको दूर करने का स्वर्णावसर समझकर उपस्थित रहना यही मानकर वे गए। दिनांक 23.12.1996 को भाऊराव देवरस स्मृति सेवा पुरस्कार, भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री पं. अटल बिहारी बाजपेयी के कर–कमलों द्वारा प्राप्त किया। आश्रम को इस समय आर्थिक सहयोग की आवश्यकता थी क्योंकि आश्रम परिसर में निर्माण कार्य तेजी पर था। इसमें पुरस्कारों की राशि सहायक होती थी। इसी प्रकार सन् 2002 में मा. स. गोलवलकर गुरुजी पुरस्कार दिनांक 08 मार्च 2002 को माननीय डॉक्टर मुरलीमनोहर जोशी, केन्द्रीय मानव विकास मंत्री के हाथों, जन कल्याण समिति, महाराष्ट्र प्रान्त द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर दत्ता बापट नामक व्यक्ति ने ''कलीयुगी चा भगीरथ'' शीर्षक से मराठी में लम्बा लेख लिखा। यह आलेख श्री माधव एकनाथ जी राजहंस, भिलाई, आमदीनगर ने उपलब्ध कराया।

सन 2005 में बापट जी के सहयोगी के रुप में श्री सुधीर देव जी का आगमन हुआ। श्री सुधीर देव जी मूलतः सागर के निवासी हैं। सन् 1978 में ही वे अपना घर छोड़कर संघ प्रचारक इस नाते से वे घर से निकल गए। सन् 1980 से ही बापट जी से उनका निकट का परिचय आया। बिलासपुर विभाग प्रचारक एवं प्रांत सेवा प्रमुख इस नाते से संस्था में आना जाना रहता था ही। आश्रम के सारे कार्यकर्ता सुधीर जी से

परिचित थे। अतः सुधीर जी को कोई अधिक कठिनाई नहीं हुई। बापट जी ने उन्हें आश्रम के सभी आन्तरिक काम सौंप दिये। सुधीर जी ने एक अभिनव पद्धति अपनाई। प्रतिदिन प्रातः काम में जाने के पहले सभी प्रमुख कार्यकर्ता मंदिर में एकत्रित आते थे और आज क्या काम करना है सुनिश्चित करते थे। शाम को फिर सभी एक साथ मिलते थे और काम की समीक्षा करते थे। इस प्रकार धीरे–धीरे आश्रम के आन्तरिक सभी कामों का सूत्र संचालन पूर्णतः सुधीर जी के हाथों में आ गया। बापट जी धीरे–धीरे अपने बाह्य सम्पर्कों से भी परिचय कराने लगे। आर्थिक स्रोतों की जानकारी भी होने लगी।

धीरे–धीरे दामोदर गणेश बापट जी ने अपना सारा काम सुधीर जी को सौंप दिया। आश्रम की कार्यसमिति में सुधीर देव जी को सचिव नियुक्त किया गया। श्री बापट जी दायित्व मुक्त हुए परन्तु सुधीर जी ने उनको कार्यमुक्त होने नहीं दिया। वे प्रत्येक निर्णय उनकी जानकारी में करते रहे, उनके सुझावों को आदेश मानकर करते रहे।

आश्रम की गतिविधियों की ओर छत्तीसगढ़ सरकार का विशेष ध्यान गया। वर्ष 2004 में दामोदर गणेश बापट जी को छत्तीसगढ़ सरकार ने राज्य अलंकरण के लिये चुना। उन्हें एक आवेदन पत्र पर हस्ताक्षर करना था उन्होंने तहसीलदार को कहा – आवेदन करके पुरस्कार पाना ठीक नहीं। लोगों ने कहा यह सहमति पत्र है। आप सहमत हैं या नहीं, सरकार को औपचारिकताएं पूरी करनी पड़ती हैं। किसी तरह बापट जी ने हस्ताक्षर किये। राज्य अतिथि के रुप में तहसीलदार को उन्हें रायपुर ले जाना था 31 अक्टूबर को तहसीलदार गाड़ी लेकर आए परन्तु बापट जी पेसेंजर से ही रायपुर निकल गए। शासकीय मशीनरी परेशान हो गई। अंत में बापट जी रायपुर में पकड़ में आए। 1 नवम्बर को भारत रत्न प्रधानमंत्री पं. अटल बिहारी बाजपेयी जी के हाथों उन्हें सम्मानित किया गया।

कार्य आगे बढ़ता गया। जैविक खाद, गोविज्ञान अनुसंधान, प्रशिक्षण केन्द्र आदि कार्य बढ़ा। एक नए भवन की आवश्यकता का अनुभव होने लगा। साँसद श्रीमती करुणा शुक्ला जी उस समय लोकसभा साँसद थी। साँसद मद की राशि से भास्कर भवन का निर्माण किया गया। वहाँ पर गोमूत्र से औषधि निर्माण कार्य बढ़ता गया। आस–पास के लोग औषधि के लिये आने लगे। उस भवन में प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की गई। किसी भी प्रकार के अभ्यास वर्ग के लिये एक छोटा सा भास्कर–भवन तैयार हो गया। समय के साथ आवश्यकताएं और आवश्यकताओं के अनुरुप योजनाएं बनती गईं।

एक जीप, 1 मोटर सायकल, एक बड़ी मेटाडोर, एक युटीलिटी, दो ट्रेक्टर, हॉलर मिल, दो एम्बुलेंस, धान गेहूँ के लिये मशीन, सिंचाई के साधन आदि समयानुसार युगानुकूल उपलब्ध कराए गए हैं और यह सब बापट जी के परिश्रम का ही परिणाम है।

आगामी वर्ष आश्रम द्वारा प्रचार–प्रसार के साथ–साथ समाज जागरण का भी था क्योंकि संघ के द्वितीय सरसंघचालक प.पू. श्री गुरुजी का सन् 2005–06 जन्म शताब्दी वर्ष था। इस अवसर पर आस–पास के ग्रामों में स्वास्थ्य परीक्षण का कार्यक्रम लिया गया था। आश्रम के लिये ग्राम–सम्पर्क, ग्राम–सर्वेक्षण एवं ग्राम–जागरण का अवसर था। इसी समय दीपावली के अवसर पर माननीय मोहनराव जी भागवत सरकार्यवाह का आगमन हुआ। एक बड़ा कार्यक्रम किया गया जिसमें छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री रमनसिंह जी भी पधारे थे। माननीय मोहनराव जी ने एक कहानी सुनाई – एक गाँव में कुछ लोभी दुराचारी रहते थे उनमें एक परिवार ऐसा था जो प्रतिदिन यज्ञ करता था। वह परिवार सबके सुख की कामना करता था। परन्तु उनके इस कर्म को लोग उपहास करते थे। परेशान होकर वह दम्पत्ति आधी रात में सदा के लिये गाँव छोड़कर निकले। उन्होंने सोचा कि हमारे कारण गाँव वालों की परेशानी होती है। गाँव से बाहर आकर वे पीछे मुड़कर देखते हैं तो गाँव पूरा आग की चपेट में आ गया।

आज चारों ओर हमको भी निराशा दिखती होगी परन्तु हमारे देश में या कहिये कि इस पृथ्वी पर अच्छे लोग हैं उनकी तपस्या से देश बचा है, उनमें बापट जी जैसे अनेक लोग हैं। उनका समर्थन करने वाले कम आलोचना करने वाले अधिक हैं। आलोचना के भय से अच्छे लोग यदि उदासीन हो गए तो हमारे गाँव में भी आग लगने में देर नहीं लगेगी। हमें अपने कामों पर, संस्कारों पर अटूट विश्वास होना चाहिये। इस काम को और गति मिलनी चाहिये।

माननीय मोहनराव जी ने कार्यकर्ताओं से सहज बातचीत में कहा कि कात्रे जी का जीवन समाज के सामने रखना चाहिये। गुरुजी जन्म शताब्दी वर्ष पर एक छोटी पुस्तिका बनी। उसकी प्रस्तावना स्वयं माननीय सरकार्यवाह जी ने लिखी। आज वह लगभग नौ भाषाओं में अनुवादित हो गई है।

परमपूजनीय गुरुजी जन्म शताब्दी वर्ष 2006 में कार्यक्रमों की रचना हो गई थी। वर्ष भर स्वास्थ्य परीक्षण एवं जगजागरण अभियान लिया गया था। एक एम्बुलेंस में सतत एक चिकित्सक एवं सहयोगी टीम की आवश्यकता थी। चांपा से लगभग आठ किलोमीटर दूरी पर सिवनी गाँव है। वहाँ का एक युवा विकास शुक्ला

चिकित्सक की डिग्री लेकर आया था । उसने जन्म शताब्दी वर्ष में पूरा समय इस अभियान को देने का संकल्प लिया । उसको इस कार्य के लिये बिलासपुर का एक सहयोगी श्री डॉक्टर रंगाराव एवं शासकीय डॉक्टर श्रीमती सरिता नागरे, तीनों ने मिलकर वर्ष भर की योजना बनाई । 24 फरवरी 2006 से यह कार्यक्रम प्रारंभ हुआ ।

डॉक्टरों की टीम ने चांपा–जांजगीर जिले के सभी विकासखण्डों में सम्पर्क किया । इस जिले में 09 विकासखण्ड, 631 पंचायत, 890 ग्राम हैं । इसमें से लगभग 30% ग्रामों में, विद्यालयों में स्वास्थ्य परीक्षण एवं जन–जागरण कार्य किया । स्वास्थ्य परीक्षण एवं जनजागरण कार्य एक साथ चलता था । कई ग्रामों में तो आश्रम का नाम ही सुना था परन्तु प्रत्यक्ष कार्य एवं कार्यकर्ता से परिचय इस शताब्दी वर्ष में आया । कुछ लोगों ने नेत्र शिविर में ऑपरेशन से हुए लाभ की जानकारी दी ।

इसी अवसर पर माधव सागर तालाब में महिला–पुरुषों के लिये दो पृथक घाटों का निर्माण कराया गया । अपने प्रवास के समय पुरुष घाट का लोकार्पण माननीय सरकार्यवाह मोहन भागवत जी द्वारा किया गया जिसका नामकरण ''माधव घाट'' किया गया और महिलाओं के लिये बने घाट का नाम ''मौसी घाट'' रखा गया जिसका लोकार्पण राष्ट्रसेविका समिति की प्रमुख संचालिका वन्दनीया ऊषा ताई चाटी जी ने किया । अब यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आश्रम की गतिविधियों की जानकारी सर्वदूर हो गई थी । सन् 2006 का अहिल्या देवी पुरस्कार श्री दामोदर गणेश बापट जी को देने की घोषणा हुई । 12 सितम्बर को रविन्द्र नाट्य गृह इन्दौर में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया । इसमें लोकसभाध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा ताई महाजन एवं महापौर डॉक्टर उमाराशि शर्मा भी उपस्थित थीं । इसमें तत्कालीन लोकसभाध्यक्ष मनोहर जोशी, गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी विशेष अतिथि के रुप में आमंत्रित थे । ऐसे महानुभावों के कर–कमलों द्वारा बापट जी को सम्मानित किया गया । इस अवसर पर लोकसभाध्यक्ष ने कहा – डॉक्टर ए.पी.जे. कलाम साहब ने मुझसे पूछा था कि–''भारत विकसित राष्ट्र कब बनेगा ?'' उस समय मैंने राष्ट्रपति जी की बात का जवाब नहीं दिया था । जब दुबारा उन्होंने पूछा – तब मैंने कहा था–''यह कठिन कार्य है ।'' लेकिन आज के सम्मान समारोह के बाद मैं कहती हूँ ''यदि बापट जी जैसे एक हजार लोग देश में हो जाएं तो यह विकसित राष्ट्र बनेगा ही, साथ ही इसे 2020 में विश्वगुरु बनते से कोई रोक नहीं सकता है । वास्तव में यदि देखा जाए तो बापट जी जिनकी सेवा कर रहे हैं वे परमात्मा के अंश हैं ।''

नरेन्द्र भाई मोदी ने अपने उद्‌बोधन में कहा–''देश के हर 100 कि.मी. के बाद कोई व्यक्ति संगठन सेवा कर ही अपना जीवन गुजार रहा है उन्हें किसी तरह की

कोई पब्लिसिटी नहीं चाहिये । श्री बापट जी के जीवन में एक ही बात रही है ''वन लाइफ–वन मिशन'' सिर्फ कुष्ठ रोगियों की सेवा । इतिहास के पन्नों में उनका नाम दर्ज होगा या नहीं, प्रसिद्धि मिलेगी या नहीं, यह तो कहा नहीं जा सकता लेकिन उन्हें इस मामले में सिद्धि जरूर मिल गई है ।''

आश्रम की गतिविधियों से अनेक लोगों को प्रेरणा मिलती है । कुछ लोगों के पत्रों से आश्रम को प्रेरणा मिलती है । ऐसे अनेक पत्र आश्रम में आते ही रहते हैं जिससे कार्य को दिशा, कायकर्ताओं को ऊर्जा एवं समाज के लोगों को प्रेरण मिलती है । कुछ पत्रों का उल्लेख करना आवश्यक है । प्रतिवर्ष देश के प्रबुद्ध लोगों को रक्षाबंधन के पर्व पर राखी भेजी जाती है । उसका उत्तर भी आता है । भारत माता मंदिर के पूज्य संत स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी महाराज जी का एक पत्र इस प्रकार है :–

आदरणीया महानुभावा मंगली बाई बहन,

सप्रेम नारायण स्मरण,

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त होंगी । मैं बासठ दिवस का केनाडा, यू.के. का प्रवास करके 10 सितम्बर को जोधपुर आया । वहाँ सात दिनों तक अत्यंत प्रेरक कार्यक्रम हुए ।

भगवान की महान कृपा है । गुरूपूर्णिमा लन्दन में हुई । 5000 लोगों ने भाग लिया । आपकी स्मृति आती रही । प्रभु आपका कल्याण करें, सुखी रहें, यही शुभकामना है ।

आपकी राखी मिली धन्यवाद । प्रतिवर्षानुसार रू. 700/– राखी भेंट प्रेषित है ।

सबको जयनारायण, जय श्री कृष्ण ।

हितेच्छुक
(स्वामी सत्यमित्रानंद गिरी)

ग्राम बसना महासमुंद के एक विद्यालय की कक्षा सातवीं की एक छात्रा ने अपने विचार प्रगट किये :–

''मेरे विचार''

मैं अपना जन्मदिन मनाने में केक, मोमबत्ती, चाकलेट आदि सामानों में खर्च न करके जितना हमारे द्वारा खर्च होता है उसे हमारे आस–पास के गाँव में या अनाथ आश्रमों में जो भाई–बहिन पेन, कापी, बैग, कपड़ा नहीं ले पाते, इस पैसे को वहाँ लगाऊंगी। यही मेरा आज का विचार है।

इसी विचार को लेकर मैं संकल्प लेती हूँ कि हर साल मेरे जन्मदिन पर खर्च होने वाले पैसे को दान करूंगी। (दान राशि 300/– रूपये, तीन सौ रूपये)

और दीदी से निवेदन है कि इस विचार को आगे बढ़ाने में सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

फिजूल खर्च मत कीजिये
इसी को भाई–बहिन को दान करें।

आपकी आज्ञाकारी शिष्या
नाम – शाहिन बानो
कक्षा सप्तम ''अ''

''अब्दुल हुसैन आदमजी, जूनी लाइन बिलासपुर का पत्र''

श्री भारतीय कुष्ठ निवारक संघ,
कात्रेनगर, चाँपा

महोदय,

इसके साथ 501/– का चेक नं. 0108853, बैंक ऑफ महाराष्ट्र बिलासपुर का भेज रहे हैं।

कृपया रसीद तोहेर भाई बनाक C/o अब्दुल हुसैन आदमजी, बिलासपुर के नाम से भजेंगे।

धन्यवाद !

Sd/
ताहेर भाई बनाक

एक पत्र 22 अगस्त, 2006, संभाजी नगर, महाराष्ट्र से भी श्री अनिल संवत्सर का आया । श्री अनिल संवत्सर स्व. भास्कर दत्तात्रेय वरवणकर, उपाख्य राजाभाऊ वरवणकर के भांजे हैं । उनके पत्र के कुछ अंशो का उल्लेख करना, मनोरंजक एवं सुचिंतनीय होगा । इसी हेतु से पत्रांश प्रस्तुत है :–

''असल में वे आश्रम के ही थे और हैं, विगत कुछ साल हम आपसे उधार स्वरूप में ही ले पाए, यह हमारा सौभाग्य रहा । एक दिन भी ऐसा नहीं कटा जब उन्हें आपकी याद ना आई हो । कुछ दिन में उनकी काकाजी की भेंट होने वाली थी । बाद में हम उन्हें वहाँ लेकर आने वाले थे । उनका हठ था ? ....

वैदिक परम्परा के अनुसार धार्मिक विधि किये । पिंडदान भी किया । मैं खुद, उनका भतीजा दिलीप वरवंडकर, उनकी सुपुत्री सौ. मीना (कानपुर) उपस्थित थे । कौवे मंडराते थे, पास तक जाते थे पर छूते नहीं थे । उनकी अशान्त इच्छा रही होगी इसलिये हम संकल्प करते रहे, पर कौवे न छुए ।

आखिर मैंने कहा कि मैं चांपा जाकर कुछ दिन रहकर कोई अच्छा काम करूंगा । ''तुरंत कौओं ने प्रसाद ग्रहण किया ।''

आपसे प्रार्थना है इसलिये मुझे अवसर दें ।

आप सबसे बहुत बातें करनी है । उनके दिल की सुनानी है । यह मेरा पत्र से सम्भव न होगा । मेरी वर्षों से इच्छा है कि अपनी संस्था में **ITI, Politechnique** तथा **Engineering College** हो । नींव **I.T.I.** के रुप में रखी जाए । . . . .

अनिल संवत्सर
सौ. सुहास संवत्सर
G-1, चेतन शिल्प, सावरकरनगर
28 N5 (दक्षिण) सिडको,
औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 434003

यवतमाल के बाबासाहब मोहरिल का पत्र तो हृदय को छू जाने वाला है। पत्र मराठी में है :–

।। ॐ ।।

यवतमाल दि. 09.09.06

आदरणीय श्री बापट जी,

सादर नमस्कार,

आपण यवतमाळ ळा आळे असतांना घरी येवून गेळा पणदुर्दैवाने आपळी भेट होऊ शकळी नाहीं, भेट झाळी असती तर आनन्द झाळा असता. आपल्या कार्याबद्दळ अधिक माहिती मिळाळी असती. अस्तू.

मी अेक सामान्य सेवानिवृत्त प्राध्यापक. मी आपल्या कार्याला फार मदत करू शकत नाहीं ही खंत आहे.

परवा माझ्या स्वर्गवासी मुलाचा, अनिल मोहरिल चा 2 रा स्मृति दिन झाळा (वामन द्वादशी च्या दिवशी). त्याच्या स्मृति प्रित्यर्थ 11ह. चा ड्राफ्ट पाठवीत आहे स्वीकार करावा.

तत्रस्थ सर्वांना हरी ॐ.

आपळा
(बाबा मोहरिळ)

पत्र का हिन्दी अनुवाद .....

।।ॐ।।

यवतमाल दि. 09.09.06

आदरणीय बापट जी,

सादर नमस्कार,

आप जब यवतमाल आए थे तब घर आकर गए। दुर्भाग्य से आपसे भेंट नहीं हो सकी। भेंट होती तो आनन्द हुआ होता, आपके कार्य के बारे में अधिक जानकारी मिली होती, अस्तु !

मैं एक सामान्य सेवानिवृत्त प्राध्यापक। मैं आपके कार्य को अधिक सहयोग नहीं कर सकता इसका मुझे खेद है।

परसों मेरे स्वर्गवासी लड़के का, अनिल मोहरिल का दूसरा स्मृति दिन था

(वामन द्वादशी के दिन) उसके स्मृति दिन के अवसर पर (ग्यारह हजार रूपये) रू 11000/– का ड्राफ्ट भेज रहा हूँ, स्वीकार करें।

तत्रस्थ सभी को हरी ॐ।

आपका
(बाबा मोहरिल)

श्रद्धेय दामोदर गणेश बापट जी ने न केवल एक कुष्ठ आश्रम चलाया अपितु समाज में संवेदना जगाई। समाज के प्रति कर्तव्य का भाव विकसित किया। बापट जी पत्र के माध्यम से, विविध उपक्रमों के अवसर पर देश के कोने–कोने में संपर्क, संवाद, संग्रह, संस्कार समन्वय करते रहे। दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारणें, देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।। (17/20) गीता का पाठ पढ़ाते रहे। उनके प्रति श्रद्धा, भक्ति की भावना आश्रम एवं आश्रम के बाहर भी असंख्य लोगों के हृदय में विकसित होती गई। चाहे वे किसी भी पार्टी के लोग हों उनमें बापट जी के प्रति समान आदर भाव है।

आश्रम में रहकर सेवा देने वाली कुछ बहनों ने अपने मन के भाव प्रगट किये। श्रीमती भगवंतिन, जो बुढ़ार (मध्यप्रदेश) की हैं। उसने अंतिम समय तक बापट जी की भक्ति भाव से सेवा की। वे बताती हैं–मुझे बुढ़ार के पंडित विजयकुमार शुक्ला जी ने यहाँ छोड़ा। यहाँ मुझे लगभग बीस साल हो गए हैं मैं कुष्ठरोग से पीड़ित थी। मेरे घर में थोड़ी परेशानी थी। बापट जी (बड़े महाराज) ने मुझे छूकर मेरे हाथ–पैर को देखा उस समय मेरी आँखों में आँसू आ गए। बापट जी हमारे पिता समान हैं, उन्होंने मुझे अपनी बेटी की तरह पाला है। कभी माता–पिता की कमी महसूस नहीं होने दी। जब वे मेरे ऊपर चिल्लाते थे तो लगता था मेरे पिताजी मुझे डाँट रहे हैं। उनके भोजन, चाय, कपड़ा धोना, सफाई करना आदि काम मैं ही करती हूँ। बापट जी संतपुरूष हैं। मैं अपने को भाग्यवान मानती हूँ कि मुझे ऐसे तपस्वी की सेवा का अवसर मिला।

श्रीमती रूखमीन बाई, अन्नपूर्णा भवन में सम्पूर्ण भोजन विभाग संभालती थीं। वह भाटापारा, बलौदाबाजार जिला से आई हैं। श्री गणपतराव नायडू जी ने अस्वस्थ अवस्था में उसे यहाँ लाया था। सन् 1988 में वह यहाँ आई। तीस साल हो गए। उसने छत्तीगढ़ी भाषा में अपनी भावनाएं प्रगट की .....

''सबले पहिली मोला चाँउर निमारे के काम देईसे ... फेर भंडार के काम मा लगा देहे। अब मोला तीस साल हो गेहे। ..... अब हमर दाई–ददा, गुरु, बड़े भाई

जऊन कहिले गा, सब कुछ हमर बड़े महाराज रहिसे । हमला तो अपन छोटे बहिनी सँही मानत रहिसे । ..... माई लोगन मन अब्बड़ झगरा होवै त बड़े महाराजेच हा सम्हालै ।''

एक हे नोनी बाई, जो सारंगढ़ के पास दानसरा की रहने वाली है । डभरा के पास एक गाँव में उसकी शादी हुई । बाद में उसको कुष्ठरोग हो गया । पति ने लाकर उसे आश्रम में छोड़ दिया । वह अपना इलाज आश्रम में कराती रही । एक दिन उसको पता चला कि उसके पति ने दूसरा विवाह कर लिया । यह सुनकर वह आग बबूला हो गई । प्रतिदिन अपने पति को भला–बुरा कहती थी । एक दिन बापट जी ने उसको बुलाया । अपने पास बैठाकर समझाया–''तू अपनी हालत देख, तेरे कोई बच्चे नहीं है । तेरे पति को अपनी गृहस्थी चलानी है । तुझे ठीक होने में भी समय लगेगा । वह क्या करेगा ? तेरा इंतजार करके अपनी जवानी खतम कर लेगा क्या ? रोज रामायण पढ़ती है । सीता का दुःख सुना है न ! सीता ने कभी राम को कुछ कहा क्या ? सीता को तो कोई रोग नहीं था । वे हमेशा ही राम की भलाई चाहती थीं । तू तो अभी घर नहीं जा सकती, तेरे पति ने अपना घर बसा लिया है, अब उसकी गृहस्थी ठीक चले इसके लिये भगवान से प्रार्थना कर ।

बापट जी के शब्दों का उस पर कितना, कैसा प्रभाव पड़ा ? वह कहती है मैं रात भर रोई । सुबह बड़े महाराज का पैर पकड़ लिया, माफी माँगी ! कुछ दिन बाद मेरा पति आया साथ में नई पत्नी भी थी । दूसरी पत्नी ने पैर छुकर प्रणाम किया मैनें उसके हाँथ में दस रूपये रख दिये और कहा–मैं अपनी अमानत तुम्हें सौंप रही हूँ । तुम दोनों अपनी गृहस्थी बसाओ । मैं यहीं रहूँगी । कभी–कभी मिलने आ जाना । नोनी बाई ने अपने पति से कहा–मुझे कोई शिकायत नहीं है । आप सुखी रहें यही मैं चाहती हूँ ।

बापट जी के शब्दों का प्रभाव कितनी गहराई तक होता था यह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है । बापट जी ने कितने लोगों का घर बसाया, कितनों को प्रेरणा दी, इसकी श्रृंखला बहुत लंबी है ऐसा दिखाई देता है ।

बापट जी को पुरस्कृत करके सामाजिक संस्थाएं धन्यता का अनुभव करने लगी थीं । दिव्य प्रेम सेवा मिशन पुरस्कार दिनांक 14.10.2006 हरिद्वार में स्वामी रामदेव जी द्वारा दिया गया । तेजस पुरस्कार, तिलकनगर शिक्षण प्रसारण मंडल डोंम्बीवली महाराष्ट्र द्वारा श्री अनिरूद्ध देशपांडे जी द्वारा दिया गया । 31.12.2006 को स्व. गोविंद सारंग स्मृति पुरस्कार मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय शिवराजसिंह चौहान के द्वारा दिया गया । संजीवनी गुरूकुल रत्नागिरी (महाराष्ट्र) समस्त भक्तगण, महालक्ष्मी देवस्थान, कोल्हापुर (महाराष्ट्र), दिनांक 11.02.2010, को पं.

दीनदयाल उपाध्याय स्मृति नागपुर द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मृति सम्मान, नागपुर में परमपूजनीय सरसंघचालक, मोहनराव भागवत जी द्वारा गरिमामय कार्यक्रम में प्रदान किया गया। इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए सरसंघचालक जी ने कहा ''पीड़ितों का कार्य सन् 1962 में कात्रेनगर चांपा में शुरू किया था। कुष्ठ निवारक संघ का यह कार्य किसी प्रतिक्रिया स्वरूप प्रारंभ नहीं किया गया था, बल्कि संवेदना से ही प्रारंभ हुआ है। उन्होंने कहा कि चराचर में एक ही आत्मा विराजमान है इस भावना की एकात्मता का आँकलन होने से ही सेवा भाव उत्पन्न होता है।''

इसी प्रकार भारतीय शिक्षण मंडल एवं संस्कार भारती, कानपुर (उ.प्र.) द्वारा दिनांक 15.03.2010 को ''सेवारत्न'' सम्मान से सम्मानित किया गया। बापट जी की सादगी, सद्व्यवहार, कर्मकठोरता से पत्रकारिता जगत भी प्रभावित था। प्रसिद्ध इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जी.टी.वी. ने छत्तीसगढ़ के महामहिम राज्यपाल के हाथों दिनांक 22.12.2011 को सम्मानित किया।

आदरणीय बापट जी को कार्य करते 38 वर्ष हो गए थे और आश्रम को प्रगति के साथ सफलतापूर्वक 50 वर्ष हो गए थे। सन् 2012 यह वर्ष आश्रम का स्वर्णजयंती वर्ष था। वर्ष भर के लिये आश्रम के अनेक कार्यक्रमों की योजना रचना बनाई गई। साथ ही यह भी निश्चित हुआ कि पचास वर्षों का लेखा–जोखा बताने वाली आश्रम की एक स्मारिका निकाली जाए। इस कार्य के लिये श्री व्यंकटेश शंकर तेलंग जी को अधिकृत किया गया। उन्होंने अथक परिश्रम करके स्मारिका की आकर्षक साज–सज्जा तैयार की। स्मारिका का नाम ''भगीरथ'' रखा गया।

वर्तमान आवश्यकताओं को देखते हुए युवाओं में कौशल विकास हो यह सोचकर स्वर्णजयंती वर्ष पर दो उपक्रम विशेष रूप से प्रारंभ किये गए। एक उद्योग भवन के उपर कक्ष में युवतियों के लिये सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र एवं चिकित्सालय भवन के उपर कौशल विकास केन्द्र (Skill Development Centre) प्रारंभ किया गया।

वर्तमान में सभी उपक्रमों के साथ भारतीय कुष्ठ निवारक संघ संचालित है।

****

कन्या सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, कुष्ठ आश्रम चांपा कात्रेनगर

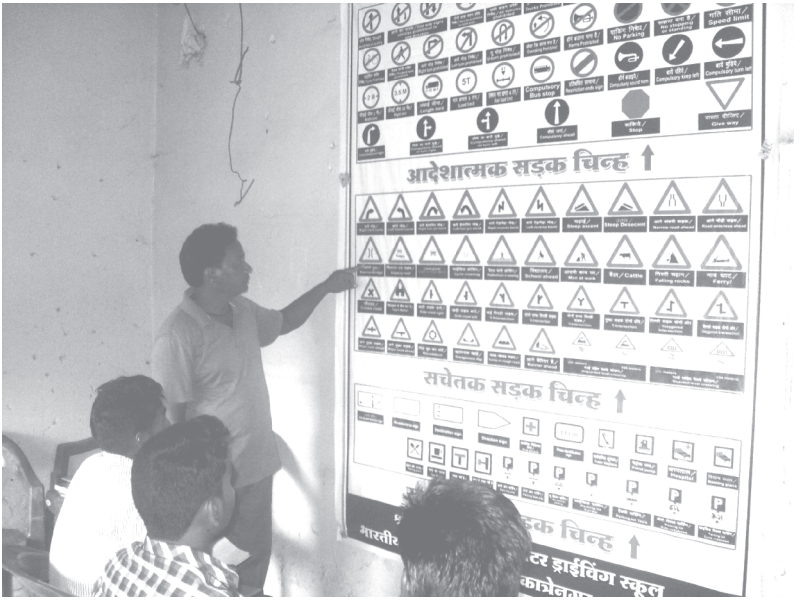
आदेशात्मक सड़क चिन्ह
सचेतक सड़क चिन्ह

पद्मश्री पुरुस्कार के पश्चात राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में सामूहिक चित्र,
सबसे अंतमें बैठे हुए बापट जी

अस्ताचल की ओर .....

भारत की महान आलोकजीवी संस्कृति में जहाँ सूर्योदय को जल अर्पित करने की परम्परा है वहीं अस्ताचल के सूर्य को भी अर्ध्य देने का संस्कार है । सामजिक, शैक्षणिक, राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा बापट जी के सम्मान रूपी अर्ध्यार्पण चल ही रहा था । 15 अगस्त 2015 को महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय सम्मान मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान द्वारा दिया गया । 20 अगस्त 2016 को स्वामी अखंडानन्द पुरस्कार स्वामी गौतमानंद एवं केन्द्रीय मंत्री श्री जे.पी. नड्डा द्वारा दिया गया ।

शैक्षणिक संस्थाएं भी पीछे नहीं रहीं । पंडित सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय बिलासपुर ने दिनांक 21.12.2016 को दामोदर गणेश बापट जी एवं बस्तर के दन्तेवाड़ा जिला, ग्राम हीरानगर में वनवासियों की सेवा समर्पित सुश्री बुधरी ताती को पी.एच.डी. की मानद उपाधि से सम्मानित किया ।

केन्द्र की सरकार का ध्यान भी देश के पिछड़े इलाके में कार्यरत मौन तपस्वियों की ओर गया । सन् 2018 के पद्मश्री पुरस्कार के लिये महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने प्रदेश के दो व्यक्तियों के नाम का चयन किया । एक डॉक्टर दामोदर गणेश बापट एवं दूसरे थे डॉ. श्यामलाल चतुर्वेदी बिलासपुर । नाम सुनकर सम्पूर्ण क्षेत्र में आनन्द, उत्साह, स्वाभिमान का वातावरण व्याप्त हो गया । बापट जी के जीवन का अंतिम सम्मानार्थ भारत के महामहिम राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोविंद ने राष्ट्रपति भवन के गरिमामय कार्यक्रम में दिनांक 2 अप्रेल 2018 को पद्मश्री से अलंकृत करते हुए दिया ।

बापट जी अपने चर्म चक्षुओं से देख पाते ऐसी सम्मान श्रृंखला को विराम लगा ।

श्रद्धेय पद्मश्री डॉक्टर दामोदर गणेश बापट जी स्वयं लोकतंत्र की परम्परागत व्यवस्था का सम्मान करने दिल्ली गए थे । परन्तु उनके मन में न हर्ष न विषाद ! वे ''सिध्यसिध्योर्निविकारः'' हैं । पुरस्कार लेने के बाद सार्वजनिक रुप से घोषणा कर दी ''यह सम्मान मेरा नहीं कुष्ठ रोगियों का है ।'' वे समाज से अपील करते हैं–''कुष्ठ रोगियों को अपनेपन की आवश्यकता होती है । हम उनसे दूर न भागें बल्कि उनकी सहायता करें ।''

श्री बापट जी लकड़ी लेकर चलने लगे थे । स्मरण शक्ति भी जवाब देने लगी थी । वे जब किसी से बातचीत करते थे तो विषयांतर हो जाता था । परिचित

व्यक्ति का नाम भी विस्मरण हो जाता था। बहुत पुरानी बातें याद आती थीं। एक दिन सुधीर जी ने पूछा–बापट जी, रामसनेही मिसिर, कलकत्ता को जानते हैं ? तुरन्त बापट जी ने प्रश्न किया–तुमको किसने बताया ? ..... वह पिंजरापोल सोसायटी का चौकीदार था'' पुरानी बातें तो याद थीं, परन्तु तुरंत जो बातें होती थी वह थोड़ी देर बाद मस्तिष्क से ओझल हो जाती थी। इंद्रियाँ जवाब देने लगी थीं।

एक दिन अचानक उन्हें चक्कर आ गया। चांपा अस्पताल में भर्ती कराया गया। ठीक होकर वापस आश्रम आए। कई सामाजिक संस्थाएं उनसे भेंट करने आने लगीं। महाराष्ट्र मंडल ने भी बापट जी से भेंट की। शुभचिंतकों, हितचिंतकों, भक्तों भी कहा जा सकता है, ऐसे लोगों का ताँता लगा ही रहता था। बापट जी का शरीर शिथिल होता जा रहा था। उनकी सेवा में श्री नारायण देव शर्मा जी रहते थे। वे रात भर जागकर उनका ध्यान रखते थे।

07 जुलाई 2019 को बापट जी अचेत हो गए। उन्हें तत्काल बिलासपुर ले जाया गया। अपोलो अस्पताल में गहन चिकित्सा कक्ष में रखा गया। दो दिन बाद कुछ आशा बंधी पर फिर से वे अचेतन अवस्था में चले गए। जिनको भी समाचार मिला वे अपोलो अस्पताल में बापट जी से मिलने पहुँचे। सांसद–विधायक, संघ पदाधिकारी कार्यकर्ता, सामाजिक सांस्कृतिक संगठनों के पदाधिकारी लगातार मिलने पहुँचने लगे, शासकीय अधिकारी, कर्मचारी भी पीछे नहीं थे। पूणें से श्री धनंजय एवं मीना आमड़ेकर, संगीता–विनय बापट उनके परिवार के अन्य सदस्यगण बापट जी से मिलकर गए। विशेष रुप से मुंबई से श्री राजीव भाई झवेरी (हीरा व्यवसायी) बापट जी के दर्शन के लिये आए। उन्होंने डॉक्टरों से मिलकर बापट जी के सर्वोत्तम इलाज की बात कही। पैसे की चिंता न करने का आश्वासन दिया।

भारत की संस्कृति में दीर्घायुर्रारोग्य के लिये धार्मिक अनुष्ठान परम्परा ही है। भारतीय कुष्ठ निवारक संघ में बापट जी के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिये प्रतिदिन भजन–कीर्तन एवं यज्ञ का आयोजन किया गया। परन्तु बापट जी आश्रम वापस नहीं आए। पद्मश्री डॉक्टर दामोदर गणेश बापट, एक अनासक्त सेवाव्रती कर्मयोगी यमराज से एक माह दस दिनों तक संघर्ष करते हुए 17 अगस्त 2019 को मध्यरात्रि 2.35 बजे अपने नश्वर शरीर को छोड़कर अनन्त में विलीन हो गए। भारतीय तिथि के अनुसार दिन शनिवार, भाद्रपद कृष्ण पक्ष द्वितीया, विक्रम संवत 2076, युगाब्द 5121, को सदा के लिये एक सेवा का दैदीप्यमान नक्षत्र अस्ताचल की ओर चला गया।

समाचार पूरे देश में फैल गया। भारतीय कुष्ठ निवारक संघ चांपा में

हाहाकार मच गया। करुण क्रंदन, चीत्कार, रुदन से आश्रम दहल गया। पैंतालीस वर्षों की तपस्या के आभामंडल का वलयाच्छादित आवरण अचानक उड़ गया। बड़े महाराज चले गए। पार्थिव शरीर के अंतिम दर्शन की आस लगाए आश्रमवासी, आसपास के ग्रामवासी एकत्रित होने लगे। बापट जी का पार्थिव शरीर दर्शनार्थ संघ कार्यालय, बिलासपुर लाया गया। वहाँ से उनके शरीर को आश्रम लाया गया। उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार कात्रे जी की प्रतिमा के सामने उत्तर–दक्षिण रखा गया। शाम को उनके पार्थिव शरीर को बिलासपुर मेडिकल कॉलेज को समर्पित कर दिया गया। आश्रम का वातावरण, उसका फूल रुपी फूल झड़ी डाली के समान हो गया।

''सूर्य का उदय अस्त क्या होता, संध्या की लाली से पूछो।
बिछुड़न का दुःख क्या होता है, फूल झड़ी डाली से पूछो।।''

रविवार दिनांक 18 अगस्त के समाचार पत्र एक रवि के अस्त होने के समाचार से भरे पड़े थे। छत्तीसगढ़ की राज्यपाल सुश्री अनुसूईया उइके, मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, बिलासपुर सांसद अरुण साव, महापौर किशन राय, नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक, राजनांदगाँव सांसद संतोष पांडे, पूर्व सांसद लखन लाल साहू, भाजपा महामंत्री रामदेव कुमावत, संघ के माननीय विभाग संघचालक श्री काशीनाथ गोरे, राष्ट्रसेविका समिति की अ.भा. सहकार्यवाहिका सुश्री सुलभाताई देशपांडे, भारतीय कुष्ठ निवारक संघ के सचिव श्री सुधीर देव, अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार स्वर्णकार, तेजस्विनी छात्रावास की अध्यक्षा शारदा रहालकर, श्री बुक डिपो के संचालक नरेन्द्र गुप्ता, डॉ विनोद तिवारी, राज्यसभा पूर्व सांसद श्री गोपाल जी, संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री शांताराम जी सर्राफ, पूर्व मंत्री बलिहार सिंह जी आदि अनेक लोगों के संस्मरणों से समाचार पत्र–पत्रिकाएं भरी थीं। इलेक्ट्रॉनिक्स जी.टी.वी. मीडिया न्यूज 36, जी.टी.वी., दूरदर्शन केन्द्र, छत्तीसगढ़, साधना चैनल आदि शोक संदेशों का लगातार प्रसारण कर रहे थे।

अनेक सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं, राजनेताओं से लगातार शोक संदेश आने लगे। कुछ प्रमुख संदेशों को यहाँ यथावत देना उचित होगा। महामहिम राष्ट्रपति महोदय, माननीय प्रधानमंत्री महोदय, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रधान कार्यालय नागपुर, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित भाई शाह आदि के अलावा भी अनेक शुभचिंतकों, हितचिंतकों स्वजनों के शोक संदेश मिले हैं।

दिनांक 03 सितम्बर 2019 को एक बड़ी शोकसभा बिलासपुर गुरुनानक

सभागृह दयालबंद में आयोजित की गई जिसमें संघ के माननीय सरकार्यवाह भैय्याजी जोशी (सुरेश जोशी) अपनी श्रद्धांजलि देने पधारे थे। उन्होंने कहा –

''दामोदर गणेश बापट को शब्दों में बाँधना मुश्किल है। ऐसा करने में कहीं न कहीं अपूर्णता रह जाएगी। कुष्ठ रोगियों की सेवा के जरिये गीता के कर्म के सिद्धान्त की कसौटी पर खुद को उतारने वाले बापट जी की गणना ऋषि मुनियों में की जा सकती है। बापट जी के मन में समाज की एकात्मता का भाव था। वे सामाजिक कार्य के लिये पूर्णतः समर्पित थे तथा हर बाधा में एक रास्ता देखते थे। उन्होंने कुष्ठ रोगियों के जीवन को सम्मानजनक बनाने के लिये स्वावलम्बन को रास्ता बनाया। बापट जी ने कभी माला नहीं फेरी, साधना के लिये जंगल नहीं गए पर उन्होंने समाज धर्म का पालन किया। दुर्भाग्य से पद्मश्री प्राप्त करने के लिये अर्जी देनी पड़ती है परन्तु पद्मश्री स्वयं चलकर बापट जी के पास पहुँची। उन्होंने इसे अलिप्त भाव से ग्रहण किया।''

सुश्री सुलभाताई देशपांडे राष्ट्र सेविका समिति की अखिल भारतीय सहकार्यवाहिका ने कहा–बापट जी ने बालिकाओं की शिक्षा के लिये सघन प्रयास किये। बिलासपुर स्थित तेजस्विनी छात्रावास उन्हीं की देन है। उन्होंने अपनी भावनाओं को गीत के रुप में प्रस्तुत किया ....

कर्मयोगी हे महामनीषी तुम,
पद्मश्री हे मृदुभाषी।
संतस्वभावी सेवाव्रती तुम,
दीन जनों के अभिलाषी ।। धृ ।।

दधीचि सा जीवन व्रत लेकर,
कण–कण, क्षण–क्षण देह गलाया।
कुष्ठ जनों के मन में तुमने
आशा का नवदीप जलाया।
विघ्न विनाशक स्थापित करके,
आश्रम में देवत्व को जगाया।
कात्रे जी के सृजित कार्य को,
नन्दनवन सम सुगढ़ सजाया।
आज दुःखी है अंतरमन से,

आश्रम का हर रहिवासी,
लो श्रद्धांजलि शब्द सुमन से,
दीनजनों के अभिलाषी ।। 1 ।।

तेजस्विनी का तेज जगाकर,
सुन्दर छात्रावास बनाया ।
हर कन्या का भवित बनाने,
स्नेह सूत्र का हाथ बढ़ाया ।
सजग दृष्टि थी उनकी हर पल,
छत्र आज वह उजड़ गया है,
नयनों में भर नीर हमारे,
पथ का राही बिछुड़ गया है ।
देहदान कर अंतिम क्षण में,
अमर हो गया अमृतवासी ।
लो श्रद्धांजलि शब्द सुमन से,
दीनजनों के अभिलाषी ।। 2 ।।

''एक वीतरागी निस्पृह कर्मयोगी । जिसके बाह्य स्वरूप से अर्न्तमन की गहराई को नापना एक सामान्य व्यक्ति के लिये सहज साध्य नहीं था । केवल कुष्ठ रोगी के लिये ही नहीं उनके परिवार पुनः बसाकर उनमें जीवन का आशादीप जलाकर उनके संतति की भी चिंता करने वाला जीवट जीवनव्रती मैंने अपने जीवन में बापट जी के रूप में देखा है ।''

इस कार्यक्रम में अनेक महानुभावों ने भी अपने शब्दसुमन अर्पित किये हैं ।

दिनांक 17 सितम्बर 2019 को उनका मासिक श्राद्ध भारतीय कुष्ठ निवारक संघ कात्रेनगर चांपा में सम्पन्न हुआ । जो अंतिम दर्शन में नहीं आ पाए थे वे इस कार्यक्रम में पधारे । बापट जी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की । संस्था के अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार स्वर्णकार जी ने सभी महानुभावों, बंधु–भगिनियों का आभार मानते हुए आशीर्वाद एवं सहयोग की कामना व्यक्त की । स्व. बापट जी की इच्छा के अनुरूप कात्रे जी की प्रतिमा के सम्मुख एक तुलसी वृन्दावन (चबूतरा) बनाने का संकल्प लिया गया ।

कुष्ठरोगियों के अंग ही नहीं गलते । उनका मनोबल और आत्म सम्मान भी पूर्णतः समाप्त हो जाता है । उसको समाज से मिलती है घृणा, उपहास, उपेक्षा और

कभी–कभी दया। ऐसे में इस रोग को लेकर फैली भ्रांतियाँ जले पर नमक का काम करती हैं। ऐसी अवस्था में इस रोग से ग्रस्त लोगों की सेवा के लिये चाहिये समर्पण, दृढ़ इच्छा शक्ति, प्रबल संस्कार और आत्मविश्वास इसी के आधार पर बापट जी जैसे मनस्वी, तपस्वी, साधनामस्त व्यक्ति ने उनके आत्मबल और आत्म सम्मान को बढ़ाया। बापट जी की सादी वेशभूषा, रोगियों द्वारा बनाए गए भोजन का प्रसाद, सेवा के यज्ञकुण्ड में तपा उनका शरीर, कुष्ठरोगियों द्वारा बनाई उनकी केशसज्जा, पैरों में टायर की चप्पल और सबसे बड़ी बात प्रसिद्धि से दूर रहकर सेवा करते हुए उन्हें हो गए पैंतालीस साल। शांताराम जी केतकर (रत्नागिरी,महाराष्ट्र) कहते हैं–''समर्पण क्या होता है यह समझना हो तो कोई बापट जी को देखें।'' शून्य से सृष्टि की रचना करने वाले पद्मश्री डा. दामोदर गणेश बापट जी ने 29 अप्रेल 2010 को अपना शरीर भी दान कर दिया था। बापट जी के मन की भावनाएं कैसी रही होंगी यह हम मात्र कल्पना ही कर सकते हैं। मराठी का एक भजन स्मरण में आता है :–

अवधूत चिंतना ची लागो मनास गोड़ी,
पुरवा तुम्हीं समर्था ही आस एक बेड़ी।
कानी सदैव यावी तुमची प्रसन्न वाणी,
सम्पून सर्व जावी माझी जूनी कहाणी।
एकैक श्वास माझा तव स्पर्शहाच व्हावा,
बेड़ात याच देवा हा देह सम्पवावा।

''हिन्दी अनुवाद''
अवधूत चिंतना की छाया रहे घनेरी,
हे समर्थ पूर्ति कर दो यह आस एक मेरी।
कर्णों में गूंजे सदा, तेरी प्रसन्न वाणी,
मिट जाए सर्व मेरी, अतीत की कहानी।
एकैक श्वांस में मुझे, तब स्पर्श का ही भास हो ,
मस्ती में झूमता सदा, निज देह की न आस हो ।।

श्रद्धेय दामोदर गणेश बापट जी सशरीर हमारे बीच नहीं हैं परन्तु वे सदैव अपनी अंतहीन अनुपस्थिति का आभास कराते रहेंगे।

।। इति श्री दामोद्राय नमः ।।

–: सम्पर्क सूत्र :–

01. श्री मनोहर वियाणी, मूर्तिजापुर (महाराष्ट्र) (बापटजी के बालमित्र)
02. श्री पांडुरंग क्षीरसागर, मूर्तिजापुर (महाराष्ट्र) (बालमित्र)
03. श्री चौगावकर, मूर्तिजापुर (महाराष्ट्र) (बालमित्र)
04. श्रीमती प्रभा महादेव बापट वर्धा (महाराष्ट्र) (भाभीजी)
05. श्रीमती सुनन्दा पुरूषोत्तम बापट पूणें (महाराष्ट्र) (भाभीजी)
06. श्रीमती मीना धनंजय आमड़ेकर पूणें (महाराष्ट्र) (भतीजी)
07. श्रीमती संगीता विनय बापट पूणें (महाराष्ट्र) (बहू)
08. श्री वसंतराव बापट, चार्टर्ड एकाउन्टेंट, कोलकोता (बंगाल)
09. श्री शिवभगवान बागड़िया, कोलकोता (बंगाल)
10. रामसनेही मिसिर, चौकीदार, पिंजरापोल सोसायटी कोलकोता (बैरकपुर) बंगाल
11. श्री जगदेव उराँव, अ.भा. अध्यक्ष, बनवासी कल्याण आश्रम, जशपुरनगर (छ.ग.)
12. डॉ. प्रसन्नदामोदर सप्रे, अ.भा. बनवासी आश्रम, डोंबीवली महाराष्ट्र
13. स्व. बाबाराव पुराणिक, पूर्व विभाग प्रचारक, बिलासपुर विभाग (छत्तीसगढ़)
14. श्री छबीलाल दुबे, रायपुर (छत्तीसगढ़)
15. स्व. पंढ़रीराव कृदत्त, धमतरी (छत्तीसगढ़)
16. श्री तेजूराम जी, जशपुरनगर (छत्तीसगढ़)
17. श्री रामप्रतापसिंह पूर्व भा.ज.पा. प्रदेश संगठन मंत्री, जशपुरनगर (छत्तीसगढ़)
18. श्री चैतूराम भगत, ग्राम भँवर, सन्ना, जशपुरनगर (छत्तीसगढ़)
19. श्री गोपाल गुरूजी, जशपुरनगर (छत्तीसगढ़)
20. डॉ. पंकज भाटिया, आगरा (उत्तरप्रदेश)
21. श्री बलिहार सिंह जी पूर्व मंत्री, म.प्र. शासन, चांपा (छत्तीसगढ़)
22. श्री पुनीराम सूर्यवंशी, सोंठी चांपा (छत्तीसगढ़)
23. श्री प्रदीप स्वर्णकार, अध्यक्ष, भारतीय कुष्ठ निवारक संघ, कात्रेनगर चांपा (छत्तीसगढ़)
24. श्री रविन्द्र सराफ, चांपा (छत्तीसगढ़)
25. श्री सुधीर देव, सचिव, भारतीय कुष्ठ निवारक संघ, कात्रेनगर चांपा (छत्तीसगढ़)

26. श्री अरूण खानखोजे, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
27. श्री माधव एकनाथ राजहंस, हुड़को, आमदीनगर, भिलाई (छत्तीसगढ़)
28. डॉ. हरीसिंह चन्देल, अस्थिरोग विशेषज्ञ, चांपा (छत्तीसगढ़)
29. श्रीमती अरूंधती खानखोजे, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
30. श्री व्यंकटेश शंकर तेलंग, नाशिक (महाराष्ट्र)
31. सुश्री सुलभाताई देशपांडे, सहकार्यवाहिका राष्ट्रसेविका समिति, बिलासपुर (छ.ग.)
32. श्री दिवाकर भिकाजी देव, सागर (म.प्र.)
33. श्री जयकिशन जायसवाल, ग्राम याजाली जिला लोवर सुबनसिरी (अरूणाचल)
34. श्री हरदयालराम कुजुर, ग्राम पटया, सन्ना, मनोरा जिला जशपुर (छत्तीसगढ़)
35. श्री किशोर बुटोलिया, कोरबा (छत्तीसगढ़)
36. श्री अनुराग पांडेय, भारतीय प्रशासनिक सेवाधिकारी, रायपुर (छत्तीसगढ़)
37. डॉ. विजय गोविन्द पोल, मुख्य चिकित्साधिकारी, आनंदवन वरोड़ा (महाराष्ट्र)
38. श्री अविनाश साठे, आनन्दवन वरोड़ा (महाराष्ट्र)
39. श्री माधव विट्ठल कवीश्वर, आनंदवन वरोड़ा (महाराष्ट्र)
40. डॉ. प्रभाकर सखाराम जोशी, श्री जयसिंह बालाजी देशमुख, गोवर्धन दीवान, जयधर यादव, दीपक कुमार कहरा, श्री नारायण देव शर्मा, जगदीश एवं देवाँगन, विनोद गुप्ता, श्रीमती बदाला, श्रीमती नीरबाई, श्रीमती रूखमिन, श्रीमती भगवंतिन, श्रीमती नोनीबाई, श्री भोला, श्री समीर, सभी कार्यकर्ता भारतीय कुष्ठ निवारक संघ, कात्रेनगर चांपा (छत्तीसगढ़)
41. श्री राधेश्याम जलक्षत्री, कात्रेनगर चांपा (छत्तीसगढ़)
42. पं. अचिंत्य दास, ज्योतिषाचार्य, जगदलपुर, बस्तर (छत्तीसगढ़)

संदर्भ ग्रंथ एवं सन्दर्भ तंत्र

01. परमानंद माधवम् पुस्तक (मराठी–हिन्दी)
02. बाबा साहब आमटे (लेखक–भा.ग. बापट)
03. दैनिक तरूणभारत, नागपुर (महाराष्ट्र)
04. दैनिक भास्कर, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
05. दैनिक नवभारत, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
06. दैनिक जनसत्ता, कोलकोता (बंगाल)
07. नई दुनिया, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
08. दैनिक हरिभूमि, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
9. देवपुत्र मासिक, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
10. साप्ताहिक विवेक (हिन्दी/मराठी) महाराष्ट्र
11. महाराष्ट्र टाइम्स
12. शाश्वत राष्ट्रबोध, रायपुर (छत्तीसगढ़)
13. पत्रिका, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
14. न्यूज – 36
15. दूरदर्शन केन्द्र, छत्तीसगढ़
16. जी.टी.वी., छत्तीसगढ़
17. साधना चैनल, छत्तीसगढ़

पद्मश्री डॉ. दामोदर गणेश बापट जी की कुंडली

Damodar Ganesh Bapat ji (Chandu)

Model: C1

SrNo: 101-102-101-1038 / 8 Date: 06/03/2022

लिंग	: पुल्लिंग
जन्म तिथि	: **29/04/1935**
दिन	: सोमवार
जन्म समय	: **124500 ıटे**
इष्ट	: 17:15:56 घटी
स्थान	: **Amravati**
राज्य	: Maharashtra
देश	: India

अक्षांश	: 20:58:00 उत्तर	चैत्रादि संवत / शक	: 1992 / 1857
रेखांश	: 77:50:00 पूर्व	मास	: वैशाख
मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व	पक्ष	: कृष्ण
स्थानिक संस्कार	: -00:18:40 घंटे	सूर्योदय कालीन तिथि	: 11
ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे	तिथि समाप्ति काल	: 13:33:22
स्थानिक समय	: 12:26:20 घंटे	जन्म तिथि	: 11
वेलान्तर	: 00:02:33 घंटे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: पू०भाद्रपद
साम्पातिक काल	: 02:51:36 घंटे	नक्षत्र समाप्ति काल	: 23:48:59 घंटे
सूर्योदय	: 05:50:37 घंटे	जन्म नक्षत्र	: पू०भाद्रपद
सूर्यास्त	: 18:42:05 घंटे	सूर्योदय कालीन योग	: ऐन्द्र
दिनमान	: 12:51:27 घंटे	योग समाप्ति काल	: 20:24:04 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	: उत्तरायण	जन्म योग	: ऐन्द्र
सूर्य स्थिति(गोल)	: उत्तर	सूर्योदय कालीन करण	: बालव
ऋतु	: ग्रीष्म	करण समाप्ति काल	: 13:33:22 घंटे
सूर्य के अंश	: 15:05:29 मेष	जन्म करण	: बालव
लग्न के अंश	: 23:44:00 कर्क		

अवकहड ı चक्र		**ııत चक्र**	
लग्न–लग्नाधिपति	: कर्क – चन्द्र	मास	: चैत्र
राशि–स्वामी	: **कुम्भ – शनि**	तिथि	: 3-8-13
नक्षत्र–चरण	: **पू०भाद्रपद – 2**	दिन	: गुरुवार
नक्षत्र स्वामी	: गुरु	नक्षत्र	: आर्द्रा
योग	: ऐन्द्र	योग	: गण्ड
करण	: बालव	करण	: किंस्तुघ्न
गण	: मनुष्य	प्रहर	: 3
योनि	: सिंह	वर्ग	: श्वान
नाड़ी	: आद्य	लग्न	: मिथुन
वर्ण	: शूद्र	सूर्य	: वृष
वश्य	: मानव	चन्द्र	: धनु
वर्ग	: मेष	मंगल	: मिथुन
युँजा	: अन्त्य	बुध	: वृष
हंसक	: वायु	गुरु	: कर्क
जन्म नामाक्षर	: सो–सोमनाथ	शुक्र	: सिंह
पाया(राशि–नक्षत्र)	: लौह – लौह	शनि	: मेष
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	: वृष	राहु	: कन्या

आचार्य अचिन्त्य मुरारी दाश
संजीवनी ज्योतिष अनुंधान केन्द्र,
दूकान नं.–2, पशुचिकित्सालय कॉम्पलेक्स, कृषिमण्डी रोड़, जगदलपुर बस्तर,
40633676ए8839633866ए826461004 म्उंपस.चजण्बीपदजलंकें76 ⁄ हउंपसण्बवउ
Email-pt.achintyadas76@gmail.com 1

Damodar Ganesh Bapat ji (Chandu)

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	23:44:00	323:20:58	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	मंगल	–––
सूर्य			मेष	15:05:29	00:58:19	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	उच्च राशि
चंद्र			कुंभ	26:38:13	14:30:27	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	शुक्र	सम राशि
मंगल	व		कन्या	15:22:43	00:14:37	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	शत्रु राशि
बुध		अ	मेष	17:13:26	02:09:11	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	चंद्र	सम राशि
गुरु	व		तुला	26:49:11	00:07:20	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र			वृष	22:23:19	01:10:20	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	स्वराशि
शनि			कुंभ	15:01:51	00:04:47	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	मूलत्रिकोण
राहु	व		मक	02:29:38	00:06:01	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	02:29:38	00:06:01	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	मित्र राशि
हर्ष			मेष	08:51:33	00:03:26	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	–––
नेप	व		सिंह	18:59:52	00:00:46	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	–––
प्लूटो			कर्क	00:58:40	00:00:33	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	मंगल	–––
दशम भाव			मेष	22:24:54	--	भरणी	--	2	मंगल	शुक्र	शनि	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु स्पष्ट
चित्रपक्षीय अयनांश 225728

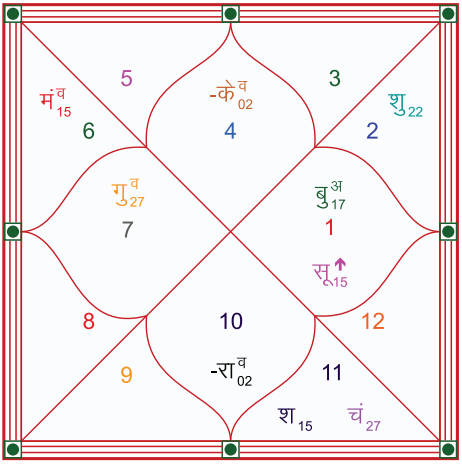

लग्न–चलित

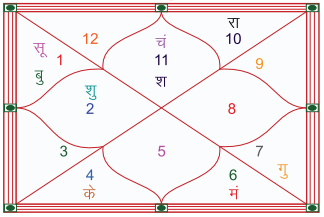

चन्द्र कुंडली

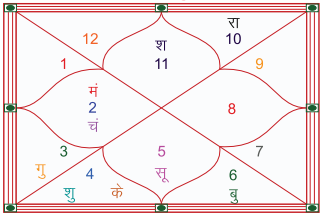

नवमांश कुंडली

आचार्य अचिन्त्य मुरारी दाश
संजीवनी ज्योतिष अनुंधान केन्द्र,
दूकान नं.–2, पशुचिकित्सालय कॉम्पलेक्स, कृषिमण्डी रोड़, जगदलपुर बस्तर,
40633676Ҁ8839633866Ҁ826461004 म्ंपस.चजण्बीपदजलंकें76 ध् हउंपसण्बवउ
Email-pt.achintyadas76@gmail.com

2

महामहिम राष्ट्रपति जी का बापट जी के नाम शोक संदेश

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

22 अगस्त, 2019

प्रिय श्री सुधीर देव,

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ के पूर्व सचिव, वर्तमान संरक्षक एवं सेवाव्रती, डॉ. दामोदर गणेश बापट जी के देहावसान के बारे में जानकर दुख हुआ।

डॉ. बापट लगभग 47 वर्ष तक भारतीय कुष्ठ निवारक संघ के माध्यम से कुष्ठ रोगियों की सेवा करते रहे। देहदानी डॉ. बापट, अपने सेवाकार्यों के लिए पूरे छत्तीसगढ़ में पहचाने जाते थे। उनकी असाधारण सेवाओं के लिए वर्ष 2018 में उन्हें पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया था।

कृपया मेरी हार्दिक शोक संवेदनाएं स्वीकार करें और भारतीय कुष्ठ निवारक संघ से जुड़े अन्य लोगों को भी प्रेषित करें।

गहन संवेदनाओं सहित,

आपका,

रामनाथ कोविन्द

(राम नाथ कोविन्द)

श्री सुधीर देव
सचिव,
भारतीय कुष्ठ निवारक संघ,
कात्रेनगर चांपा, जिला–जांजगीर चांपा,
छत्तीसगढ़–495671

आदरणीय प्रधानमंत्री जी का बापट जी के नाम शोक संदेश

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister

नई दिल्ली
श्रावण 29, शक संवत् 1941
20 अगस्त, 2019

श्री सुधीर देव जी,

पद्मश्री डॉ. दामोदर गणेश बापट जी के निधन से गहरा दु:ख हुआ।

कुष्ठ रोगियों के उपचार और उनके सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए पूरा जीवन समर्पित करने वाले डॉ. बापट जी का समाज के प्रति योगदान अतुलनीय है। देहदान का संकल्प भी जीवनभर उनके द्वारा की गई समाजसेवा व संस्कार की कड़ी ही है। उनका निधन देश व समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह स्वर्गीय बापट जी की आत्मा को शांति दें और उनके प्रशंसकों को इस कठिन घड़ी में दु:ख सहने का धैर्य और संबल प्रदान करें।

आपका,

(नरेन्द्र मोदी)

श्री सुधीर देव
भारतीय कुष्ठ निवारक संघ
ग्राम व पोस्ट- श्री कटारे नगर, (वार्ड नं. 1)
जिला- जांजगीर चांपा
छत्तीसगढ़- 495671

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बापट जी के नाम शोक संदेश

॥ ॐ ॥

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

प्रधान कार्यालय : डॉ. हेडगेवार भवन, महाल, नागपुर – 440032
दूरभाष: (0712) 2723003,2720150 फॅक्स नं. 2721589, Email - hedgewarbhavan@rediffmail.com
सरसंघचालक : **मोहन भागवत** सरकार्यवाह : **सुरेश (भय्या) जोशी**

दिनांक:– 16. 10. 2019

श्री

सस्नेह नमस्कार।

श्री दामोदर गणेश बापट के निधन का समाचार हम सभी के लिए दु:खद रहा है। उनका वियोग आप सभी निकटवर्ती परिवारजनों को एवम् सहयोगी बन्धु–बहनों को प्रदीर्घ समय तक वेदनादायक रहेगा।

अपने चिंतन, कर्तृत्व तथा व्यवहार से सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुये समाज जीवन में प्रतिष्ठा, सम्मान उन्होंने प्राप्त किया था। हम सबके अन्तःकरण में अब केवल उनकी स्मृतियाँ ही शेष हैं।

प. पू. सरसंघचालक, श्री मोहनराव भागवत जी की उपस्थिति तथा मा. सरकार्यवाह, श्री सुरेश (भय्याजी) जी जोशी की अध्यक्षता में **दि. 16, 17, 18 अक्तूबर** को **भुवनेश्वर** में सम्पन्न अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल बैठक के सभी सदस्यों ने दो मिनिट मौन रहकर सद्गत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पण की। हम सम्पूर्ण परिवार के प्रति हमारी हार्दिक संवेदना प्रकट करते है तथा दिवंगत आत्मा को "**सद्गति**" प्राप्त हो यह ईश्वर के चरणों में प्रार्थना करते हैं।

"ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।। "

भवदीय

समीर क्षीरसागर

समीर क्षीरसागर
(प्रधान कार्यालय सचिव)

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, भाजपा का बापट जी के नाम शोक संदेश

रा० कार्या०/ 21757 /दिनांक 21·08·2019

अमित शाह
अध्यक्ष
Amit Shah
President

भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

19 अगस्त, 2019

संदेश

प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता और पद्मश्री से सम्मानित स्व. दामोदर गणेश बापट जी के हृदय विदारक निधन का समाचार प्राप्त कर अत्यन्त पीड़ा हुई।

छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ समाज सेवी स्व. दामोदर गणेश बापट जी के निधन से कुष्ठ रोगियों की सेवा करने के क्षेत्र में एक अपूर्णीय शून्य उत्पन्न हो गया है। बापट जी ने चांपा के सोंठी आश्रम में भारतीय कुष्ठ निवारक संघ द्वारा संचालित आश्रम में कुष्ठ पीड़ितों की सेवा हेतु अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था। बापट जी वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता भी रहे हैं।

मैं दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धाँजलि अर्पित करता हूँ एवं शोकाकुल परिवार के प्रति विनम्र संवेदना व्यक्त करता हूँ।

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

भवदीय

(अमित शाह)

प्रति,
भारतीय कुष्ठ निवारक संघ,
सोंठी आश्रम, कात्रेनगर,
चाम्पा (छत्तीसगढ़)

6–ए, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002 | दूरभाष : +91 11 23500000 | फैक्स : +91 11 23500190 | ई–मेल amitshah.bjp@gmail.com
6-A, Deendayal Upadhyay Marg, New Delhi-110002 | Phone: +91 11 23500000 | Fax: +91 11 23500190 | E-mail amitshah.bjp@gmail.com

निष्काम कर्म योगी

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में स्थित जांजगीर-चांपा के निवासी **दामोदर गणेश बापट** ने अपना पूरा जीवन कुष्ठ रोगियों की सेवा में समर्पित कर दिया है। 1962 में सदाशिव गोविंदराव कात्रे द्वारा स्थापित कुष्ठ आश्रम में 1972 में गणेश बापट वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता के रूप में पहुंचे और फिर वहीं के होकर रह गए। पिछले साढ़े चार दशक से वे नाम और पैसे की चकाचौंध से दूर चुपचाप कुष्ठ रोगियों की सेवा में लगे हैं। गीता के 'निष्काम कर्म' के सिद्धांत को अपने जीवन में उतारने वाले इस कर्मयोगी को इस वर्ष समाज सेवा के क्षेत्र में पद्मश्री सम्मान के लिए चुना गया है।

(बिलासपुर भास्कर)

सिटी एक्टिविटी

dainikbhaskar.com 26 फरवरी 2018 दैनिक भास्कर, बिलासपुर, सोमवार, 26 फरवरी, 2018

कार्यक्रम | निगम के सम्मान समारोह में मंत्री ने कहा बापट ने कुष्ठ रोगियों की सेवा में लगाया पूरा जीवन

पद्मश्री के लिए चयनित होने पर पं. श्यामलाल और बापट का अभिनंदन

एजुकेशन रिपोर्टर | बिलासपुर

कुष्ठ रोगियों की सेवा में जीवन गुजारने वाले समाजसेवी दामोदर गणेश बापट और छत्तीसगढ़ी के मूर्धन्य साहित्यकार एवं पत्रकार श्यामलाल चतुर्वेदी का रविवार को सम्मान किया गया। नगर निगम द्वारा लखीराम ऑडिटोरियम में समारोह का आयोजन किया था, इसमें नगरीय प्रशासन मंत्री अमर अग्रवाल और समाज के विभिन्न क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों और संस्थाओं ने दोनों को सम्मानित किया।

बापट और चतुर्वेदी जी को राष्ट्रपति के हाथों पद्मश्री अलंकरण दिया जाना है। मंत्री अमर अग्रवाल द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मंत्री अग्रवाल ने कहा कि बापट ने कुष्ठ रोगियों की सेवा में अपना पूरा जीवन लगा दिया। जिन कुष्ठ रोगियों से समाज दूर भागता था, उनके बीच में रहकर और उनकी सेवा करके बापट ने समाज को जागरूक करने का काम किया। जांजगीर में उनके आश्रम में जाकर कुष्ठ रोगियों के प्रति उनका स्नेह और सेवाभाव देखते ही बनता है। अग्रवाल ने पं. श्यामलाल चतुर्वेदी को छत्तीसगढ़ी व्याकरण और भाषा का मूर्धन्य साहित्यकार बताते हुए कहा कि उनके जैसा साहित्यकार पाकर छत्तीसगढ़ के सभी लोग अपने आपको सौभाग्यशाली समझते हैं। चतुर्वेदी की प्रत्येक रचनाएं कालजयी हैं। खासकर छत्तीसगढ़ी भाषा को उन्होंने जन-जन तक पहुंचाने में बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। चतुर्वेदी ने पत्रकारिता में सकारात्मकता को बढ़ावा दिया। पत्रकारिता के दौरान उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों पर जमकर प्रहार किया और समाज को जागरूक किया। नगर निगम बिलासपुर द्वारा आयोजित अभिनंदन कार्यक्रम के समापन के अवसर पर महापौर किशोर राय ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष धरमलाल कौशिक, सांसद लखनलाल साहू, संभागायुक्त टोसी महावर, कलेक्टर पी. दयानंद, एसपी आरिफ शेख, निगम कमिश्नर सौमिल रंजन चौबे सहित अन्य उपस्थित रहे।

श्यामलाल ने छत्तीसगढ़ी भाषा को साहित्य के माध्यम से जन-जन में किया लोकप्रिय: मंत्री

सम्मान समारोह में उपस्थित लोगगणमान्य, कलेक्टर व अन्य।

मंत्री अमर अग्रवाल ने पं. श्यामलाल चतुर्वेदी व दामोदर गणेश बापट का सम्मानित किया।

छत्तीसगढ़ी भाषा को अब आप लोगों को बढ़ाना है आगे: चतुर्वेदी

साहित्यकार एवं पत्रकार पं. श्यामलाल चतुर्वेदी ने कहा कि अपनी छत्तीसगढ़ी भाषा को आगे बढ़ाने में पूरी कोशिश की और अब ये काम आप जनजनों को भी करना है। चतुर्वेदी ने कहा कि उनको पूरे जीवन में उन्हें लोगों से भरपूर प्यार और स्नेह मिला। इसके लिए वे सबके आभारी हैं।

कुष्ठ रोगियों की करें सहायता: बापट

इस अवसर पर बापट ने लोगों से कुष्ठ रोगियों के लिए काम करने की अपील की और कहा कि कुष्ठ रोगियों को अपनेपन की आवश्यकता होती है। उनसे दूर न भागें बल्कि उनकी सहायता करें।

दैनिक समवेत शिखर,
बिलासपुर संभाग
samvetshikhar.com
रायपुर, बुधवार 28 अगस्त 2019 11

पद्मश्री को श्रद्धांजलि : बापट जी के लिए मानव सेवा था सर्वोपरि

चांपा में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर बापट जी को किया याद, सभी ने पुष्पांजलि अर्पित कर उनके साथ बिताए पलों को किया याद

समवेत शिखर संवाददाता

चापा। कुष्ठ रोगियों की सेवा में अपना पूरा जीवन समर्पित करने वाले कर्मयोगी सेवाभावी पद्मश्री स्व दामोदर गणेश बापट की श्रद्धांजलि सभा का आयोजन रविवार को गनेशी मंगल भवन में चापा पत्रकार संघ व नागरिको के द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्हें पुष्पाजलि अर्पित कर उनके कार्यो व उनके साथ बिताए पलो का याद किया गया।

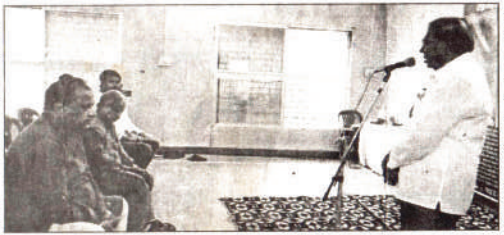

श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित विधायक नारायण चंदेल ने कहा कि स्व बापट जी श्रद्धा के केंद्र बिन्दु थे। मानव सेवा ही उनके लिए सर्वोपरि था। उन्होंने कभी अपनी चिंता न करते हुए अपना पूरा जीवन समाज सेवा में न्यौछवर कर दिया ऐसे बिरले व्यक्ति होते है। कुष्ठ रोगियों की सेवा कर समाज मे फैले भ्रांतियों को उन्होंने दूर कर उन्हें सम्मान से जीने का अवसर दिया। वर्तमान युवा पीढ़ी सहित हम सबकों उनसे सीख लेते हुए समाज व देश के लिए कुछ करने की जरूरत है। तभी सबकी भलाई है। डाक्टर केआर सिंह ने कहा कि स्व बापट जी का स्नेह अंचल के सभी लोगो को मिला, जो भी उनके पास जाता था उनकी ओ पूरी मदद करते थे। आश्रम में रहकर कुष्ठ रोगियों की सेवा कर उन्हें स्वावलंबी बनाने की दिशा में काम किया। उनके कार्यो को आत्मसात कर समाज के लिए कुछ करना होगा, तभी उन्हे सच्ची श्रंधजलि होगी। परमेश्वर स्वर्णकार ने कहा कि स्व बापट जी मानव नहीं महामानव थे उनका स्नेह सबको मिला। हरिहर तिवारी ने कहा कि 9 साल की उम्र में ही उनमें मानव सेवा का जज्बा था। जशपुर आश्रम में पढ़ाना छोड़कर वे सोंठी स्थित कुष्ठ आश्रम आ गए और उनकी सेवा में लीन हो गए। समाजसेवी कैलाश चंद्र अग्रवाल ने कहा कि स्व बापट जी में परोपकार की भावना कूट कूट कर भरी थी। उन्होंने अपने लिए नहीं हमेशा दूसरो के लिए जीवन जीया है। वे हमेशा सबके दिलों में रहेंगे उनका काम हमेशा प्रसंशनीय रहा है। मीरा पत्की ने कहा कि स्व बापट जी देवतुल्य थे। मानव सेवा ही उनका प्रमुख ध्येय था। सबके प्रति उनका अपार स्नेह था। उनके जाने से क्षेत्र को अपूरणीय क्षति हुई है। वे हमेशा याद किए जाएंगे। नागेंद्र गुप्ता ने कहा कि कुष्ठ रोगी न होते हुए भी उन्होंने कुष्ठ रोगियों के सेवा में अपना जीवन व्यतीत कर दिया जो अपने आप मे अनुकरणीय कार्य है । समाज उनके योगदान को कभी नही भुलाया जा सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संदेश का पत्रकार संघ के अध्यक्ष राजीव मिश्रा ने वाचन किया। इस अवसर रामकिशोर शुक्ला, रविन्द्र द्विवेदी, रमेश देवांगन, सलीम मेमन, विवेका गोपाल, सूर्यकांत साहू, शैलेन्द्र अग्रवाल, अज्जू वीरानी, नारायण मित्तल, योगेश अग्रवाल, राजेश बंसल, अभय मित्तल, शुशील शर्मा सहित बड़ी संख्या में लोग श्रद्धांजलि देने उपस्थित थे।

अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाई

पुरुषोत्तम शर्मा ने कहा कि स्व बापट जी केवल दुसरो की चिंता करते थे। हमेशा दिन दुखियों के सेवा की बात करते थे अपने बारे में कभी चर्चा नही करते थे। ऐसे महान व्यक्ति हमेशा याद किए जाएंगे । भगवान उन्हें अपने चरणों मे स्थान दें। शास्स्वत दीवान ने कहा कि स्व बापट जी किसी परिचय के मोहताज नहीं थे बल्कि अपने कामो के बदौलत उन्होंने चांपा को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाई है।

बापट जी ने छोड़ी छाप

श्रद्धांजलि सभा का संचालन करते हुए पत्रकार अनंत थवाईत ने कहा कि बापट जी के सेवाकार्यों के अनेक उदाहरण है जो हमेशा याद किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी परिषद में रहने के कारण रचनात्मक कार्यो के तहत उनका सानिध्य मिला जिसके कारण उनसे काफी आत्मीयता थी। मैंने कुछ लेख भी उनके बारे में लिखा है। एक बार एक कार्यक्रम में परिचय पत्र के आभाव में मुझे जाने नहीं दिया, तब बाहर बापट जी मुझे मिले और कागज में लिखकर मुझे जाने को कहा तब मैंने कहा कि आप मुझे तो नही जानते तो उन्होंने कहा तुम तो मुझे जानते हो उस दिन उन्होंने जो छाप छोड़ी वह आज भी याद है।

पिछले साल ही मिला था पद्मश्री सम्मान, अंतिम इच्छा के अनुसार सिम्स में किया गया देहदान

पद्मश्री दामोदर गणेश बापट नहीं रहे

■ नवभारत ब्यूरो | बिलासपुर/जांजगीर-चांपा

कुष्ठ रोगियों की सेवा के लिए पद्मश्री से सम्मानित समाजसेवी दामोदर गणेश बापट का शुक्रवार देर रात निधन हो गया. वे लंबे समय से बीमार थे और अपोलो में भर्ती थे. कुष्ठ रोगियों के लिए अपनी पूरी जिंदगी समर्पित करने वाले 87 वर्षीय बापट ने असहाय और मरीजों के लिए चांपा के सोंठी के पास कात्रेनगर नामक आश्रम बनवाया था. अपोलो से उनका पार्थिव शरीर अंतिम दर्शन के लिए आश्रम ले जाया गया. वहां से पुनः बिलासपुर लाया गया, जहां उनकी इच्छा के अनुरूप सिम्स को देहदान किया गया. राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने 27 जनवरी 2018 को नई दिल्ली में हुए समारोह में समाजसेवी गणेश बापट को पद्मश्री से सम्मानित किया था. कुष्ठ आश्रम की स्थापना सन् 1962 में कुष्ठ पीड़ित सदाशिवराव गोविंदराव कात्रे द्वारा की गई थी, जहां वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता श्री बापट सन् 1972 में आश्रम पहुंचे. उन्होंने कुष्ठपीड़ितों के इलाज और उनके सामाजिक-आर्थिक पुनर्वास और सेवा के लिए अनेक योजनाएं चलाईं.

कुष्ठ आश्रम के बारे में पूछा तो भगा दिया था होटलवाले ने, इसी आश्रम को संवारा

वर्ष 1970 की बात है. दामोदर गणेश बापट जशपुर से किसी काम से रायगढ़ आए थे. काम खत्म करने के बाद वे वापस जाने के लिए ट्रेन में सवार हो गए. ट्रेन चांपा स्टेशन में रुकी. उन्होंने देखा कि कई कुष्ठ रोगी स्टेशन के बाहर बैठे हुए हैं. बापट ट्रेन से उतरकर कुष्ठ रोगियों के पास गए और उनके यहां आने की वजह पूछी. रोगियों ने बताया कि कुछ किमी दूर कुष्ठ निवारक संस्था है. संस्था के बारे में और जानने के लिए वे स्टेशन से निकल पड़े. कुछ दूर जाने पर उन्होंने एक होटल में पानी मांगा. पानी पीते हुए उन्होंने होटलवाले से कुष्ठ निवारक संस्था के संबंध में पूछा. होटलवाले ■ शेष पेज 5 पर

कुष्ठ रोगियों को आसरा दिया, इलाज किया

सोंठी के करीब बापट कई दशकों से भारतीय कुष्ठ निवारक संघ का संचालन कर रहे थे. उस दौर में जब कुष्ठ रोगियों की हालत काफी दयनीय थी. प्रदेश में उनके इलाज की पर्याप्त व्यवस्था नहीं थी. तब भारतीय कुष्ठ निवारक संघ ने सभी मरीजों को अपने आश्रम में रखा. यहां कुष्ठ रोगियों का पूरा इलाज व देखभाल निःशुल्क होती है. बच्चों के लिए स्कूल भी है. इसी सेवाभाव के कारण बापट को पद्मश्री मिला.

सिम्स पहुंचते ही रो पड़ीं बच्चियां

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ के सहयोग से बिलासपुर के तेजस्विनी कन्या छात्रावास में रहकर कई बच्चियां अलग-अलग स्कूलों में पढ़ाई कर रही हैं. पद्मश्री बापट का अंतिम दर्शन करने सिम्स पहुंचते ही बच्चियां रो पड़ीं.

(नवभारत)
18 अगस्त रविवार 2019

बिलासपुर भास्कर 18 अगस्त 2019

दान के लिए सिम्स पहुंची बापट जी की देह, अंतिम दर्शन के लिए उमड़े लोग

बिलासपुर| भारतीय कुष्ठ निवारक संघ के प्रमुख दामोदर गणेश बापट को शनिवार को बिलासपुर में श्रद्धांजलि दी गई। संघ परिवार द्वारा बापट जी के अंतिम दर्शन उपरांत श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धांजलि सभा में विधानसभा नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक ने कहा कि पद्मश्री बापट जी ने अपना पूरा जीवन कुष्ठ पीड़ितों के इलाज और उनके सामाजिक-आर्थिक पुनर्वास के लिए समर्पित कर दिया। भाजपा प्रदेश महामंत्री व राजनांदगांव सांसद संतोष पाण्डेय ने कहा कि उनका जीवन सादगीपूर्ण था। उनसे मिलने के उपरांत लोग उनके हो जाते थे। वे कुष्ठ रोगियों के साथ रहकर उनका इलाज व

सिम्स में श्रद्धांजलि सभा में नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक और अन्य।

उनके साथ भोजन करते थे। उनके बच्चों की पढ़ाई और परिवार के भरण पोषण की भी व्यवस्था करते थे। बिलासपुर सांसद अरुण साव ने कहा कि बापट जी के जीवन से प्रेरणा लेकर हमें मानव सेवा करना चाहिए। भगवान उनकी आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। इस मौके पर पूर्व सांसद लखनलाल साहू, विधायक डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी, विधायक रजनीश सिंह, महापौर किशोर राय, भाजपा जिला महामंत्री रामदेव कुमावत, घनश्याम कौशिक, हर्षिता पाण्डेय, गोपी ठाकवानी, प्रवीर सेन गुप्ता, जुगल अग्रवाल, उदय मजूमदार, लक्ष्मीनारायण कश्यप, राजेश मिश्रा, गणेश रजक सहित भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

(दैनिक आस्था) - 18 अगस्त 2018

पद्मश्री दामोदर बापट का निधन, कुष्ठ रोगियों को दे दिया जीवन, रिसर्च के लिए देहदान

अपोलो हॉस्पिटल में शुक्रवार की देर रात ली अंतिम सांस

हैल्थ रिपोर्टर | बिलासपुर

कुष्ठ रोगियों की सेवा करने के लिए सन 1972 में जांजगीर-चांपा के सोंठी गांव में संचालित भारतीय कुष्ठ निवारण संघ आश्रम से जुड़े और पद्मश्री से सम्मानित दामोदर गणेश बापट का शुक्रवार की रात अपोलो अस्पताल में 84 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उनकी पार्थिव देह सिम्स को दान की।

पद्मश्री दामोदर

देह दान में मिलने से चिकित्सा छात्र शरीर के अंगों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। देह दान करने का संकल्प उन्होंने कुष्ठ रोगियों की सेवा करते हुए लिया था। कुष्ठ रोगियों की सेवा का संकल्प लेने के बाद वह जीवन भर अविवाहित रहे।

दामोदर गणेश बापट पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। इलाज के लिए उन्हें अपोलो में भर्ती कराया गया था। उनके निधन की खबर मिलते ही उनसे जुड़े लोग अंतिम दर्शन के लिए बड़ी संख्या में कुष्ठ आश्रम में एकत्रित हो गए। अंतिम दर्शनों के लिए स्वर्गीय बापट की पार्थिव देह जांजगीर-चांपा लाई गई। फिर वहां से दोपहर में पार्थिव देह को दान के लिए सिम्स लाया गया। यहां भी बड़ी संख्या में उनके अंतिम दर्शन के लिए लोग एकत्रित हुए। पार्थिव देह पहुंचते ही उन्हें प्रणाम कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उनकी देर सिम्स को दी गई।

शेष | पेज 9

(बिलासपुर) हरिभूमि - 18 अगस्त 2018

पद्मश्री दामोदर गणेश बापट नहीं रहे, पार्थिव शरीर का दान

बिलासपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

छत्तीसगढ़ के समाज सेवी व पद्मश्री से सम्मानित दामोदर गणेश बापट ने शनिवार को अपोलो हॉस्पिटल में अंतिम सांस ली। वे लंबे समय से बीमारी थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन कुष्ठ रोगियों की सेवा में बिताया। निधन के बाद उनका पार्थिव शरीर सिम्स में दान किया गया। इसके लिए उन्होंने 2010 में संकल्प पत्र भरा था।

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने 2018 में नई दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में दामोदर गणेश बापट को पद्मश्री अलंकरण से सम्मानित किया था। उन्होंने अपना पूरा जीवन चांपा शहर से आठ किलोमीटर दूर ग्राम सोंठी स्थित भारतीय कुष्ठ निवारक संघ के आश्रम में कुष्ठ पीड़ितों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। कुष्ठ आश्रम की स्थापना सन 1962 में कुष्ठ पीड़ित सदाशिवराव गोविंदराव काले ने की थी। जहां पर दामोदर गणेश बापट सन 1972 में 35 साल की उम्र में पहुंचे। कुष्ठ पीड़ितों के

बिलासपुर। नई दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में वरिष्ठ समाज सेवी दामोदर गणेश बापट को पदमश्री अलंकरण से सम्मानित करते राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद।। (फाइल फोटो)

इलाज और उनके सामाजिक–आर्थिक पुनर्वास के लिए उन्होंने काफी कार्य किया। शनिवार को उनके निधन व देहदान की प्रक्रिया के बाद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता, भाजपा के पदाधिकारी, आश्रम के साथियों के साथ बड़ी संख्या में उनका अनुसरण करने वालों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

- पेज 13 भी पढ़ें।

(बिलासपुर) हरिभूमि 18 अगस्त 2018

नहीं रहे पद्मश्री गणेश दामोदर बापट

जांजगीर चांपा। कुष्ठ रोगियों की सेवा में अपना जीवन समर्पित करने वाले पद्मश्री दामोदर गणेश बापट का शुक्रवार देर रात निधन हो गया। लंबे समय से बीमार चल रहे 87 वर्षीय दामोदर बापट ने रात 2.37 मिनट पर अपोलो अस्पताल बिलासपुर में आखिरी सांस ली। शुक्रवार उनका पार्थिव देह कांतेनगर चांपा के सोंठी आश्रम में दर्शन के लिए रखा गया, जहां जनप्रतिनिधियों व क्षेत्र भर के लोगों ने नम आंखों से उन्हें अंतिम विदाई दी। तत्पश्चात देहदान के संकल्प के अनुसार उनका पार्थिव शरीर सिम्स बिलासपुर को सौंप दिया गया। ज्ञात हो कि कुष्ठ रोगियों के लिए आजीवन समर्पित रहे गणेश बापट को साल 2018 में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के हाथों पद्मश्री सम्मान से नवाजा गया था। वे 42 साल से कुष्ठ रोगियों की सेवा में समर्पित रहे। वे न सिर्फ मरीजों के » शेष पेज 5 पर

श्रद्धांजलि सभा : दयालबंद स्थित महाराजा रणजीत सिंह सभागार में विभिन्न जगहों से पहुंचे लोग

बापट ने सिद्धांतों को आचरण का हिस्सा बनाया-भैयाजी जोशी

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

बिलासपुर. बापट जी सिद्धांतों को जीवन का हिस्सा मानकर चलते थे। उन्होंने सिद्धांतों को केवल शब्दों में नहीं रहने दिया बल्कि उसका अपने जीवन पर्यंत पालन किया। उक्त बातें आरएसएस के सर कार्यवाहक भैया जी जोशी ने पद्मश्री दामोदर गणेश बापट की श्रद्धांजलि सभा में कही। कार्यक्रम का आयोजन सोमवार को दयालबंद स्थित महाराजा रणजीत सिंह सभागार में भारतीय कुष्ठ निवारण संघ कात्रे नगर चांपा के द्वारा किया गया।

भैया जी जोशी ने कहा कि साधना के मार्ग पर चलते हुए बापट को प्रेरणा मिली। कुष्ट रोगी स्वाभिमान और सम्मान से जीवन जीएं इसके लिए लोगों को प्रयास करना चाहिए। बापट ने इस मार्ग को प्रशस्त किया। ऐसे रोग से पीड़ित

श्रद्धांजलि सभा... पद्मश्री दामोदर गणेश बापट को श्रद्धांजलि देने पहुंचे लोग।

व्यक्ति को अपमानित जीवन का आभास न हो इस बात का समाज को ध्यान रखना चाहिए। इस अवसर पर राष्ट्र सेविका समिति की सह सर कार्यवाहिका सुलभा ताई देशपांडे ने कहा कि बालिकाओं की शिक्षा के लिए उन्होंने बहुत सघन प्रयास किया। बिलासपुर में स्थित तेजस्विनी बालिका छात्रावास उन्हीं की देन है। उन्होंने बापट को समर्पित करते एक गीत की भी प्रस्तुति दी। इसके बाद समिति की पूर्व सर संघचालिका प्रमिला ताई मेढ़े का शोक पत्र पढ़कर सुनाया। मध्य क्षेत्र के प्रचारक दीपक विस्पुते ने बापट को याद करते कहा कि कुष्ट रोग का नाम सुनकर लोगों का मन कांप जाता है। लेकिन बापट जैसे महान व्यक्तित्व ने इसे ईश्वरीय कार्य माना। उन्होंने बापट को रामकृष्ण परमहंस का अवतार बताया। सक्षम के पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ. कमलेश ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि बापट मानवता के अभूतपूर्ण उदाहरण थे। उन्होंने एक जीवन, एक ध्येय, रखकर जीवन जिया। बापट के जीवन का हर एक क्षण प्रेरणा का स्रोत है। कार्यक्रम की प्रस्तावना भारतीय कुष्ठ निवारक संघ चांपा के सचिव सुधीर देव ने प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन बृजेंद्र शुक्ला ने किया। शाम्भवी ने वैष्णव भजन का गान किया।

ये रहे उपस्थित

इस अवसर पर संघ के क्षेत्रीय प्रांतीय अधिकारी में क्षेत्र प्रचारक प्रमुख शिवराम समदरिया, संपर्क प्रमुख अनिल, प्रांत संघ चालक बिसराराम यादव, प्रांत सह संघ चालक डॉ. पूर्णेन्दु सक्सेना, विभाग संघ चालक काशीनाथ गोरे, प्रांत प्रचारक प्रेम शंकर सिदार, सह प्रांत प्रचारक नारायण नामदेव, विद्यार्थी परिषद के क्षेत्रीय संगठन मंत्री चेतस सुखाड़िया, प्रफुल्ल अकांत, प्रांत संगठन मंत्री आदिशेषु, सांसद अरुण साव सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

बिलासपुर पत्रिका, मंगलवार 03 सितंबर, 2019

दैनिक भास्कर

बिलासपुर दैनिक भास्कर मंगलवार 3 सितंबर 2019

कुष्ठ रोगियों की सेवा के जरिए गीता की कसौटी पर उतरे बापट: सुरेश

पद्मश्री दामोदर गणेश बापट को श्रद्धांजलि देने भाजपा और आरएसएस के दिग्गज पहुंचे गुरुनानक स्कूल सभागृह, वक्ताओं ने बापट के सेवा के बताए मार्ग पर

सिटी रिपोर्टर | बिलासपुर

[illegible]

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरकार्यवाह सुरेश जोशी श्रद्धांजलि सभा को संबोधित करते हुए।

पद्मश्री उनके पास पहुंचा... [illegible]

प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति ने भेजा संदेश

[illegible]

10 लाख [illegible]

स्मृति शेष... पद्मश्री दामोदर गणेश बापट को याद कर रहे हैं आरएसएस के काशीनाथ गोरे

47 वर्षों तक कुष्ठ रोगियों की सेवा: वे हमारे घर आते ही चाय के लिए कहते, हम उन्हें मजाक में रोज का बापट कहने लगे थे

काशीनाथ गोरे | बिलासपुर

दामोदर गणेश बापट ने सदाशिव कात्रे के संपर्क में आकर कुष्ठ आश्रम को विगत 47 वर्षों से अपनी निश्छल सेवा देकर पोषित एवं सुवासित किया। बापट जी हमारे पिता श्री अन्ना गोरे के पास हमारे टिकरापारा स्थित निवास में अक्सर आया करते थे। आते ही सबसे पहले चाय बनाकर देने के लिए कहते, इस पर माता जी पहले उनसे बैठने का आग्रह करतीं, इसके बाद चाय बनाकर देतीं। हमेशा आना-जाना होने के कारण उन्हें मजाक में रोज का बापट कहा जाता। उनकी याददाश्त इतनी तेज थी कि उन्हें सैकड़ों फोन नंबर मुखाग्र याद थे। उन्होंने फोन करने के लिए कभी डायरी नहीं देखनी पड़ती थी। वे बिना प्रेस किया हुआ कपड़ा ही पहनते थे। उनके निस्वार्थ सेवा भाव से प्रभावित होकर अनेक सामाजिक संगठनों द्वारा उन्हें समय-समय पर सम्मानित किया जाता रहा है। विगत वर्ष भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति द्वारा उन्हें पद्मश्री अलंकरण देकर सम्मानित किया गया। यह पहला अवसर था जब छत्तीसगढ़ से एक साथ दो महान विभूतियों श्यामलाल चतुर्वेदी और दामोदर गणेश बापट को पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

दामोदर गणेश बापट

जर्मनी के 10 लाख न लेकर दिया था सेवा भावना का संदेश

35 साल पहले जर्मनी की एक संस्था के सदस्य सोंठी आश्रम आए थे। उन्होंने संस्था के कार्यों को देखते हुए 10 लाख रुपए देने का निर्णय लिया। सदस्यों ने बापट जी से आग्रह किया कि वे राशि स्वीकार कर लें, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। संस्था के सदस्य उस दिन शाम को बाजार में खरीदारी कर रहे थे। उन्होंने देखा कि बापट जी एक दुकानदार से 11 रुपए देने के लिए मिन्नतें कर रहे हैं। यह देखकर उन्होंने बापट से पूछा कि उन्होंने 10 लाख लेने से मना कर दिया और यहां 11 रुपए के लिए आग्रह कर रहे हैं? बापट जी ने इसके जवाब में कहा- समाज में सेवा की भावना विकसित करना जरूरी है। जिस समाज से आप लेते हैं, उसे लौटाना भी जिम्मेदारी है।

कात्रे जी से प्रभावित होकर इस कार्य से जुड़े

दामोदर गणेश बापट ने नागपुर से बीए और बीकॉम की पढ़ाई पूरी की। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़ने के बाद जशपुर में संचालित वनवासी कल्याण आश्रम आए और बच्चों को पढ़ाने लगे। इस बीच वे सोंठी के कुष्ठ आश्रम आए। यहां वे कुष्ठ रोगियों की सेवा देखकर प्रभावित हुए और 1972 में यहां रहने आ गए। इसके बाद पूरा जीवन कुष्ठ रोगियों को ही समर्पित कर दिया। वे अविवाहित रहे।

(काशी नाथ गोरे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ बिलासपुर इकाई के विभाग संघ चालक हैं)

(बिलासपुर) दैनिक भास्कर - 18 अगस्त 2019 (रविवार)

बापट एवं चतुर्वेदी से भेंटकर चंदेल ने किया अभिनंदन

■ नवभारत ब्यूरो | जांजगीर-चांपा.

पद्मश्री सम्मान से विभूषित भारतीय कुष्ठ निवारण संघ आश्रम ग्राम सोठी, चाम्पा के संस्थापक व इस अंचल व देश के प्रसिद्ध समाज सेवी जिन्होंने कुष्ठ रोगियों की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन इस आश्रम में रहकर व्यतित किया. अपना पुरा जीवन ऐसे रोगियों को समर्पण कर दिया. ऐसे व्यक्ति के धनी दामोदर राव बापट से मिलकर पूर्व विस उपाध्यक्ष एवं प्रदेश भाजपा के वरिष्ठ नेता नारायण चंदेल ने श्रीफल व साल भेंट कर उनका सम्मान किया. बिलासपुर जाकर छत्तीसगढ़ी साहित्य के पुरोधा पं. श्यामलाल चतुर्वेदी से चंदेल ने उनके निवास जाकर श्रीफल एवं साल से अभिनंदन किया. श्री चंदेल ने इन दोनों श्री बापट एवं चतुर्वेदी के सुखी, यशस्वी एवं दीर्घ जीवन की कामना की. श्री चंदेल के साथ भाजपा जिला उपाध्यक्ष विवेका गोपाल, धर्मेन्द्र शर्मा, गोपेश्वर कहरा, गुलाबधर दीवान, सतीश शर्मा, पुरूषोत्त्म शर्मा, भाजयुमों जिलाध्यक्ष राजू महंत, प्रदीप सोनी, अमित यादव सहित बड़ी संख्या में निर्वाचित जनप्रतिनिधि व भाजपा कार्यकर्तागण उपस्थित थे.

पद्मश्री विभूषित बापट एवं चतुर्वेदी से मुलाकात करते चंदेल

नवभारत (जांजगीर-चांपा)
बुधवार 21 फरवरी 2018

पत्रिका जांजगीर-चांपा 18 अगस्त 2019

अपोलो अस्पताल में ली अंतिम सांसें, 2018 को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने पद्मश्री अवार्ड से नवाजा

कुष्ठ पीड़ितों की सेवा करने वाले पद्मश्री बापट अब नहीं रहे

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

जांजगीर-चांपा. चांपा क्षेत्र के कात्रेनगर सोंठी में 47 सालों तक कुष्ठ पीड़ितों की सेवा करने वाले दामोदर गणेश बापट अब नहीं रहे। शुक्रवार की देर रात अपोलो अस्पताल बिलासपुर में 87 वर्ष की आयु में उन्होंने अंतिम सांसें ली। उनके निधन से क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। शनिवार को उनका पार्थिव देह अंतिम दर्शन के बाद कुष्ठ आश्रम कात्रेनगर सोंठी लाया गया। अंतिम दर्शन के लिए कलेक्टर एसपी सहित अन्य अफसर सोंठी पहुंचे थे। इसके बाद बापट का पार्थिव शरीर को सिम्स में रखा जाएगा। क्यों कि उन्हें देहदान की घोषणा की थी।

1962 में महाराष्ट्र के सदाशिव गोविंदराव कात्रे ने सोंठी के पास कुष्ठ आश्रम की स्थापना की थी। उनके निधन के बाद 1972 से दामोदर गणेश बापट ने यहां का काम काज सम्हाल रहे थे। प्रदेश के अलावा देश के कोने-कोने से यहां कुष्ठ के सैकड़ो मरीज भर्ती होते हैं। जिनकी सेवा के लिए दामोदर गणेश बापट से अपनी पूरी उम्र खपा दी थी। वे लगातार 47 सालों से कुष्ठ पीड़ितों की सेवा से करते रहे। मरीजों के लिए डॉक्टर की व्यवस्था करना तथा आश्रम में मरीजों का पालन पोषण वे खुद अपने खुते करते थे। उनके इस कार्य को देख 26 जनवरी 2018 को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उन्हें पद्मश्री अवार्ड से नवाजा था। देश का इतना बड़ा अवार्ड मिलने के बाद भी उनके कार्यशैली में तनिक भी परिवर्तन नहीं आया और वे हमेशा कुष्ठ पीड़ितों की सेवा में ही लीन रहे।

सादगी में गुजारी पूरी जिंदगी

पद्मश्री बापट आश्रम के एक कमरे में केवल एक बिस्तर और दो सादे कपड़ों में पूरी जिंदगी बिता दी। आश्रम में करोड़ो की संपत्ति उनके नाम होने के बावजूद पूरी जिंदगी सादगी भरा रहा। चाहते तो वे सर्वसुविधायुक्त एसी कमरे रह सकते थे, लेकिन वे दो सादे फटे हुए कुर्ता पायजामा में ही पूरी जिंदगी बिता दी। उनके कमरे में एक पुराना सीलिंग फैन, एक बिगड़ा हुआ रेडियो के अलावा मच्छरदानी युक्त खाट आज भी देखा जा सकता है।

आश्रम में कुटीर उद्योग को दिया बढ़ावा

कुष्ठ आश्रम सोंठी के आसपास आश्रम के नाम सैकड़ो एकड़ जमीन है। जहां बापट के द्वारा अत्याधुनिक खेती कराई जाती है। इतना ही नही आश्रम के कैंपस में कई तरह के कुटीर उद्योग का भी संचालित कराने उन्होंने बड़ी भूमिका निभाई। यहां के कुष्ठ पीड़ितों के द्वारा चाक कारखाना के अलावा टाटपट्टी व दरी का निर्माण भी किया जाता है। इसकी आय से कुष्ठ पीड़ित मरीजों की सेवा में खर्च किया जाता है।

जीते जी आश्रम का किया कायाकल्प

बापट ने आश्रम में न केवल एक सर्वसुविधायुक्त अस्पताल का निर्माण कराया बल्कि आश्रम के साथ -साथ सुशील बालक गृह का निर्माण भी कराया। जहां अनाथ व गरीब बच्चों को नि:शुल्क आवासीय शिक्षा प्रदान की जाती है। आश्रम में सैकड़ो छात्र पिछले तीन दशक से निवासरत हैं। जिन्हें मुफ्त शिक्षा एवं आवास की सुविधा दी जाती है। आज भी देश के कोने कोने से आए गरीब व अनाथ छात्र यहां रहकर अध्ययन करते हैं।

पत्रिका (जांजगीर-चांपा) 18 अगस्त 2019

भास्कर (जांजगीर-चांपा)

जांजगीर

रायगढ़, शुक्रवार 26 जनवरी, 2018 | 14

समाजसेवा | कुष्ठ पीड़ितों का दुख दूर करने के साथ सम्मान से जीने की दिखा रहे राह, सोंठी के आश्रम में रहने वाले सौ से अधिक कुष्ठ रोगी कर रहे हर काम

कुष्ठ रोगियों को दिखाई जीने की राह

भास्कर न्यूज | जांजगीर-चांपा

आश्रम में हर तरह की गतिविधि

वहां से घर नहीं जाना चाहते

समाज की बदल रही धारणा

सभी एक साथ करते हैं भोजन

सेवा के लिए शादी भी नहीं की

मिल चुके हैं कई पुरस्कार

संस्थापक : स्व. श्री रामगोपाल माहेश्वरी

69 वां गणतंत्र दिवस

नवभारत

रायपुर शुक्रवार, 26 जनवरी 2018

प्रदेश के दामोदर बापट और श्याम चतुर्वेदी को पद्मश्री

इलैया राजा, गुलाम मुस्तफा खां को पद्म विभूषण सम्मान, धोनी को पद्म भूषण

एजेंसी | नई दिल्ली.

पद्म विभूषण

पद्म भूषण

पद्मश्री

बापट ने सदाशिव के कार्यों को पहचान दी

नवभारत ब्यूरो | जांजगीर-चांपा.

चाम्पा से आठ कि.मी. दूर स्थित ग्राम सोंठी के कुष्ठ आश्रम के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने का श्रेय श्री दामोदर गणेश बापट को है. इस आश्रम की स्थापना सदाशिवराव गोविंदराव कात्रे ने 1962 में की थी. दस वर्षों बाद श्री बापट इस आश्रम से ऐसे जुड़े कि वह यहीं के होकर रह गए, उन्होंने कुष्ठ रोगियों की सेवा के लिए अनेक प्रकल्प चलाए. छत्तीसगढ़ भर के कुष्ठ रोगियों के लिए यह आश्रय स्थल बन गया. श्री बापट का एक मात्र ध्येय कुष्ठ पीड़ितों का आर्थिक सामाजिक पुनर्वास था. उन्हें बहुत हद तक इसमें सफलता मिली. सरल और सादा जीवन जीने वाले श्री बापट ने कुष्ठ रोगियों की सेवा में पूरा जीवन समर्पित कर दिया है. पद्मश्री सम्मान की घोषणा

की खबर सुनते ही पूरे जिले में हर्ष की लहर दौड़ गई.

नवभारत (जांजगीर-चांपा)
शुक्रवार 26 जनवरी 2018

नवभारत (सोमवार, २६. फरवरी २०१८

कुष्ठरोगियों की सेवा में बापट ने लगाया पूरा जीवन

■ नवभारत रिपोर्टर | बिलासपुर.

कुष्ठरोगियों की सेवा में जीवन गुजारने वाले समाजसेवी दामोदर गणेश बापट और छत्तीसगढ़ी के मूर्धन्य साहित्यकार श्यामलाल चतुर्वेदी का आज अभिनंदन किया गया. लखीराम

अभिनंदन

- **चतुर्वेदी ने छत्तीसगढ़ी भाषा को साहित्य के माध्यम से जन-जन में किया लोकप्रिय-**
- **दामोदर गणेश बापट और श्यामलाल चतुर्वेदी को दिया जाना है पद्मश्री अलंकरण**

ऑडिटोरियम में नगरीय प्रशासन मंत्री अमर अग्रवाल ने और समाज के विभिन्न क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों एवं संस्थाओं ने विद्वान द्वय को सम्मानित किया. उल्लेखनीय है कि श्री बापट और श्री चतुर्वेदी को राष्ट्रपति के हाथों पद्मश्री अलंकरण दिया जाना है. इस अवसर पर श्री बापट ने सभी से कुष्ठरोगियों के लिये काम करने की अपील की और कहा कि कुष्ठरोगियों को अपनेपन की आवश्यकता होती है. उनसे दूर न भागें बल्कि उनकी सहायता करें. साहित्यकार एवं पत्रकार श्यामलाल चतुर्वेदी ने कहा कि अपनी छत्तीसगढ़ी भाषा को आगे बढ़ाने में उन्होंने पूरी कोशिश की और अब ये काम आम जनमानस को भी करना है. श्री चतुर्वेदी ने कहा कि उनके पूरे जीवन में उन्हें लोगों से भरपूर प्यार और स्नेह मिला और इसके लिये वे सबके आभारी हैं.

इस अवसर पर मंत्री श्री अमर अग्रवाल ने कहा कि श्री बापट ने कुष्ठरोगियों की सेवा में अपना पूरा जीवन लगा दिया. जिन कुष्ठरोगियों से समाज दूर भागता था उनके बीच में रहकर और उनकी सेवा करके श्री बापट ने समाज को जागरूक करने का काम किया. जांजगीर में उनके आश्रम में जाकर कुष्ठरोगियों के प्रति उनका स्नेह और सेवाभाव देखते ही बनता है. श्री अग्रवाल ने श्यामलाल चतुर्वेदी को छत्तीसगढ़ी व्याकरण और भाषा का मूर्धन्य साहित्यकार बताते हुए कहा कि उनके जैसा साहित्यकार पाकर छत्तीसगढ़ के सभी लोग अपने आपको सौभाग्यशाली समझते हैं. श्री चतुर्वेदी की प्रत्येक रचनाएं कालजयी हैं. खासकर छत्तीसगढ़ी भाषा को उन्होंने जन-जन तक पहुंचाने में बहुत ही सराहनीय कार्य किया है. श्री चतुर्वेदी ने पत्रकारिता में सकारात्मकता को बढ़ावा दिया. पत्रकारिता के दौरान उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों पर जमकर प्रहार किया और समाज को जागरूक किया. नगर निगम द्वारा आयोजित अभिनंदन कार्यक्रम के समापन के अवसर पर महापौर किशोर राय ने सभी का आभार व्यक्त किया. इस अवसर पर विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष धरमलाल कौशिक, सांसद लखन लाल साहू, संभागायुक्त टी सी महावर, कलेक्टर पी दयानंद, एसपी आरिफ शेख, निगम कमिश्नर सौमिल रंजन चौबे एवं बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे.

(बिलासपुर) नईदुनिया . 18 अगस्त रविवार 201

अलविदा

“दूसरों के प्रति निःस्वार्थ सेवा का भाव रखना ही जीवन में कामयाबी का मूलमंत्र है। निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा से किसी का भी हृदय परिवर्तन किया जा सकता है। हमें अपने आचरण में सदैव सेवा का भाव निहित रखना चाहिए, जिससे अन्य लोग भी प्रेरित होते हुए कामयाबी के मार्ग पर अग्रसर हो सकें।

47 साल तक कुष्ठ रोगियों की करते रहे सेवा, पीड़ितों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ा

जब नरेंद्र मोदी ने कहा था

कुष्ठ रोगियों के मसीहा हैं दामोदर

स्व. दामोदर गणेश बापट सामान्य दिखने वाले पर असामान्य व्यक्तित्व के धनी थे। वर्ष 2006 में गुजराज के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें देवी अहिल्याबाई होलकर राष्ट्रीय पुरस्कार देते हुए कहा था कि उसके जैसा महान व्यक्तित्व बहुत विरले ही मिलता है। उन्होंने कुष्ठ रोगियों की सेवा में अपना पूरा जीवन बिता दिया। उन्हें किसी भी तरह की लोकप्रसिद्धि नहीं चाहिए। उनके जीवन का एक लक्ष्य कुष्ठ रोगियों की सेवा करना था। इतिहास के पन्नों में उनका नाम दर्ज होगा कि नहीं, प्रसिद्धि मिलेगी या नहीं, यह तो मुझे नहीं मालूम है। लेकिन उन्हें कुष्ठ सेवा कार्य में सिद्धि जरूर मिल गई है। उनकी सेवा ने उन्हें कुष्ठ रोगियों का मसीहा बना दिया है।

अतुल वासिंग
बिलासपुर। नईदुनिया

स्व. बापट के करीबियों के मुताबिक वे बचपन से ही समाज व देश की सेवा करना चाहते थे। अपनी इसी सेवा भावना के कारण वे नौ साल की अल्प आयु में आरएसएस से जुड़ गए और स्वयं सेवक के रूप में लोगों की मदद करने लगे। उन्हें लोगों की सेवा करने में सुकून मिलने लगा। लेकिन वे ऐसी सेवा की तलाश में थे, जिसमें उन्हें आत्मीय सुख मिल सके। इसी भावना के साथ वे छत्तीसगढ़ के जशपुरनगर पहुंचे। इस दौरान कुष्ठ रोगियों की पीड़ा जानने

से वे 1972 को चांपा के भारतीय कुष्ठ निवारक संघ कात्रेनगर से जुड़ गए। बेहद खराब स्थिति से गुजर हुए भी उन्होंने कुष्ठ रोगियों की जिम्मेदारी अपने कंधे में ले ली। उनके आश्रम आते ही कुष्ठ रोगियों का उद्धार शुरू हो गया। पहले उन्होंने कुष्ठ रोगियों का उपचार करना शुरू किया। इससे कुष्ठ रोगियों की बीमारी खत्म होने लगी। इसके बाद भी समाज के तिरस्कार की वजह से इनके पुनर्वास में दिक्कत आ रही थी। तब उन्होंने कुष्ठ रोगियों को सामाजिक व आर्थिक रूप से मजबूत बनाने का निर्णय लिया और उन्हें स्वावलंबी बनाने की दिशा में काम करने लगे। स्व. बापट

इन्होंने क

राष्ट्र से

■ सांसद अरुण साव ने
राष्ट्र सेवा में बीता है। कुष्ठ
करता था। ऐसी स्थिति में
कि ये भी इंसान है। देशभक्ति
का पाठ पढ़ाया है।

देवतुल

■ महावीर किशोर रा
बापट को देवतुल्य बताया

कुष्ठ रोगियों के साथ चाहने वालों ने दी श्रद्धांजलि

सोंठी आश्रम में महिलाओं की छलकी आंखें

जांजगीर-चांपा। दामोदर गणेश बापट के निधन की खबर सुनकर बिलखती महिलाएं। ■ नईदुनिया

बिलासपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

सोंठी आश्रम में दामोदर गणेश बापट के निधन की खबर पहुंचते ही कुष्ठ रोगियों की आंखें नम हो गईं। उनके चाहने वाले अंतिम दर्शन के लिए बड़ी संख्या में आश्रम पहुंच गए।

समाजसेवी दामोदर गणेश बापट के निधन से कुष्ठ रोगियों को बड़ा सदमा पहुंचा। उन्हें जानकारी दी गई कि अंतिम दर्शन के लिए स्व. बापट का पार्थिव शरीर सुबह नौ बजे आश्रम लाया जाएगा। यह बात सुनकर कुष्ठ रोगियों की आंखें झलक पड़ीं। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अब वे किसके मार्गदर्शन में आगे बढ़ेंगे। स्व. बापट उनके मसीहा थे। उनके निधन की खबर सुनकर आसपास के लोग भी बड़ी संख्या में पहुंचने लगे। सुबह नौ बजे जैसे ही उनका पार्थिव शरीर आश्रम पहुंचा, अंतिम दर्शन के लिए भीड़ उमड़ पड़ी। सांसद गुहाराम अजगले, पूर्व सांसद कमला देवी पाटले, विधायक नारायण चंदेल, कलेक्टर अमक पाठक, एसपी पारुल माथुर समेत जनप्रतिनिधियों व आम लोगों ने उनके अंतिम दर्शन कर श्रद्धांजलि दी।

स्व. कात्रे ने देखा था भविष्य

दामोदर गणेश बापट से पहली बार मुलाकात के बाद ही सदाशिव गोविंद कात्रे को आश्रम का भविष्य उज्ज्वल दिखने लगा। उस समय बापट ने कुष्ठ रोगियों की सेवा करने की इच्छा जाहिर की थी। तब कात्रे ने उनसे कहा था कि यहां बहुत से लोग आते हैं जो सेवा करने की बात कहते हैं लेकिन जाने के बाद वापस नहीं आते हैं। तब स्व. बापट ने कहा था कि अब मेरा जीवन सेवा के लिए समर्पित है। मैं वापस जरूर आऊंगा यह विश्वास दिलाता हूं।

यह बात सुनकर कात्रे अत्यधिक प्रसन्न हुए और उन्हें आश्रम का अच्छा भविष्य दिखने लगा। यह उनकी यह दूरदर्शिता भी सच साबित हुई।

आश्रम के प्रति बढ़ा लगाव

उनके सेवाभाव से सभी अभिभूत हैं। लोगों का कुष्ठ रोगियों के प्रति नजरिया बदला है। क्षेत्रवासियों का कहना है कि उनकी सेवा को जारी रखा जाएगा। आश्रम ऐसा ही चलता रहेगा जैसा स्व. बापट चाहते थे।

छाया रहा मातम

बापट के निधन के बाद आश्रम में मातम छाया है। उनके साथियों ने बताया कि पूरा आश्रम शोक में डूबा है। यह दुख एक दिन में खत्म नहीं होगा। कुष्ठ रोगियों के साथ उनके सहयोगियों को सामान्य होने में समय लगेगा। 47 साल साथ रहने के बाद अचानक वे छोड़ चले गए हैं। उनकी याद हमेशा दिलों में बनी रहेगी।

युग पुरुष थे स्व. बापट

■ आरएसएस के विभाग संघचालक काशीनाथ गौरे ने कहा कि स्व. बापट युग पुरुष थे। उनकी सेवा भाव अमर हो चुकी है। उनके मार्गदर्शन में आगे भी सेवा का कार्य चलता रहेगा। उन्होंने कुष्ठ रोगियों की सेवा करने के साथ ही देहदान कर मिसाल पेश की है।

सेवा भाव के प्रतीक

■ भारतीय कुष्ठ निवारण संघ के सचिव सुधीर देव ने बताया कि स्व. बापट सेवा के प्रतीक थे। वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। लोग उन्हें सम्मान आदमी समझते थे। जब कोई उनसे बात करता था तो उनकी बहुमुखी प्रतिभा सामने आती थी।

हमेशा देते रहे सेवा का संदेश

■ तेजस्विनी कन्या छात्रावास की अध्यक्ष शारदा रहालकर ने कहा कि स्व. बापट से उनके आश्रम में हमेशा मुलाकात होती थी। वे जब भी मिलते थे सेवा का संदेश देते थे। उनका कहना था कि सेवा करने से परम सुख की अनुभूति मिलती है। ऐसे लोग विरले ही होती है। उनका जाना राष्ट्रीय क्षति है।

महान व्यक्तित्व, महान सेवा

■ श्रीवुक डिपो के संचालक नरेंद्र गुप्ता ने स्व. बापट को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि ये महान व्यक्तित्व के स्वामी थे। उनकी सेवा की कोई भी मिसाल नहीं दी जा सकती। कुष्ठ रोगियों की बीच में रहकर उनकी सेवा करना महान कार्य है।

कुष्ठ रोगियों का बढ़ाया आत्मविश्वास

■ डॉ. विनोद तिवारी ने कहा कि मैं उन्हें व्यक्तिगत तौर से जानता था। वे विलक्षण प्रतिभा के धनी और एक महान विभूति है। कुष्ठ रोगियों के पास परिजन तक जाने में डरते हैं। ऐसे में उन्होंने उनकी सेवा की साथ ही उनके साथ भोजन कर उनका आत्मसम्मान भी बढ़ाया। ऐसे व्यक्तित्व को नमन है।

संसार से जाने के बाद भी दी प्रेरणा

■ राष्ट्र सेविका समिति की सह कार्यवाहक शुलभा देशपांडे ने कहा कि स्व. बापट जीवित रहते सेवा भाव की मिसाल बन गए। वहीं संसार से जाने के बाद भी देहदान कर लोगों को एक नई प्रेरणा दी है। इससे देहदान को भी नई दिशा मिलेगी।

नवभारत   18 अगस्त 2019 (रविवार)

श्रम से बनाया ऐसा आश्रम, जहां जीना सीखती हैं सैकड़ों जिंदगियां

पद्मश्री बापट ने कुष्ठ रोगियों को स्वरोजगार से जोड़ा, उनके बच्चों को पढ़ाने के लिए स्कूल-हॉस्टल खोले, जशपुर से शिक्षक का काम छोड़ सोंठी आए थे कुष्ठरोगियों की सेवा करने

पद्मश्री अलंकरण से सम्मानित करते राष्ट्रपति.

निधन की खबर पर सिम्स पहुंची तेजस्विनी छात्रावास की छात्राएं.

■ बिलासपुर/ जांजगीर-चांपा.

यूं तो सोंठी का कुष्ठ आश्रम दामोदर गणेश बापट के आने से करीब 10 साल पहले से संचालित था. इसे सदाशिव कात्रे संचालित करते थे, जो खुद इस रोग से पीड़ित थे. बापट कुष्ठ रोगी नहीं थे, लेकिन इस रोग का शारीरिक-सामाजिक कष्ट भली-भांति जानते थे. स्वस्थ व्यक्ति को कुष्ठरोगियों की सेवा करते देख समाज में भी अच्छा संदेश गया. 1935 में जन्मे मूलतः महाराष्ट्र के बापट जशपुर में वनवासी कल्याण आश्रम में शिक्षक थे, तभी उन्हें कुष्ठ आश्रम की जानकारी मिली और वे यहां चले आए. यहां उन्हें कुष्ठरोगियों के प्रति लोगों का नजरिया बदला. जिस आश्रम में बाहरी लोग आते-जाते न थे, वहां आसपास के गांवों के लोग जाने, उठने-बैठने लगे. सबसे सकारात्मक थीं यहां की गतिविधियां. बापट जी ने आश्रम को एक नई दिशा दी. यहां

देहदान का संकल्प, संघ ने अंतिम इच्छा पूरी की

जिंदगीभर लोगों की सेवा करने वाले भारतीय कुष्ठ निवारक संघ के संचालक व पद्मश्री दामोदर गणेश बापट का शरीर उनकी अंतिम इच्छा के अनुरूप सिम्स को दान किया गया. उन्हें अंतिम विदाई देते समय लोगों की आंखें नम थीं. सभी ने उन्हें हजारों लोगों को प्रेरणा देने वाला बताया. सिम्स में उनका

हर वर्ग का भला चाहते थे बापट

नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक ने कहा कि पद्मश्री दामोदर गणेश बापट हजारों लोगों के प्रेरणास्रोत थे. उनके समाज कल्याण के कार्यों को हमेशा याद किया जाएगा. मृत्यु के बाद भी दूसरों के काम आने की इच्छा उनमें थी. भारतीय कुष्ठ निवारक संघ का संचालन कर उन्होंने सभी वर्ग के लोगों का भला करने की सोची.

उनकी कमी हमेशा खलेगी

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ से 25 सालों से जुड़े नारायण दीप शर्मा ने बताया कि संघ के संचालन में कोई परेशानी न हो इसका इंतजाम श्री बापट पहले ही कर गए हैं. उनकी मृत्यु से संघ के हर सदस्य को गहरा सदमा लगा है. उनके खड़े रहने मात्र से सभी कार्य आसानी से हो जाया करते थे. उनकी कमी हमेशा खलेगी.

जिंदगी के बाद भी समाज के काम आएंगे

बिलासपुर विभाग के संचालक काशीनाथ गोरे ने कहा कि स्व. श्री बापट ने जिंदगीभर दूसरों की सेवा करने का संकल्प लिया था. उनकी इच्छा थी कि मरने के बाद उनके शरीर को दान कर दिया जाए. उनके जैसा व्यक्तित्व वाला व्यक्ति विश्व में कोई नहीं है. वे हमेशा सभी को साथ लेकर चलने की बात कहते थे. उनके जाने से पूरा संघ दुखी है.

ऐसा लग रहा कि सिर से छत चली गई

ऐसे थे बापट जी...

बात चार दशक पुरानी है. मैं युवा था. मेरे पिताजी चमनलाल चड्ढा बिलासपुर के करीब निकटवर्ती गांव में गन्ना, पपीता और केले की खेती करते थे. उनके साथ कभी-कभी सफेद कपड़े पहने एक आदमी को टायर की चप्पलें पहने देखता था. कभी वह मेरे घर भी पिताजी के साथ आ जाता. बाद में पता चला कि खेत में अनुपयोगी हो चुका तीन हॉर्सपॉवर का पंप मोटर और पाइप पिताजी से मांगकर ले जा रहा है. पता चला कि वह व्यक्ति चांपा के सोंठी के करीब कुष्ठ आश्रम बना रहा है. खेत से निकला सामान वहीं ले जाया जा रहा है. इसके बाद वे कभी वह गन्ना बीज, तो कभी पाइप के लिए घर पहुंचने लगे. मुझे लगता था कि मेरे पिताजी को सीधा किसान पाकर वे सब ले जा रहे हैं. लिहाजा वो जब भी हमारे घर आते तो मैं रूखे तरीके से पेश आता. कभी उनसे कहता कि पिताजी घर पर नहीं हैं. वे चल जाते, लेकिन फिर खेत व घर कहीं मिल लेते. कई बार टरकाने की कोशिश की, लेकिन वे आ ही जाते. पिताजी भी उनके आश्रम से फसल देखकर हो आए. काफी दिनों बाद मुझे उनका नाम पता चला, वे बापट जी थे. वक्त बीतता गया. पढ़ाई के बाद मैं नवभारत बिलासपुर से जुड़ गया. तब तक मैं बापट जी के कुष्ठ रोगियों के लिए काम को समझ गया था. इस बीच समाज कल्याण विभाग से संबंधित एक समिति में बापट जी के साथ मैं भी सदस्य बना. कलेक्टोरेट में जब समिति की बैठक होती, मैं काफी झेंपते हुआ उनसे मिलता. उनके आश्रम को कुछ सरकारी मदद भी मिलती थी. वे बैठक में राशि नहीं मिलने की बात उठाते, तब मैं उनके साथ होता. बाद में इस मुद्दे पर खबर भी करता था. बापट जी मुझे चाहने लगे, मेरी झिझक दूर हो गई. लेकिन घर से बेरंग भेजने की उन्होंने कभी तक नहीं की, न ही मैंने बताया. फिर एक अन्य अखबार में बड़े ओहदे पर आया. एक दिन कोलकाता से खबर आई कि बापट जी को स्वामी विवेकानंद पुरस्कार मिला है. मुझे लगा कि उनकी मेहनत-लगन को पुरस्कृत किया गया है. कुछ दिनों बाद उन्हें बिलासपुर के राम मंदिर में यह पुरस्कार मिलने पर सम्मानित किया जा रहा था. मुझे भी आमंत्रण मिला. कुछ समय पहले पहुंचा. बापट जी से आशीर्वाद लिया और सबके सामने

f 2019

हरिभूमि , 18 अगस्त 2019 रविवार

नहीं रहे गणेश दामोदर बापट कुष्ठ रोगियों की सेवा में जीवन समर्पित करने पर मिला था पद्मश्री सम्मान

ऐसे थे पद्मश्री बापट, करोड़ों का आश्रम, पर खुद के लिए एक कमरा, दो जोड़ी कपड़े, सेवा में गुजारी सारी जिंदगी

जांजगीर चांपा। चांपा से लगे कात्रेनगर सोंठी आश्रम में पिछले चार दशक से कुष्ठ पीड़ितों की सेवा में जुटे पद्मश्री गणेश दामोदर बापट अब नहीं रहे। उन्होंने शुक्रवार की देर रात अपोलो अस्पताल बिलासपुर में अंतिम सांसें ली। शनिवार को उनके अंतिम दर्शन के बाद कुष्ठ आश्रम कात्रेनगर सोंठी लाया गया। अंतिम दर्शन के लिए सांसद, विधायक के साथ कलेक्टर, एसपी, सीईओ सहित अन्य अफसर और जनप्रतिनिधि सोंठी पहुंचे। उन्होंने श्रद्धासुमन अर्पित कर श्री बापट के को नम आंखों से अंतिम विदाई दी और उनके देहदान के संकल्प को पूरा करते हुए पार्थिव शरीर सिम्स बिलासपुर भेज दिया गया।

कुष्ठ पीड़ितों की सेवा करते हुए दामोदर गणेश बापट ने एक अनूठी मिसाल पेश की। वे पिछले 4 दशक से इस सेवा कार्य में जुटे रहे। उन्होंने शादी भी नहीं की। उनकी इसी सेवा भावना को देखते हुए भारत सरकार ने अप्रैल 2018 में उन्हें पद्मश्री अलंकरण से सम्मानित किया था। भारतीय कुष्ठ निवारक संघ कात्रेनगर सोंठी में 1972 में सेवाभावी 35 वर्षीय युवक दामोदर बापट का आना हुआ, वे मूलतः ग्राम पथरोट जिला अमरावती (महाराष्ट्र) के हैं, वे सोंठी आश्रम में सदाशिव कात्रे द्वारा कुष्ठ पीड़ितों की सेवा के लिए शुरू किए गए कार्य को देखने आए थे, लेकिन उनका दर्द देखकर वे वहीं कुष्ठ पीड़ितों की सेवा में जुट गए। सेवा के प्रति बापट का जुनून ऐसा था कि उन्होंने शादी तक नहीं की, ताकि उनके सेवा कार्य में कोई व्यवधान न आए।

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ सोंठी को वट वृक्ष बनाने वाले बापट किसी पुरस्कार के लिए नहीं बल्कि दीन-दुखियों की सेवा करने पर ही विश्वास करते थे। पद्मश्री पुरस्कार को लेकर उनका कहना था कि उनको और कुष्ठ निवारण

कुष्ठ रोगियों की सेवा करने पर 2018 में गणेश दामोदर बापट को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने पद्मश्री सम्मानित किया था।

दो सादे कपड़ों में गुजार दी जिंदगी

आश्रम के एक कमरे में केवल एक बिस्तर और दो सादे कपड़ों में पूरी जिंदगी बिता दी। आश्रम में करोड़ों की संपत्ति उनके नाम है। चाहते तो वे सर्वसुविधायुक्त एसी

अब आश्रम में संवर रही कई जिंदगियां

उनके प्रयास से संस्था परिसर एक स्वतंत्र ग्राम बन गया। आश्रम में वर्तमान में डेढ़ सौ लोग रह रहे हैं, यहां संघ के पास आज खुद का आश्रम, छात्रावास, स्कूल,

श्री बापट की देह मेडिकल कालेज में दान

बिलासपुर। पद्मश्री से सम्मानित कुष्ठ निवारक संघ चांपा के संरक्षक दामोदर गणेश बापट के निधन के बाद उनकी इच्छानुसार पार्थिव काया मेडिकल कालेज सिम्स दान की गई। देह दान के पहले परिसर में उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

पद्मश्री से सम्मानित दामोदर गणेश बापट का शुक्रवार रात देहान्त हो गया। स्व. बापट ने अपना पूरा जीवन कुष्ट रोगियों की सेवा में लगाया। उनके प्रयासों ने कुष्ट रोगियों के प्रति लोगों का विचार बदला और समाज को एक नई दिशा मिली। उन्होंने जीवन पर्यंत कुष्ठ रोगियों की सेवा की और संकल्प लिया कि उनके निधन के बाद उनका शरीर भी दान कर दिया जाए, इसका उपयोग मेडिकल कॉलेज के छात्र कर सकें। उनके संकल्प के अनुसार शनिवार की दोपहर 3 बजे उनका पार्थिव शरीर मेडिकल कॉलेज (सिम्स) को सुपुर्द करने लाया गया। इस अवसर पर संघ परिवार द्वारा स्व. बापट के अंतिम दर्शन उपरांत उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इस दौरान सभा में छ.ग. विधानसभा नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक, सांसद

शुक्रवार की रात अपोलो अस्पताल में ली अंतिम सांस

मेडिकल कालेज में भाजपा नेताओं ने दी श्री बापट को श्रद्धांजलि

छग विधानसभा नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक ने कहा, पद्मश्री बापट जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन कुष्ट पीड़ितों के पुनर्वास के लिए समर्पित कर दिया। श्री बापट छत्तीसगढ़ के वनवासी कल्याण आश्रम जशपुर बच्चों पढ़ाते थे और इसी बीच

श्रद्धांजलि देने नहीं पहुंचे कांग्रेस के लोग

पद्मश्री बापट के देह मेडिकल कालेज में दान किया गया, इसके पहले उन्हें परिसर में श्रद्धांजलि दी गई। इस दौरान संघ व भाजपा के तमाम बड़े नेता उपस्थित रहे पर कांग्रेस के एक

दामोदर गणेश बापट को मिला पद्मश्री अलंकरण, कुष्ठ पीड़ितों की सेवा में तन-मन-धन लगाया

सेवा है हवन कुण्ड, समिधा सम जले हम..

आश्रम में धूप सेंकते पद्मश्री दामोदर गणेश बापट, कुष्ठ निवारक संघ का कात्रेनगर स्थित आश्रम, आश्रम में स्वावलंबन करती महिलाएं.

■ नवभारत ब्यूरो । जांजगीर-चांपा.

जिले के ग्राम सोंठी कात्रेनगर में भारतीय कुष्ठ निवारक संघ द्वारा संचालित कुष्ठ आश्रम में कुष्ठ पीड़ितों की सेवा के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले दामोदर गणेश बापट को पद्मश्री अलंकरण से सम्मानित किया गया है.

सम्मान

- कुष्ठ रोगियों की सेवा में किया जीवन समर्पित
- 1962 में सोंठी में सदाशिव गोविंदराव कात्रे ने बोया था बीज

सन् 1962 में कुष्ठ पीड़ित सदाशिव राव गोविंदराव कात्रे द्वारा समाज से बहिष्कृत व उपेक्षित कुष्ठ पीड़ितों को आश्रय देने के लिए यह आश्रम बनाया था. दस साल बाद दामोदर गणेश बापट ने उनके साथ मिलकर कुष्ठ पीड़ितों के इलाज ही नहीं बल्कि उन्हें सामाजिक उपेक्षा से बचाने व आर्थिक पुर्नवास के लिए अपना तन, मन, धन लगा दिया. 82 वर्ष की अवस्था में इस महान कर्मयोगी को भारत के सर्वोच्च नागरिक अलंकरण में से चौथे अलंकरण पद्मश्री से सम्मानित किया गया है.

समाज व घर वालों ने भी जिन्हें पाप का फल व अछूत कहकर तिरस्कृत किया, उनके लिए वे जीवन भर समर्पित रहे. वकील बापट जी भारत में जन्म लेना ही पद्मश्री है. पद्मश्री अलंकरण की घोषणा के बाद उन्होंने कहा कि कुष्ठ पीड़ितों की सेवा से आत्मीय शांति मिलती है. वे कहते हैं कि सेवा की यह यात्रा मैं तब तक जारी रखूंगा जब तक मेरी एक भी सांस बची हो. इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्तित्वों को पद्म पुरस्कार प्रदान किये गये हैं, जिसके अंतर्गत उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया.

लौटाया कुष्ठ पीड़ितों का आत्म सम्मान

45 वर्षों से कुष्ठ पीड़ितों की सेवा कर रहे दामोदर गणेश बापट ने जीवन से निराश हो चुके कुष्ठ पीड़ितों के आत्म सम्मान को लौटाया. महाराष्ट्र के ग्राम पथरोट जिला अमरावती से आकर उन्होंने छत्तीसगढ़ को अपनी कर्म भूमि बनाया. यह क्षेत्र सर्वाधिक कुष्ठ पीड़ितों के लिए वर्चित था. कुष्ठ पीड़ितों को घर व समाज से तिरस्कृत कर दिया जाता था जिससे वे भीख मांगकर जीवन यापन करने के लिए मजबूर थे. उन्होंने हजारों कुष्ठ पीड़ितों को स्वावलंबन का पाठ पढ़ाते हुए उनके आत्मसम्मान व स्वाभिमान की सामाजिक लड़ाई लड़ी और उम्र के इस दौर में भी वे कुष्ठ पीड़ितों का जीवन संवारने में लगे हुए हैं.

कात्रेनगर बना स्वावलंबन की मिसाल

ग्राम सोंठी के जिस कात्रेनगर में यह आश्रम स्थापित है, वर्तमान में कुष्ठ निवारक संघ के पास सुशील बालक छात्रावास, स्कूल, झूलाघर, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, सिलाई प्रशिक्षण, चिकित्सालय, रूग्णालय, एम्बुलेंस के साथ-साथ कृषि, बागवानी, गौशाला, चौक, दरी, टाटपट्टी निर्माण, वेल्डिंग, जैविक खाद, गोबर गैस, कामधेनु अनुसंधान केन्द्र सहित अनेक स्वावलंबन इकाइयां हैं जहां कुष्ठ पीड़ितों एवं उनके परिवारों के सम्मान के साथ जीवन यापन की व्यवस्था है.

पुरानी झोपड़ी में तीन कुष्ठ रोगियों के साथ कात्रे ने किया था श्रीगणेश

स्वयं कुष्ठ से पीड़ित सदाशिव कात्रे अपनी इलाज के लिए जहां गये वहां उन्होंने पाया कि सेवा की आड़ में धर्मान्तरण का प्रयास हो रहा है. उन्होंने आंदोलन किया और वह स्थान छोड़ दिया. अमरावती के आश्रम में इलाज कराया. 1960-61 के बाद वे घोघरानाला कुष्ठ बस्ती में भी रहे. चांपा में जीवनलाल साव की झोपड़ी में रहते हुए तीन कुष्ठ रोगियों के साथ इस मिशन की शुरूआत की. स्वयं कुष्ठ रोगी होने के कारण उन्हें घृणा व उपेक्षा झेलनी पड़ी. उन्होंने गांव-गांव जाकर अन्न संग्रहण किया. कुष्ठ रोगियों को स्वावलंबन का पाठ पढ़ाया. 5 मई 1962 को भारतीय कुष्ठ निवारक संघ पंजीकृत हुआ. वे घर-घर जाकर सहयोग मांगते उपेक्षा झेलते रहे परंतु अपने मिशन में लगे रहे और इसकी नींव रख दी. एक दिन अचानक वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता दामोदर गणेश बापट चांपा आये. कात्रे जी की वृद्धावस्था और तपस्या देखकर उन्होंने उनका सहयोग करने का निश्चय कर लिया. कात्रे जी के ब्रम्हलीन होने के बाद बापट जी ने उनके कार्यों को विस्तार दिया.

पं. श्यामलाल चतुर्वेदी की जन्म भूमि है जांजगीर-चांपा

साहित्य, शिक्षा व पत्रकारिता के लिए मिला पद्मश्री अलंकर

■ नवभारत ब्यूरो । जांजगीर-चांपा.

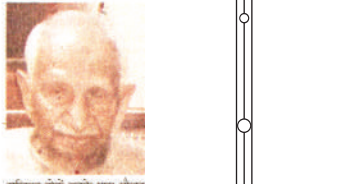

समाज सेवा के लिए पुरस्कृत गणेश दामोदर बापट की कर्मभूमि जांजगीर-चांपा जिला है तो साहित्य, शिक्षा और पत्रकारिता के लिए पद्मश्री अलंकरण से नवाजे गये पं.श्यामलाल चतुर्वेदी की जन्म भूमि जांजगीर-चांपा जिले का गांव कोटमीसोनार रहा है. छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के अध्यक्ष, वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार तथा शिक्षाविद पं.श्यामलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् 1926 में अविभाजित बिलासपुर जिला के ग्राम कोटमीसोनार (वर्तमान जांजगीर-चांपा जिला) में हुआ था.

वे छत्तीसगढ़ी के गीतकार हैं. पर्राभर लाई, बेटी के बिदा, राम बनबास जैसे कालजयी रचनाएं उन्होंने लिखी है. अप्रतिम वक्ता पं.श्यामलाल चतुर्वेदी की सबसे बड़ी पहचान उनकी भाषण कला है. वे राष्ट्रवादी चिंतक हैं. छत्तीसगढ़ी संस्कृति के कुशल चितेरे हैं. सच कहने का साहस व

सलिका दोनों उनके पास मौजूद
व्यंग्य करने में वे माहिर हैं. वे पे
शिक्षक रहे हैं. 1940-41 में उन
लेखन आरंभ किया.

कड़ी से कड़ी बात भी व्यंग
कहने में माहिर हैं. गणतंत्र दिवस
पूर्व संध्या पर केन्द्रीय गृह मंत्रा
द्वारा नई दिल्ली में पद्म पुरस्कारों
घोषणा की गई जिसके तहत
पद्मश्री अलंकरण के लिए चुना
है. इस वर्ष मार्च-अप्रैल में होने
अलंकरण समारोह में राष्ट्रपति
यह सम्मान प्रदान किया जायेगा.

धुरकोट सरपंच के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पारित

■ नवभारत रिपोर्टर । डभरा.

ग्राम पंचायत धुरकोट (डभरा) के सरपंच खेदचंद सिदार के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव के लिए सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें अविश्वास प्रस्ताव पारित हो गया. पंचों द्वारा अविश्वास हेतु आवेदन प्रस्तुत किया था जिस पर 27 जनवरी को तहसीलदार नीलम टोप्पो ने पंचायत भवन में बैठक आयोजित किया. बै
में अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष
कारणों पर उपसरपंच विमल पटे
अपना अभिमत दिया. नियमानु
अविश्वास प्रस्ताव पर मतदान क
गया. जिसमें अविश्वास प्रस्ताव
पक्ष में 16 मत एवं अविश्वास
विरूद्ध 4 मत पड़े. तहसीलदा
अविश्वास प्रस्ताव को पारित
दिया.

बिलासपुर हरिभूमि २६ फरवरी २०१८

सम्मानित किए गए दामोदर गणेश बापट व श्यामलाल चतुर्वेदी

सेवा में लगा दिया पूरा जीवनः अमर

रविवार को स्व.लखीराम आडिटोरियम में श्यामलाल चतुर्वेदी व दामोदर गणेश बापट का सम्मान करते नगरीय प्रशासन मंत्री अमर अग्रवाल।

हरिभूमि न्यूज ⏭ बिलासपुर

कुष्ठरोगियों की सेवा में जीवन गुजारने वाले समाजसेवी दामोदर गणेश बापट और छत्तीसगढ़ी के मूर्धन्य साहित्यकार एवं पत्रकार श्यामलाल चतुर्वेदी का आज अभिनंदन किया गया। लखीराम ऑडिटोरियम में नगरीय प्रशासन मंत्री अमर अग्रवाल ने व विभिन्न सामाजिक संगठनों, नागरिकों एवं संस्थाओं द्वारा दोनो विभूतियों का सम्मान किया गया। श्री बापट और श्री चतुर्वेदी राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री अलंकरण से सम्मानित किए जाएंगे। इस अवसर पर मंत्री श्री अमर अग्रवाल ने कहा कि श्री बापट ने कुष्ठरोगियों की सेवा में अपना पूरा जीवन लगा दिया। जिन कुष्ठरोगियों से समाज दूर भागता था उनके बीच में रहकर और उनकी सेवा करके श्री बापट ने समाज को जागरूक करने का काम किया। जांजगीर में उनके आश्रम में जाकर कुष्ठ रोगियों के प्रति उनका स्नेह और सेवाभाव देखेते ही बनता है। श्री चतुर्वेदी को छत्तीसगढ़ी व्याकरण और भाषा का मूर्धन्य साहित्यकार बताते हुए कहा उन्होंने कहा कि उनके जैसा साहित्यकार पाकर छत्तीसगढ़ के सभी लोग अपने आपको सौभाग्यशाली समझते हैं। श्री चतुर्वेदी की प्रत्येक रचनाएं कालजयी हैं। खासकर छत्तीसगढ़ी भाषा को उन्होंने जन-जन तक पहुंचाने में बहुत ही सराहनीय कार्य किया है।

खास बात

- राष्ट्रपति द्वारा दिया विद्वानद्वय को दिया जाएगा पद्मश्री अलंकरण

कार्यक्रम अध्यक्ष सक्षम के संरक्षक गोपाल व्यास एवं विशिष्ट अतिथि पूर्व सांसद लखनलाल साहू, विधानसभा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक रहे। आभार महापौर किशोर राय ने व्यक्त किया। इस अवसर पर पूर्व विधानसभा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक, सांसद लखनलाल साहू, संभागायुक्त टीसी महावर, कलेक्टर पी दयानंद, एसपी आरिफ शेख, निगम कमिश्नर सौमिल रंजन चौबे एवं बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

मिलकर करें काम

इस अवसर पर श्री बापट ने सभी से कुष्ठरोगियों के लिये काम करने की अपील करते हुए कहा कि कुष्ठरोगियों को अपनेपन की आवश्यकता होती है। उनसे दूर न भागें बल्कि उनकी सहायता करें। साहित्यकार एवं पत्रकार श्री चतुर्वेदी ने कहा कि अपनी छत्तीसगढ़ी भाषा को आगे बढ़ाने में उन्होंने पूरी कोशिश की और अब ये काम आम जनमानस को भी करना है। श्री चतुर्वेदी ने कहा कि उनके पूरे जीवन में उन्हें लोगों से भरपूर प्यार और स्नेह मिला और इसके लिये वे सबके आभारी हैं।

सम्मान से बढ़कर काम

सक्षम के संरक्षक गोपाल व्यास ने कहा कि श्री बापट को पद्मश्री का पुरस्कार दिया जाना है लेकिन इस सम्मान से बढ़कर उनका काम है। इसी तरह श्री चतुर्वेदी ने भी छत्तीसगढ़ साहित्य, भाषा एवं पत्रकारिकता क्षेत्र में बेहद अहम किए है। आरएसएस के विभाग प्रचारक काशी नाथ भोरे ने कहा कि बापट जी के आश्रम में कई ऐसे कार्य है जिसमे समाज को काफी सीख मिलती है।

माननीय बापट जी द्वारा संस्था के अंतःवासियों के स्वावलम्बन हेतु प्रारंभ किये गये कुछ कार्यों की चित्रावली

गौशाला
प्रकल्प

बागवानी प्रकल्प

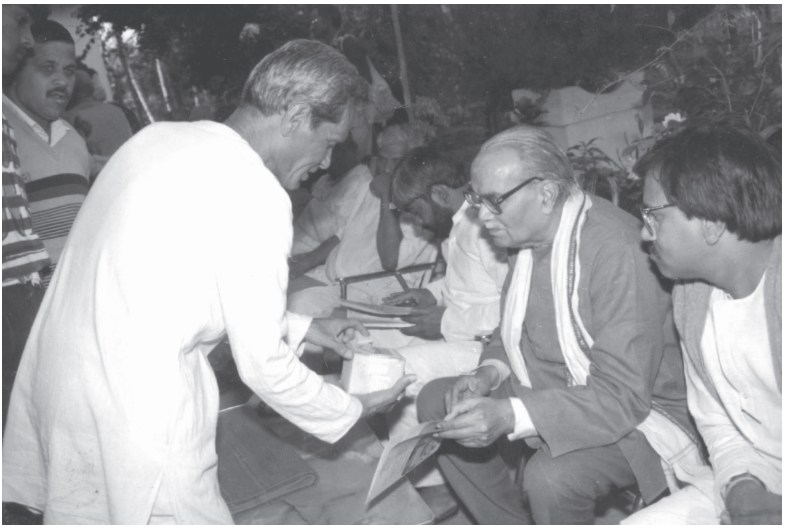

संस्था के कृषि कार्य को विकसित करने वाले कृषि विशेषज्ञ श्री भास्कर वरवंडकर जी, प.पू. रज्जू भैय्या जी को संस्था की जानकारी देते हुए।

मा. बापट जी के अतिनिकट के परिवार सुशीलाबेन रमणीकलाल भाई झवेरी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई के प्रमुख श्री राजीव भाई झवेरी एवं श्रीमती शैला झवेरी जी

माननीय बापट जी के सेवा कार्य में सहयोगी रहे श्रीधर हरिकाले, डोंबिवली (बाएँ)
एवं श्री राजेन्द्र विंचुरकर, नाशिक (दाएँ)

माननीय बापट जी के सेवा कार्य में सहयोगी रहे श्री हरदयाल कुजुर, जशपुर
श्री अरुण खानखोजे, बिलासपुर एवं डॉ. रामलाल सूरी, भोपाल

माननीय बापट जी के सेवा कार्य में सहयोगी रहे एन.आर.आई. आर्थोपेडिक सर्जन डॉ. बालकृष्ण जगदाले जी, नागपुर

माननीय बापट जी के सेवा कार्य में सहयोगी रहे श्री मधुकर राव महेंदले जी, चेंबूर (मुम्बई)

आश्रम स्थित तुलसी चौरा
स्व. श्री दामोदर गणेश बापट जी
की स्मृति में